लोक शिक्षण संचालनालय, म.प्र. भोपाल द्वारा जारी, प्रश्न बैंक हल सहित

प्रश्न बैंक 2023

लेखाशास्त्र (वाणिज्य संकाय) : कक्षा–12

समय : 3 घण्टे] (ब्लू प्रिंट) (प्रश्न–पत्र का स्वरूप) [पूर्णांक : 80

इ. क्र.	इकाई एवं विषय–वस्तु	इकाई पर आवंटित अंक	वस्तुनिष्ठ प्रश्न	अंकवार प्रश्नों की संख्या			कुल प्रश्न
			1 अंक	2 अंक	3 अंक	4 अंक	
I.	साझेदारी फर्म एवं कम्पनी का लेखांकन						
1.	साझेदारी लेखांकन – आधारभूत अवधारणाएँ	12	06	01	–	01	02
2.	A - साझेदारी फर्म का पुनर्गठन	06	03	–	01	–	01
	B - साझेदार का प्रवेश	06	03	–	01	–	01
3.	A - साझेदार की निवृत्ति/मृत्यु	08	02	01	–	01	02
	B - साझेदारी फर्म का निघटन	04	02	01	–	–	01
4.	A - अंश पूँजी के लिए लेखांकन	16	04	04	–	01	05
	B - ऋणपत्रों का निर्गमन	08	03	01	01	–	02
II.	वित्तीय विवरण विश्लेषण						
5.	A - कम्पनी के वित्तीय विवरण, वित्तीय विवरणों का विश्लेषण	08	05	–	01	–	01
	B - लेखांकन अनुपात	04	02	01	–	–	01
6.	रोकड़ प्रवाह विवरण	08	02	01	–	01	02
	कुल योग	**80**	**32**	**20**	**12**	**16**	**18+5 =23**

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न–पत्र निर्माण हेतु विशेष निर्देश–

1. प्रश्न क्रमांक 1 से 5 तक 32 वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे। सही विकल्प 06 अंक, रिक्त स्थान 07 अंक, सही जोड़ी 06 अंक, एक वाक्य में उत्तर 07 अंक, सत्य–असत्य 06 अंक संबंधी प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न पर 01 अंक निर्धारित है। वस्तुनिष्ठ प्रश्नों को छोड़कर सभी प्रश्नों में आंतरिक विकल्प का प्रावधान होगा। यह विकल्प समान ईकाई/उप ईकाई से तथा समान कठिनाई स्तर वाले होंगे। इन प्रश्नों के उत्तर सीमा निम्नानुसार होगी–
   - अति लघु उत्तरीय प्रश्न 2 अंक, लगभग 30 शब्द
   - लघु उत्तरीय प्रश्न 3 अंक, लगभग 75 शब्द
   - विश्लेषणात्मक प्रश्न 4 अंक, लगभग 120 शब्द
2. 40% वस्तुनिष्ठ प्रश्न, 40% विषयपरक प्रश्न, 20% विश्लेषणात्मक प्रश्न होंगे।
3. सत्र 2022-23 हेतु कम किये गये पाठ्यक्रम से प्रश्न–पत्र में प्रश्न न दिये जाये।
4. पाठ्यवस्तु पर आधारित प्रायोजना कार्य हेतु 20 अंक आवंटित है।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

सत्र 2022-23
लेखाशास्त्र (वाणिज्य संकाय) : कक्षा–12
पाठ्यक्रम में से हटाई गई विषयवस्तु

स.क्र.	पूर्व अध्याय	अध्याय	विवरण
1.	भाग - 1 - 1	अलाभकारी संगठन के लेखे	सम्पूर्ण अध्याय हटाया गया
2.	भाग - 2 - 2	ऋणपत्रों का निर्गम एवं मोचन	ऋणपत्रों का मोचन (शोधन) पूर्णतः हटाया गया।
3.	भाग - 2 - 4	वित्तीय विवरणों का विश्लेषण	तुलनात्मक विवरण एवं समान आकार विवरण पूर्णत हटाया गया।

नये जोड़े गये पाठ्यक्रम की विषयवस्तु

स.क्र.	पूर्व अध्याय	अध्याय	विवरण
1.	भाग - 2 - 5	लेखांकन अनुपात	1. ऋण समता अनुपात 2. स्थायी सम्पत्ति आवृत्त अनुपात 3. शुद्ध सम्पत्ति आवृत अनुपात

माध्यमिक शिक्षा मण्डल (म.प्र.) भोपाल द्वारा आयोजित परीक्षा हेतु

मॉडल पेपर

(वार्षिक परीक्षा–2023)

समय : 3 घण्टे] **लेखाशास्त्र : 12 वीं** [पूर्णांक : 80

निर्देश– (1) प्रश्न 1 से 5 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न (प्रत्येक 1 अंक कुल) कुल 32 अंक। (2) प्रश्न 6 से 15 तक अति लघुउत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 2 अंक) कुल 20 अंक। प्रश्न 16 से 19 तक लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 3 अंक) कुल 12 अंक। (4) प्रश्न 20 से 23 तक दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 4 अंक) कुल 16 अंक)

:: खण्ड (अ) ::

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनिए– 1×6 = 6

(1) भारतीय साझेदारी अधिनियम बनाया गया है–

(a) 1932 में (b) 1947 में
(c) 1951 में (d) 1991 में

(2) साझेदारी में कम से कम होने चाहिए–

(a) तीन व्यक्ति (b) दो व्यक्ति
(c) सात व्यक्ति (d) दस व्यक्ति

(3) ख्याति है–

(a) एक चल सम्पत्ति (b) एक स्थायी सम्पत्ति
(c) एक मूर्त सम्पत्ति (d) एक कृत्रिम सम्पत्ति

(4) सर्वाधिक मूल्य होता है–

(a) चूहे के स्वभाव वाली ख्याति
(b) बिल्ली के स्वभाव वाली ख्याति
(c) कुत्ते के स्वभाव वाली ख्याति का
(d) सभी का

(5) साझेदारी का अनिवार्य अंग है–

(a) हानि को बाँटना
(b) हानि तथा लाभ दोनों को बाँटना
(c) सम्पत्तियों को बाँटना (d) लाभों को बाँटना

(6) साझेदारी संलेख के अभाव में साझेदारी के लाभों का वितरण साझेदारों में किया जाता है–

(a) पूँजी के अनुपात में
(b) व्यवसाय संचालन में साझेदारों द्वारा दिए गए समय के अनुपात में
(c) समान अनुपात में
(d) साझेदारी की प्रबन्ध दक्षता के अनुपात में

उत्तर– (1) (a) (2) (b) (3) (b) (4) (b) (5) (b) (6) (c).

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए– 1×7 = 7

(1) जब नये साझेदार के प्रवेश के पूर्व ही फर्म की पुस्तकों में ख्याति विद्यमान हो तो इसे ..... कर दिया जाता है।

(2) नये साझेदार द्वारा नकद लाई गई ख्याति (प्रीमियम) पुराने साझेदारों के पूँजी खातों में क्रेडिट कर दी जाती है उनके ..... के अनुपात में।

(3) पुनर्मूल्यांकन पर होने वाली हानि का नये साझेदार से कोई ..... नहीं होता है।

(4) पुनर्मूल्यांकन पर होने वाला लाभ पुराने साझेदारों के पूँजी खातों में उनके पुराने लाभ विभाजन में ..... किया जाता है।

(5) परिवर्तनशील पूँजी पद्धति में पूँजी का अंतिम शेष प्रतिवर्ष ..... रहता है।

(6) साझेदारों के मध्य लाभ के विभाजन के लिये ..... बनाया जाता है।

(7) साझेदारी फर्म का पंजीयन ..... है।

उत्तर– (1) अपलिखित (2) लाभ/हानि (3) संबंध (4) जमा (5) बदलता (6) लाभ–हानि वितरण खाता (7) ऐच्छिक।

प्रश्न 3. सही जोड़ी बनाइए– 1×6 = 6

कॉलम 'अ'	कॉलम 'ब'
(1) अलिखित दायित्व का भुगतान	(a) तृतीय पक्ष
(2) पूँजी खाते का डेबिट शेष	(b) निजी सम्पत्ति
(3) साझेदार का व्यक्तिगत दायित्व	(c) साझेदार
(4) विघटन के पश्चात् प्रथम भुगतान	(d) पर्याप्त रकम लाना
(5) वसूली खाते का लाभ	(e) वसूली खाता डेबिट
(6) सूचना देकर समापन	(f) ऐच्छिक साझेदारी

उत्तर– (1) (e) (2) (d) (3) (b) (4) (a) (5) (c) (6) (f).

प्रश्न 4. एक शब्द में उत्तर दीजिये– 1×7 = 7

(1) अंकित मूल्य से अधिक मूल्य पर अंशों का निर्गमन कहलाता है।

(2) कम्पनी का सबसे महत्वपूर्ण प्रलेख कौन–सा होता है?

(3) क्या हरण किये गये अंशों का पुनर्निर्गमन आबंटन कहलाता है?

(4) पूँजी का वह भाग जिसके लिए कम्पनी जीवनकाल में निर्गमन नहीं करती है, उसे क्या कहते हैं?

(5) क्या ऋणपत्रों को जब्त किया जा सकता है?

@MP_BOARD_25 (Telegram)

(6) उस ऋणपत्र का नाम बताइए, जिसका भुगतान केवल कम्पनी के समापन पर होता है।

(7) वे ऋणपत्र जो अंश में बदले जा सकते हैं, क्या कहलाते हैं?

उत्तर– (1) प्रीमियम पर निर्गमन (2) पार्षद सीमा नियम (3) नहीं (4) संचित पूँजी (5) नहीं (6) अशोध्य ऋणपत्र (7) परिवर्तनीय ऋणपत्र।

प्रश्न 5. निम्नलिखित में सत्य/असत्य बताइए– 1×6= 6

(1) स्थायी सम्पत्ति के मूल्य में वृद्धि से व्यवसाय की रोकड़ में वृद्धि होती है।

(2) मूल्य ह्रास गैर-रोकड़ मद है।

(3) चालू सम्पत्तियों एवं चालू दायित्व के बीच आदर्श अनुपात 2:1 होता है।

(4) क्रियाशीलता अनुपात एवं आवर्त अनुपात एक ही होते हैं।

(5) चालू अनुपात व्यवसाय की तरलता को माप करते हैं।

(6) ऋण समता अनुपात लघु अवधि की वित्तीय स्थिति को मान करता है।

उत्तर– (1) असत्य (2) सत्य (3) सत्य (4) सत्य (5) असत्य (6) सत्य।

:: खण्ड (ब) ::

प्रश्न 6. साझेदारी का अर्थ लिखिये। 2

अथवा

साझेदारी की परिभाषा लिखिये।

प्रश्न 7. साझेदार की निवृत्ति के 2 कारण लिखिये 2

अथवा

वार्षिकी द्वारा भुगतान क्या है?

प्रश्न 8. फर्म के विघटन से क्या आशय है? 2

अथवा

वसूली खाता क्या है?

प्रश्न 9. कम्पनी की एक परिभाषा दीजिये। 2

अथवा

कम्पनी के पृथक अस्तित्व से क्या आशय है?

प्रश्न 10. अंश की एक परिभाषा दीजिये। 2

अथवा

अल्प अभिदान से क्या समझते हैं?

प्रश्न 11. अंशों के हरण से आप क्या समझते हैं? 2

अथवा

हरण किये गये अंशों को कितने प्रकार से पुर्ननिर्गमित किया जा सकता है?

प्रश्न 12. अंश एवं स्कंध में दो अंतर लिखिये। 2

अथवा

हरण का खण्डन से क्या आशय है?

प्रश्न 13. परिवर्तनीय एवं अपरिवर्तनीय ऋणपत्र क्या है? 2

अथवा

ऋणपत्र की एक परिभाषा दीजिये।

प्रश्न 14. वित्तीय विवरण विश्लेषण का अर्थ लिखिये। 2

अथवा

वित्तीय विवरण विश्लेषण की सीमायें लिखिये।

प्रश्न 15. रोकड़ प्रवाह क्या है? 2

अथवा

आंतरिक एवं बाह्य रोकड़ प्रवाह के 3–3 उदाहरण दीजिये।

प्रश्न 16. त्याग अनुपात और लाभ अनुपात का अंतर लिखिये। 3

अथवा

सुलभ और सौरभ साझेदार हैं जो 3:2 में लाभ विभाजन करते हैं। वे सुभाष को साझेदारी के लाभ में 1/6 भाग के लिये प्रवेश देते हैं जो ख्याति के लिये 5,400 नगद लाता है। निम्न दशाओं में ख्याति का लेखा करने के लिए जर्नल दीजिए–

(1) यदि सुभाष अपने लाभांश का 2/3 भाग सुलभ से तथा 1/3 भाग सौरभ से पाता है।

(2) यदि सुभाष अपने लाभ का भाग सुलभ व सौरभ से 5:4 में पाता है।

प्रश्न 17. फर्म में नये साझेदार को प्रवेश देने के कारण लिखिए। 3

अथवा

वी, आर तथा के साझेदार हैं जो 3:1:1 के अनुपात में लाभ–हानि का विभाजन करते हैं। 31 दिसम्बर, 2011 को उनका निम्नांकित चिट्ठा था–

दायित्व	*रकम (रु.)*	*सम्पत्ति*	*रकम (रु.)*
लेनदार	58,500	रोकड़	1,000
पूँजी –		बैंक	15,000
A	84,000	भवन	1,02,500
B	68,000	स्टॉक	1,15,000
C	48,000	देनदार	25,000
	2,58,500		2,58,500

1 जनवरी, 2012 से उन्होंने P को साझेदार बनाया। P रु. 60,000 ख्याति के जो व्यापार में रहती है और 60,000 रु. अपने हिस्से की पूँजी देते हैं। भविष्य में साझेदार अपनी समायोजित पूँजी के आधार पर लाभ–विभाजन करते हैं। साझेदारों की पूँजी खाते तथा प्रारम्भिक चिट्ठा बनाइये। साझेदारों के मध्य नया लाभ–विभाजन अनुपात बनाइये।

प्रश्न 18. अंश व ऋण–पत्र में अंतर लिखिए। 3

अथवा

1 अप्रैल, 2012 को टाटा लिमिटेड ने 5000, 10 प्रतिशत ऋणपत्र 100 रु. प्रति ऋणपत्र की दर से निर्गमित किये। सभी ऋणपत्रों के लिये आवेदन प्राप्त हो गए। ऋणपत्रों पर अर्द्धवार्षिक ब्याज 30 सितम्बर एवं 31 मार्च को देय है। इस पर 10 प्रतिशत की दर से स्रोत पर आयकर की कटौती की जाती है।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

ऋणपत्रों के ब्याज के सम्बन्ध में आवश्यक जर्नल दीजिए तथा वर्ष के अन्त में 31 मार्च, 2013 को ब्याज का हस्तान्तरण लाभ तथा हानि के विवरण में कीजिए।

प्रश्न 19. वित्तीय विवरणों का उद्देश्य एवं महत्व लिखिये। 3

अथवा

लाभ–हानि विवरण का प्रारूप दीजिये।

प्रश्न 20. साझेदारों के स्थिर पूँजी खाते एवं परिवर्तनशील पूँजी खाते में अन्तर लिखिये। 4

अथवा

अ और ब 7 : 3 में लाभ का विभाजन करने वाले साझेदार हैं और उनकी पूँजी क्रमश: 1,500 रु. और 1,000 रु. है। साझेदारों की पूँजी पर 5% ब्याज देने की व्यवस्था है। ब को 240 रु. वार्षिक वेतन प्राप्त करने का अधिकार है, जो उसने अभी व्यापार से नहीं लिया है। 2017 में अ और व ने क्रमश: 120 रु. और 200 रु. व्यापार से निकाले। उस वर्ष का लाभ पूँजी पर ब्याज देने से पूर्व, परन्तु व का वेतन देने के पश्चात् 800 रु. था। 800 रु. का 3½% मैनेजर को कमीशन के रूप में देना है। लाभ-विभाजन करते हुए लाभ-हानि लेखा तैयार कीजिए और साझेदारों के पूँजी खाते बनाइये।

प्रश्न 21. अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार को देय राशि की गणना कैसे की जाती है? 4

अथवा

A,B तथा C क्रमश: 3:2:1 के अनुपात में साझेदार है। 1 जनवरी 2012 से A अवकाश ग्रहण करता है। फर्म में उसके भाग का मूल्य 40,000 रु. है। साझेदारी समझौते के अनुसार A के जीवनकाल में उसे 6,000 रु. वार्षिकी प्रत्येक वर्ष की पहली जनवरी को दी जावेगी। शेष राशि पर 6 प्रतिशत वार्षिक की दर से ब्याज दिया जावेगा। 1 जनवरी, 2013 को प्रथम भुगतान किया गया और तत्पश्चात् प्रत्येक वर्ष की पहली जनवरी को, चौथी वार्षिकी पाने के बाद A का देहान्त हो गया। A के हित का भुगतान करने के लिए वार्षिकी उचन्ती खाता बनाइए।

प्रश्न 22. आनुपातिक आवंटन क्या है? उदाहरण सहित समझाइए। 4

अथवा

एक कम्पनी ने 10 रु. वाले 1 लाख समता अंश जनता को निर्गमित किये। आवेदन पर 3 रु., आवंटन पर 4 प्रति अंश, तथा शेष आवश्यकता होने पर देय होंगे। कुल 1,40,000 अंशो के लिये आवेदन आए। आवंटन निम्न प्रकार किया गया–

80,000 अंशों के आवेदकों को 80,000 अंश
50,000 अंशों के आवेदकों को 20,000 अंश
10,000 अंशों के आवेदकों को कुछ नहीं।

आवेदन पर प्राप्त अतिरिक्त राशि आवंटन पर देय राशि में समायोजित कर ली जावेगी तथा शेष लौटा दी जाएगी। 1,000 अंश के आवेदन ने जिसे 1,000 अंश ही आवंटित किये गए थे, आवंटन राशि नहीं चुकाई। उसके अंश कम्पनी ने जब्त कर लिये। आवश्यक जर्नल लेखे दीजिए।

प्रश्न 23. निम्न का संक्षेप में वर्णन कीजिये– 4

(1) रोकड़ (2) रोकड़ तुल्य (3) संचालन क्रियाएं (4) विनियोग क्रियाएं।

अथवा

निम्न सूचना से Y.K. लिमिटेड का रोकड़ बहाव विवरण तैयार कीजिए–

दायित्व	2006	2007	सम्पत्तियाँ	2006	2007
अंश पूँजी	55,000	63,500	प्लाण्ट	15,000	17,000
संचय	15,000	19,500	भवन	20,000	16,400
ऋणपत्र	22,000	22,000	भूमि	24,000	24,000
चालू दायित्व	30,000	32,000	पेटेण्ट	1,000	900
संचय ह्रास	5,000	2,800	रोकड़	40,000	44,000
			देनदार	10,000	20,700
			स्टॉक	15,000	15,000
			ऋणपत्र पर छूट	2,000	1,800
	1,27,000	1,39,800		1,27,000	1,39,800

अतिरिक्त सूचनाएँ– (A) अवधि के लिए आय रु. 12,000 थी। (B) एक भवन जिसकी लागत 4,000 रु. थी और जिसका पुस्तमूल्य रु. 1,000 रु., 1,400 में बेचा गया। (C) अवधि के लिए ह्रास का चार्ज 800 रु. था। (D) अंशों का निर्गमन 5,000 रु. था। (E) 4,000 रु. का रोकड़ लाभांश और 3,500 रु. का अंश लाभांश घोषित किया गया और चुकता किया गया।

❑

©MP_BOARD_25 (Telegram)

लेखाशास्त्र (वाणिज्य संकाय)–12

भाग–1

इकाई–1 साझेदारी लेखे सामान्य

अंकवार प्रश्नों की संख्या				कुल अंक
वस्तुनिष्ठ प्रश्नों (1 अंक)	अति लघुउत्तरीय प्रश्न (2 अंक)	लघुउत्तरीय प्रश्न (3 अंक)	विश्लेषणात्मक प्रश्न (4 अंक)	
6	1	–	1	12

◘ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर :

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए–

(1) साझेदारी में कम से कम होने चाहिए–
(a) तीन व्यक्ति (b) दो व्यक्ति
(c) सात व्यक्ति (d) दस व्यक्ति

(2) साझेदार बन सकते हैं–
(a) व्यक्तियों का समुदाय (b) कोई संस्था
(c) कोई व्यक्ति (d) कर्मचारी संघ

(3) साझेदारी का अनिवार्य अंग है–
(a) हानि को बाँटना
(b) हानि तथा लाभ दोनों को बाँटना
(c) सम्पत्तियों को बाँटना (d) लाभों को बाँटना

(4) भारतीय साझेदारी अधिनियम बनाया गया है–
(a) 1947 में (b) 1956 में
(c) 1951 में (d) 1932 में

(5) साझेदारी संलेख के अभाव में साझेदारी के लाभों का वितरण साझेदारों में किया जाता है–
(a) पूँजी के अनुपात में
(b) व्यवसाय संचालन में साझेदारों द्वारा दिये गये समय के अनुपात में
(c) समान अनुपात में
(d) साझेदारों की प्रबन्ध दक्षता के अनुपात में

(6) यदि साझेदार के आहरण की तिथियाँ नहीं दी गई हो तो आहरण पर व्याज की गणना की अवधि होती है–
(a) 6 माह (b) $5\frac{1}{2}$ माह
(c) $6\frac{1}{2}$ (d) 12 माह

(7) साझेदारों के मध्य लाभ के बँटवारे के लिये बनाया जाता है–
(a) लाभ–हानि खाता
(b) लाभ–हानि समायोजन खाता
(c) साझेदारों के चालू खाते
(d) लाभ–हानि वितरण खाता

(8) आहरण पर व्याज है–
(a) फर्म की हानि (b) साझेदारों की आय
(c) फर्म की आय (d) उपर्युक्त में कोई नहीं

(9) साझेदारी समझौते के अभाव में पूँजी पर व्याज दिया जाता हैं–
(a) 10% वार्षिक (b) 9% वार्षिक
(c) 6% वार्षिक (d) किसी भी दर से नहीं

(10) साझेदारी संलेख के अभाव में लाभ विभाजन होता है–
(a) पूँजी के अनुपात में (b) त्याग अनुपात में
(c) समान अनुपात में (d) आय प्राप्ति अनुपात में

उत्तर– (1) (b), (2) (c), (3) (b), (4) (d), (5) (c), (6) (a), (7) (d), (8) (c), (9) (d), (10) (c).

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. साझेदारी उन व्यक्तियों के बीच एक ..... है, जिन्होंने किसी व्यवसाय के लाभों को बाँटने का ठहराव किया है।
2. परिवर्तनशील पूँजी पद्धति में साझेदारों के ..... खाते नहीं बनाये जाते हैं।
3. साझेदारी के लिए ..... का विभाजन अनिवार्य नहीं है।
4. साझेदार द्वारा लाई गई अतिरिक्त पूँजी पर ब्याज ..... की दर से देय होता है।
5. साझेदारी व्यवसाय में भारतीय साझेदारी अधिनियम ..... लागू होता है।

©MP_BOARD_25 (Telegram)

6. स्थायी पूँजी खाते की दशा में साझेदारों के वेतन, कमीशन आहरण आदि का लेखा ..... में किया जाता है।
7. परिवर्तनशील पूँजी पद्धति में पूँजी का अंतिम शेष प्रतिवर्ष ..... रहता है।
8. साझेदारों के मध्य लाभ के विभाजन के लिए ..... खाता बनाया जाता है।
9. साझेदारी का जन्म ..... से होता है।
10. साझेदारी व्यवसाय में साझेदारों का दायित्व ..... होता है।

उत्तर– (1) अनुबंध, (2) चालू, (3) लाभ, (4) 6%, (5) 1932, (6) लाभ–हानि वितरण, (7) बदलता, (8) लाभ–हानि वितरण, (9) अनुबंध, (10) सीमित।

प्रश्न 3. सही जोड़ी बनाइये–

(A)	(B)
(1) साझेदारी संलेख के अभाव में	(a) केवल व्यक्ति की
(2) साझेदार बन सकते है	(b) अनिवार्य
(3) प्रत्येक साझेदार में	(c) चालू खाते बनाये जाते हैं
(4) साझेदारी में लाभों का बाँटना स्थिर पूँजी की दशा में साझेदारों के	(d) फर्म को लाभ हुआ हो
	(e) संयुक्त तथा पृथक–पृथक दोनों प्रकार का होता है
(5) साझेदारों के चालू खाते में लेखा	(f) एजेन्ट होता है
(6) पूँजी पर ब्याज तभी दिया जाता है जब	(g) परिवर्तनशील पूँजी पद्धति में बनाये जाते है
(7) प्रत्येक साझेदार का दायित्व	(h) साझेदारों के वेतन, बोनस, कमीशन, लाभ, व्याज, आहरण आदि का
(8) प्रत्येक साझेदार फर्म का	(i) अनुबंध करने की क्षमता होना अनिवार्य है
(9) साझेदारों के चालू खाते	(j) भारतीय साझेदारी अधिनियम 1932 के प्रावधान लागू होते हैं

उत्तर–(1) (j), (2) (a), (3) (i), (4) (c), (5) (h), (6) (d), (7) (e), (8) (f), (9) (g).

प्रश्न 4. सत्य/असत्य लिखिए–

(1) व्यक्तियों के समुदाय, संस्था या संघ साझेदार बन सकते हैं।
(2) साझेदारी में पूँजी लगना अनिवार्य शर्त होती है।
(3) प्रत्येक साझेदार में अनुबंध करने की क्षमता होनी चाहिए।
(4) अवयस्क को फर्म के लाभों में शामिल किया जा सकता है।
(5) साझेदारी संलेख के अभाव में भारतीय साझेदारी अधिनियम, 1932 के प्रावधान लागू होते हैं।
(6) साझेदारी व्यवसाय का संचालन सभी साझेदार कर सकते हैं।
(7) लाभों को बाँटना साझेदारी का अनिवार्य नहीं हैं।
(8) परिवर्तनशील पूँजी पद्धति में चालू खाते नहीं बनाये जाते हैं।
(9) लाभ–हानि नियोजन खाता साझेदारों की लाभ–हानि की अन्तिम राशि का हिसाब रखने के लिए बनाया जाता है।
(10) साझेदारों के आहरण पर ब्याज का लेखा रोकड़ खातें में किया जाता है।

उत्तर–(1) असत्य, (2) असत्य, (3) सत्य, (4) सत्य, (5) सत्य, (6) सत्य, (7) सत्य, (8) सत्य, (9) सत्य, (10) असत्य।

प्रश्न 5. एक शब्द/वाक्य में उत्तर लिखिए–

(1) परिवर्तनशील पूँजी पद्धति की दशा में साझेदारों से संबंधित सभी व्यवहारों का लेखा किस खातें में किया जाता है?
(2) साझेदारी संलेख की अनुपस्थिति में किस अधिनियम के प्रावधान लागू होते हैं?
(3) साझेदारों के चालू खाते कब बनाये जाते हैं?
(4) फर्म द्वारा साझेदारों की पूँजी पर ब्याज कब दिया जा सकता है?
(5) फर्म में कौन साझेदार हो सकता है?
(6) फर्म के व्यवसाय के संचालन में कौन भाग ले सकता है?
(7) क्या बिना पूँजी लगाये भी कोई व्यक्ति फर्म में साझेदार बन सकता है?
(8) A ने B को गारण्टी दी है कि उसे न्यूनतम 25,000 रु. का लाभ प्राप्त होगा, इसे क्या कहते हैं?
(9) x और y बिना समझौते के साझेदार हैं, y द्वारा फर्म को 18,000रु. का ऋण दिया जाता है। y को किस दर से ऋण पर ब्याज प्राप्त होगा।
(10) वे व्यक्ति जो एक –दूसरे के साथ साझेदारी में सम्मिलित हुए है, सामूहिक रूप से क्या कहलाते हैं?

उत्तर– (1) पूँजी खाते में, (2) साझेदारी अधि. 1932, (3) स्थायी पूँजी पद्धति में, (4) लाभ की स्थिति में, (5) व्यक्ति, (6) सभी साझेदार, (7) हाँ, (8) लाभ की ग्यारण्टी, (9) 6%, (10) साझेदार।

@MP BOARD 25 (Telegram)

■ अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर :

प्रश्न 1. साझेदारी अधिनियम 1932 के अनुसार साझेदारी की परिभाषा दीजिए।

उत्तर– भारतीय साझेदारी अधिनियम, 1932 की धारा 4 के अनुसार 'साझेदारी उन व्यक्तियों के बीच एक सम्बन्ध है, जिन्होंने किसी ऐसे व्यवसाय के लाभों को बाँटने का ठहराव किया है जो कि उन सबके द्वारा या उन सभी की ओर से उनमें से किसी के द्वारा चलाया जाता हो।'

प्रश्न 2. फर्म से क्या आशय है?

उत्तर– साझेदारी फर्म से हमारा आशय उस संगठन से है, जो कुछ व्यक्तियों द्वारा किसी व्यवहार को संचालित करने एवं लाभों को बाँटने के लिए स्थापित किया जाता है और जिसकी शर्तें ठहराव द्वारा निर्धारित की जाती है।

प्रश्न 3. साझेदारी संलेख से क्या आशय है?

उत्तर– 'साझेदारी प्रलेख', 'साझेदारी ठहराव' या 'साझेदारी सलेख' का आशय ऐसे समझौते से है, जिसमें साझेदारी व्यवसाय के संचालन संबंधी नियम एवं शर्तों का उल्लेख किया जाता है। यदि ऐसा कोई ठहराव नहीं किया जाए तो भारतीय साझेदारी अधिनियम, 1932 के प्रावधान लागू होते हैं।

प्रश्न 4. विभाजन योग्य लाभ से क्या आशय है?

उत्तर– लाभ-हानि खाते में व्यापार के सामान्य संचालन में होने वाले व्ययों एवं हानियों का लेखा किया जाता है, किन्तु साझेदारों से सम्बन्धित आपसी व्यवहारों का लेखांकन करने के लिए लाभ-हानि खाते के बाद पृथक से एक और खाता बनाया जाता है जिसे लाभ-हानि वितरणखाता या लाभ-हानि नियोजन खाता कहते है। लाभ-हानि खाते से साझेदारी फर्म का शुद्ध लाभ निकालने के बाद उसमें साझेदारों की पूँजी का ब्याज, उनका वेतन, बोनस, कमीशन और आहरण के ब्याज का समायोजन करने के बाद निकले अन्तिम लाभ (Final Profit) को साझेदारों के मध्य उनके लाभानुपात में विभाजित किया जाता है। साझेदारों के बीच विभाजनीय लाभ को 'विभाजन योग्य लाभ' (Divisible Profit) कहा जाता है। यह लाभ साझेदारों के पूँजी खातों अथवा चालू खातों में जमा किया जाता है।

प्रश्न 5. परिवर्तनशील और स्थायी पूँजी का अर्थ समझाइए।

उत्तर– इस पद्धति के अन्तर्गत साझेदारों के समस्त व्यवहारों का लेखा उनके पूँजी खाते में ही किया जाता है। इसमें साझेदारों के चालू खाते नहीं बनाये जाते हैं। साझेदारों द्वारा लाई गई पूँजी, माल, अतिरिक्त पूँजी, उन्हें दिया गया वेतन, कमीशन, बोनस, पूँजी पर ब्याज, लाभ तथा हानि आदि का लेखा पूँजी खाते में ही किया जाता है। दूसरे शब्दों में, प्रतिवर्ष पूँजी का शेष बदलता रहता है अर्थात् परिवर्तनशील रहता है। यदि कोई विशेष निर्देश न हों तो सदैव यह मानना चाहिये कि साझेदारों के पूँजी खाते परिवर्तनशील हैं।

प्रश्न 6. लाभ-हानि नियोजन खाते से क्या आशय है?

उत्तर– लाभ-हानि नियोजन खाता साझेदारी फर्म का वह खाता होता है, जो कि अन्तिम रूप से साझेदारों को वितरित की जाने वाली लाभ या हानि की राशि ज्ञात करने के लिये बनाया जाता है। यह अन्तिम राशि साझेदारों को उनके लाभालाभ अनुपात में (अनुपात नहीं दिया हो तो समान अनुपात में) उनके पूँजी खातों में अन्तरित कर दी जाती है। लाभ-हानि की राशि नियोजन खाते में साझेदारों को देय वेतन, बोनस, कमीशन, पूँजी पर ब्याज, उनके द्वारा देय आहरण पर ब्याज आदि का समायोजन किया जाता है और अन्त में उनके पूँजी खाते में अन्तरित किये जाने वाले लाभ या हानि की राशि लिखी जाती है।

प्रश्न 7. लाभ की ग्यारन्टी से क्या आशय है?

उत्तर– कभी-कभी विद्यमान साझेदार नये साझेदार को फर्म में प्रवेश देते समय उसे यह आश्वासन ग्यारन्टी देते हैं कि भविष्य में किसी भी वर्ष उसे एक निश्चित न्यूनतम राशि लाभ रूप में अवश्य प्राप्त होगी। यदि किसी वर्ष उसे इस न्यूनतम राशि से कम लाभ प्राप्त होता हो तो ग्यारन्टी देने वाले साझेदार द्वारा कमी की पूर्ति कर दी जायगी। अर्थात् जितनी राशि की कमी (Deficiency) होगी, वह गारन्टी देने वाले साझेदार द्वारा अपने लाभ के भाग में से पूरी की जायगी। यह भी ठहराव किया जा सकता है कि भविष्य में जब नये साझेदार को इस ग्यारन्टी की न्यूनतम राशि से अधिक लाभ मिलेगा तो वह ग्यारन्टी देने वाले साझेदार द्वारा वहन की गई कमी की पूर्ति अपने आधिक्य से कर देगा।

प्रश्न 8. आहरण पर ब्याज की गणना की विधियाँ समझाइए।

उत्तर– (I) गुणनफल पद्धति (Product Method)- इस पद्धति के अन्तर्गत निम्न प्रक्रिया अपनाई जाती है–

(a) आहरित राशि में माह या दिनों (जो भी हो) का गुणा कीजिए। इसे गुणनफल कहा जाता है।

(b) सभी गुणकफलों को जोड़ियें।

(c) ब्याज की गणना के लिए निम्नांकित सूत्र का प्रयोग कीजिए–

(i) माह के आधार पर (On the basis of months)

$$\text{Interest} = \frac{\text{Total products} \times \text{Rate of interest}}{100 \times 12}$$

(ii) दिनों के आधार पर (On the basis of days)

$$\text{Interest} = \frac{\text{Total products} \times \text{Rate of interest}}{100 \times 365}$$

(II) औसत देय तिथि पद्धति (Average Due Date Method)- इस पद्धति के अन्तर्गत कुल आहरित राशि पर ब्याज की गणना

@NP_BOARD_25 (Telegram)

की जाती है। गुणनफल पद्धति की तरह आहरण की प्रत्येक राशि में आहरण की अवधि का गुणा किया जाता है। इसके बाद औसत माह या औसत दिनों को ज्ञात किया जाता है।

प्रश्न 9. यदि कोई साझेदार प्रत्येक माह के प्रथम दिन 1500 रु. वर्ष भर आहरित करता है तो 10% वार्षिक दर से वर्ष का आहरण पर ब्याज ज्ञात कीजिए।

उत्तर– आहरण पर ब्याज = 1500 × 12 = 18,000

आहरण पर ब्याज = $\frac{18,000 \times 10}{100} \times \frac{6.5}{12} = 975$

प्रश्न 10. यदि कोई साझेदार प्रत्येक माह के अंतिम दिन 1500 रु. वर्ष भर आहरित करता है तो 10% वार्षिक दर से वर्ष का आहरण पर ब्याज ज्ञात कीजिए।

उत्तर– आहरण पर ब्याज = 1000 × 12 = 12,000

$= \frac{12,000 \times 10}{100} \times \frac{5.5}{12} = 550$

आहरण पर ब्याज = 550

प्रश्न 11. एक साझएदार ने 1,000 रु. प्रति माह के मध्य में वर्ष भर आहरित किए। 12% वार्षिक दर से आहरण पर ब्याज ज्ञात कीजिए।

उत्तर– आहरण पर ब्याज = 1000 × 12 = 12,000

$= \frac{12,000 \times 12}{100} \times \frac{6}{12} = 720$

आहरण पर ब्याज = 720

◻ विश्लेषणात्मक प्रश्न :

प्रश्न 1. लाभ-हानि निर्याजन खाता बनाने के उद्देश्य लिखिये।

उत्तर– लाभ-हानि नियोजन खाता साझेदारी फर्म का वह खाता होता है, जो कि अन्तिम रूप से साझेदारी को वितरित की जाने वाली लाभ या हानि की राशि ज्ञात करने के लिये बनाया जाता है। यह अन्तिम राशि साझेदारों को उनके लाभालाभ अनुपात में (अनुपात नहीं दिया हो तो समान अनुपात में) उनके पूंजी खाते के अन्तरित कर दी जाती है। लाभ-हानि की राशि नियोजन खाते में साझेदारों को देय वेतन, बोनस, कमीशन, पूंजी पर ब्याज, उनके द्वारा देय आहरण पर ब्याज आदि का समायोजन किया जाता है और अन्त में उनके पूंजी खाते में अन्तरित किये जाने वाले लाभ या हानि की राशि लिखी जाती है। वस्तुतः लाभ-हानि नियोजन खाता लाभ-हानि खाते का ही विस्तार है, जिसमें सारे समायोजन कर वितरण योग्य राशि ज्ञात की जाती है। यह वितरण योग्य लाभ ज्ञात करने के लिए बनाया जाता है।

प्रश्न 2. साझेदारी की किन्हीं तीन विशेषताओं को समझाइए।

उत्तर– साझेदारी के लक्षण या विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं–

1. ठहराव का होना (Agreement)- साझेदारी के लिए ठहराव का होना आवश्यक है। ऐसा ठहराव (अनुबन्ध) लिखित हो सकता है या मौखिक।

2. साझेदारों की न्यूनतम तथा अधिकतम संख्या– साझेदारी निर्माण के लिए कम से कम दो व्यक्तियों का होना आवश्यक है। अधिनियम अधिकतम संख्या के बारे में मौन है। किन्तु कम्पनी अधिनियम, 2013 के नियम क्रमांक 10 (कम्पनी के विविध नियम, 2014) के अन्तर्गत साझेदारों की अधिकतम संख्या पचास हो सकती है। यदि संख्या पचास से अधिक हो जाए तो ऐसी दशा में फर्म को अवैधानिक माना जाएगा।

3. सदस्यता की पात्रता– केवल व्यक्ति ही साझेदार बन सकते हैं, कोई भी संस्था, संघ या व्यक्तियों का समुदाय साझेदार नहीं बन सकते।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 3. साझेदारी संलेख की प्रमुख बातें लिखिए।

उत्तर– साझेदारी संलेख की प्रमुख बातें निम्नलिखित हैं–

1. फर्म का नाम तथा पता– फर्म अपना नाम रखने में स्वतंत्र है, किन्तु यह किसी अन्य विद्यमान फर्म के नाम से मिलता-जुलता नहीं होना चाहिए अथवा ऐसा नहीं हो सकता, जिससे केन्द्र या राज्य सरकार से संबंध होने की भ्रांति हो।

2. व्यापार की प्रकृति एवं क्षेत्र– साझेदारी प्रलेख में इस बात का स्पष्ट उल्लेख होना जरूरी है कि फर्म किस वस्तु का व्यापार करेगी तथा व्यापार का क्षेत्र क्या होगा?

3. साझेदारी की अवधि– साझेदारी प्रलेख में इस बात का स्पष्ट उल्लेख चाहिए कि फर्म अपना कार्य किस तिथि से शुरू करेगी और अवधि क्या होगी? यदि अवधि नहीं दी गई तो इसे कभी भी समाप्त किया जा सकता है।

4. साझेदारों के कर्त्तव्य तथा अधिकार– साझेदारी प्रलेख में साझेदारों के कर्तव्य और अधिकार तथा उन पर लगाए गए प्रतिबन्धों का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए।

5. साझेदार का प्रवेश एवं अवकाश ग्रहण– साझेदारी प्रलेख में यह स्पष्ट किया जाएगा कि किस प्रकार और कब नये व्यक्ति को फर्म में प्रवेश दिया जाएगा?

6. साझेदारी का विघटन- साझेदारी प्रलेख में यह भी स्पष्ट कर देना चाहिए कि किन-किन दशाओं में फर्म का विघटन (Dissolution) किया जा सकेगा?

प्रश्न 4. साझेदारी संलेख के अभाव में लागू होने वाले नियम लिखिए।

उत्तर– साझेदारी अनुबंध न होने की दशा में भारतीय साझेदारी अधिनियम, 1932 का धारा 12 से धारा 17 में वर्णित निम्नलिखित नियम लागू होंगे

1. व्यवसाय का संचालन– प्रत्येक साझेदार व्यवसाय के संचालन भाग ले सकता है।

2. कर्त्तव्यों को पूरा करना– प्रत्येक साझेदार का यह कर्तव्य है कि यह व्यवसाय संचालन में अपने कर्त्तव्यों को श्रमपूर्वक पूरा करें।

3. मतभेद का निपटारा– व्यापार से संबंधित किसी साधारण बात पर मतभेद हो तो इसका निपटारा साझेदारों के बहुमत से किया जाएगा। किन्तु व्यापार के स्वभाव में परिवर्तन समस्त साझेदारों की सहमति के बिना नहीं किया जा सकता।

4. हिसाब–किताब का निरीक्षण– फर्म की हिसाब–किताब की पुस्तकों का निरीक्षण करने तथा प्रतिलिपि लेने का अधिकार सभी साझेदारों को होगा।

5. पारिश्रमिक– किसी भी साझेदार व्यवसाय में भाग लेने के लिए कोई पारिश्रमिक लेने का अधिकार नहीं होगा।

6. लाभ–हानि का विभाजन– फर्म के लाभ–हानि का विभाजन साझेदारों में समान अनुपात में होगा।

7. पूँजी पर ब्याज– यदि किसी साझेदार को पूँजी ब्याज पाने का अधिकार हो तो ऐसा ब्याज केवल लाभ में से ही दिया जा सकेगा।

प्रश्न 5. साझेदार के अधिकार लिखिए।

उत्तर– प्रत्येक साझेदार को निम्नलिखित अधिकार होते हैं

1. प्रबन्ध में भाग लेना– फर्म के व्यवसाय के प्रबन्ध में प्रत्येक साझेदार को भाग लेने का अधिकार होता है।

2. परामर्श संबंधी अधिकार– फर्म के व्यवसाय से संबंधित मामलों में परामर्श लिए जाने का प्रत्येक साझेदार को अधिकार होता है।

3. निरीक्षण संबंधी अधिकार– प्रत्येक साझेदार को फर्म के हिसाब–किताब की पुस्तकों का निरीक्षण करने तथा उनकी प्रतिलिपि प्राप्त करने का अधिकार होता है।

4. लाभ–हानि में भागीदारी का अधिकार– प्रत्येक साझेदार को निर्धारित अनुपात में फर्म के लाभ–हानि में भाग प्राप्त करने का अधिकार होता है।

5. फर्म को दिए गए ऋण पर ब्याज प्राप्त करने का अधिकार– यदि कोई साझेदार फर्म को ऋण देता है तो उसे निर्धारित दर से ब्याज प्राप्त करने का अधिकार होता है। यदि ब्याज की दर निर्धारित नहीं की गई हो तो ऐसी दशा में साझेदारी अधिनियम, 1932 के अनुसार 6 प्रतिशत वार्षिक की दर से ब्याज प्राप्त करने का अधिकार होगा।

© MP BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 6. स्थिर पूँजी तथा परिवर्तनशील पद्धति पूँजी में अन्तर दर्शाइए।

उत्तर– स्थिर पूँजी व परिवर्तनशील पूँजी में निम्नलिखित अन्तर है–

क्र.	अन्तर का आधार	स्थिर पूँजी	परिवर्तनशील पूँजी
1.	चालू खाता	इसमें चालू खाता बनाया जाता है।	इसमें चालू खाता नहीं बनाया जाता है।
2.	शेष परिवर्तन	पूंजी खाते का शेष सामान्यतः प्रतिवर्ष स्थायी रहता है। अतिरिक्त पूँजी लगाने या निकालने पर शेष बदल सकता है।	इसमें प्रतिवर्ष पूँजी खाते का बदलता रहता है।
3.	लेखा की मदें	इसमें केवल प्रारम्भिक पूँजी, अतिरिक्त रूप से लगाई गई पूँजी स्थायी रूप से निकाली गई पूँजी का ही लेखा किया जाता है।	इसमें प्रारम्भिक पूँजी अतिरिक्त पूँजी, आहरित पूँजी के अलावा साझेदारों को दिए गए वेतन, पूँजी पर ब्याज, कमीशन, बोनस, आहरण पूँजी पर ब्याज, कमीशन, बोनस आहरण पर ब्याज, लाभ आदि का भी लेखा किया जाता है।
4.	खातों की संख्या	इसमें सभी व्यवहारों के लिए एक पूँजी खाता तथा एक चालू खाता मनाया जाता है।	इसमें सभी आवहारों के लिए केवल पूँजी खाता ही बनाया जाता है।
5.	पूँजी खाते का प्रवृत्ति	इसमें पूँजी खाते में पूँजी सदैव स्थिर रहती है।	इसमें पूँजी खाते की पूँजी परिवर्तित होता रहती है।

प्रश्न 7. A और B एक फर्म में साझेदार है, जिनकी पूँजी क्रमांक : 5,00,000 रु. और 8,00,000 हैं। इनके बीच साझेजारी समझौता नहीं हुआ है। 31 मार्च 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष में 1,80,000 रु. का लाभ हुआ B पूँजी पर 5% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज हेतु दावा करता है, जबकि A इसके पक्ष में नहीं है लाभ–हानि वितरण खाता बनाकर साझेदारों के मध्य लाभ का विभाजन कीजिए।

हल (Solution) : लाभ–हानि वितरण खाता

Particulars	*Amount*	*Particulars*	*Amount*
		By, Profit & Loss	1,80,000
To, A' Capital A/c	90,000		
B' Capital A/c	90,000		
	1,80,000		1,80,000

प्रश्न 8. अर्चना और अंकिता एक फर्म में साझेदार है, जिनकी पूँजी क्रमशः 5,00,000 रु. और 7,00,000 रु. है। साझेदारी समझौते में 5% वार्षिक की दर से विनियोजन के रूप में पूँजी पर ब्याज देने का प्रावधान है। 31 मार्च 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष में फर्म को 30,000 रु. की हानिन हुई। लाभ–हानि विभाजन अनुपात 2:3 है। हानि के विभाजन के लिए आवश्यक खाता दर्शाइए।

हल (Solution) : लाभ–हानि वितरण खाता

Particulars	*Amount*	*Particulars*	*Amount*
To Balance	30,000	By Archana	12,500
		By Ankita	17,500
	30,000		30,000

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 9. A, B और C एक फर्म में साझेदार हैं उनकी पूँजी 1 जनवरी 2018 को क्रमशः 80,000 रु., 40,000 रु. और 20,000 रु. थी। A को 25,000 वेतन दिया गया। पूँजी पर ब्याज की दर 10% प्रतिवर्ष है। ब्याज देने के बाद लाभ का विभाजन निम्नांकित रूप में किया जाता है। प्रथम 50,000 रु. 3 : 3 : 4 के अनुपात में, अगले 40,000, 4 : 4 : 2 के अनुपात में, शेष लाभ 6 : 3 : 1 के अनुपात में 2018 वर्ष में ब्याज देने के पूर्व परन्तु काटने के बाद फर्म का लाभ 1,99,000 था। लाभ–हानि नियोजन खाता बनाइए।

हल (Solution) : लाभ–हानि वितरण खाता

Particulars		*Amount*	*Particulars*	*Amount*
To Intt. on Capital A/c			By Profit	1,99,000
A	8,000			
B	4,000			
C	2,000	14,000		
To Net Profit *				
(transferred to Capital A/c)				
A	88,000			
B	59,500			
C	37,500	1,85,500		
		1,99,000		1,99,000

***Working Note :** Distribution of Profits (1,85,000 – 50,000 – 95,000)

		A	B	B
First	50,000 (3 : 3 : 4)	15,000	15,000	20,000
Next	40,000 (4 : 4 : 2)	16,000	16,000	8,000
Remaining	95,000 (6 : 3 : 1)	57,000	28,500	9,500
		1,85,000	88,000	37,500

प्रश्न 10. x और y क्रमश: 3:2 के अनुपात में साझेदार हैं जिनकी पूँजी क्रमश: 50,000 रु. तथा 30,000 रु. है। पूँजी पर ब्याज 6 प्रतिशत वार्षिक की दर से देय है। y को 2,500 रु. वार्षिक वेतन देय है। वर्ष 2017 में y का वेतन देने के पूर्व 12,500 रु. का लाभथा। मैनेजर के कमीशन हेतु लाभ का 5% आयोजन करना है। साझेदारों में लाभ का वितरण दर्शाइए तथा उनके पूँजी खाते बनाइए।

हल (Solution) : लाभ–हानि वितरण खाता

Particulars		Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Intt on Capital			By Profit & Loss	12,500
x	3,000			
y	1,800	4,800		
To Salary y		2,500		
To Commission		725		
To x	2685			
y	1790	4475		
		12,500		12,500

Capital A/c

Particulars	x ₹	y ₹	Particulars	x ₹	y ₹
To Closing Balance	55,665	36,090	By Balance	50,000	30,000
			By intt on Capital	3,000	1,800
			By Salary	-	2,500
			By P & L	2,685	1,790
	55,685	36,090		55,685	36,090

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 11. x और y एक फर्म में साझेदार हैं। 31 मार्च 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष में उन्होंने 1,60,000 रु. लाभ अर्जित किया। साझेदारी समझौते के अनुसार फर्म के लाभ पर विभाजन निम्नानुसार किया जाएगा–

पूँजी पर 6% वार्षिक से व्याज दिया जाएगा। x की पूँजी पर व्याज 8,000 रु. और y की पूँजी पर व्याज 7,500 रु. हैं। x को 12,000 वार्षिक वेतन दिया जाएगा। आहरण पर 5% वार्षिक व्याज लगाया जाएगा। आहरण पर व्याज x - 1,200 रु. तथा y - 2,000 रु. है। साझेदारों के वीच लाभ–हानि का विभाजन 3:2 में किया जाएगा।

हल (Solution) : लाभ–हानि वितरण खाता

Particulars		Amount ₹	Particulars		Amount ₹
To intt on Capital.			By Balance		1,60,000
x	8,000		By intt on Drawing .		
y	+ 7,500	15,500	x	1,200	
To Salary : x		12,000	y	+ 2,000	3,200
To Profit :					
x	81,420				
y	54,280	1,35,700			
		1,63,200			1,63,200

प्रश्न 12. राजेश, सुनील और तरूण साझेदार हैं, जो क्रमश: $\frac{1}{2}:\frac{1}{4}:\frac{1}{4}$ में लाभ बाँटते है। उनकी पूंजी क्रमश: 1,20,000 रु, 80,000 रु. और 60,000 रु. है। साझेदारों को पूँजी पर 5% व्याज दिया जाता है और आहरण पर 5% व्याज लिया जाता है तरूण 30,000 रुपये वार्षिक वेतन पाने का अधिकारी है और सुनील कुल विक्री पर 1% कमीशन पाता है। वर्ष 2018 में सार्थ का त्याग, उपरोक्त समायोजनाओं के पूर्व 1,15,000 रु. था और कुल विक्रय 14,00,000 रु. था। उनके आहरण क्रमश: 40,000 रु., 56,000 रु. और 60,000 रु. थे। जिन पर क्रमश: 800 रु., 1,000 रु. और 1,200 रु. व्याज हुआ। लाभ-हानि वितरण खाता बनाइए।

हल (Solution) :

लाभ-हानि वितरण खाता

Particulars		Amount ₹	Particulars		Amount ₹
To Intt on Capital			By Balance		1,15,000
Rajest :	6,000		By Intt on Drawing		
Sunil :	4,000		Rajesh	8,00	
Tarun :	3,000	13,000	Sunil	1,000	
To Salary (Tarun)		30,000	Tarun	1,200	3,000
To Commission Sunil		14,000			
To R	30,500				
S	15,250				
T	15,250	61,000			
		1,18,000			1,18,000

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 13. सलोनी, सम्रद्धि और सौम्या एक फर्म में साझेदार हैं, जो लाभ-हानि 4:3:2 के अनुपात में बाँटते हैं। सम्रद्धि को 3,000 रु. मासिक वेतन दिया जाता है और सौम्या कुल बिक्री पर जो 18,00,000 है, 3% की दर से कमीशन पाता है फर्म ने वर्ष 2018 में बिक्री पर 15% लाभ अर्जित किया है। साझेदारों में लाभ विभाजन के लिए पंजी प्रविष्टियाँ कीजिए।

हल (Solution) :

Journal Entries

Date	Particulars		LF	Dr. Amt.	Cr. Amt.
1.	Salary A/c	Dr.		36,000	
	Commission A/c	Dr.		54,000	
	To Samardhhi Capital A/c				36,000
	To Somya Capital A/c				54,000
	(Salary / Commission credited to capital a/c)				
2.	P & Loss. App. A/c	Dr.		90,000	
	To Salary A/c				36,000
	To Commission A/c				54,000
	(Salary/ Commission transferal to P. & L. a/c)				
3.	Profit & Loss App. A/c	Dr.		1,80,000	
	To Saloni. A/c				80,000
	To Samardhi. A/c				60,000
	To Somya. A/c				40,000
	(Being Profit traf. to capital a/c)				

प्रश्न 14. 1 जनवरी 2018 को 'अ' और 'ब' क्रमशः 1,00,000 रु. और 1,20,000 की पूँजी लगाकर साझेदार है। इसी दिन 'अ' ने फर्म को 45,000 रु. का ऋण दिया है। उस वर्ष का लाभ 45,000 रु. है। साझेदारी समझौते के अभाव में लाभ साझेदारों में लाभ का विभाजन किस प्रकार करेंगे? लाभ-हानि वितरण खाता बनाइए।

हल (Solution) : लाभ-हानि वितरण खाता

Particulars		Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Int on Loan A/c		2,700	By Balance (Profit)	45,000
To Capital A/c				
A	21,150			
B	21,150	42,300		
		45,000		45,000

प्रश्न 15. मोहन और रमेश 5:3 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हुए एक फर्म में साझेदार है। उनकी पूँजी क्रमशः 3,00,000 रु. एवं 2,00,000 रु. थी। साझेदारी संलेख में व्यवस्था है कि-

(अ) पूँजी पर ब्याज 12% वार्षिक की दे मिलना चाहिए। (ब) रमेश को शुद्ध लाभ का 5% कमीशन मिलना चाहिए। वर्ष का लाभ 1,23,000 रु. था। लाभ-हानि नियोजन खाता बनाइए।

हल (Solution) : लाभ-हानि वितरण खाता

Particulars		Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Int on Capital A/c			By Balance	1,23,000
Mahesh	36,000			
Ramesh	24,000	60,000		
To Commission R		3,000		
To Capital A/c				
Mahesh	37,500			
Ramesh	22,500	60,000		
		1,23,000		1,23,000

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 16. राम और कृष्ण एक फर्म में 3:2 के अनुपात में लाभालाभ विभाजित करने वाले साझेदार हैं। उन्होंने अपने मुनीम शिव को जो 500 रु. मासिक वेतन पाता है, इस शर्त पर साझेदार बनाया कि उसे लाभ में $\frac{1}{10}$ भाग दिया जाएगा, किन्तु किसी भी वर्ष लाभ की राशि उसके वेतन से कम नहीं होगी। प्रथम वर्ष में फर्म को 50,000 रु. का लाभ हुआ। साझेदारों में लाभ का विभाजन दर्शाइए।

हल (Solution) : लाभ-हानि वितरण खाता

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Ram	26,400	By Balance	50,000
To Krishna	17,600		
To Shiv	6,000		
	50,000		50,000

प्रश्न 17. A, B और C साझेदार हैं। उनकी पूंजी 1 जनवरी 2018 को क्रमश: 40,000 रु. 32,000 रु. तथा 20,000 रु. है। B को 750 रु. मासिक वेतन दिया जाएगा। पूंजी पर 6% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज देय है। लाभ में से वेतन तथा ब्याज काटने के बाद शेष लाभ निम्न प्रकार से बाँटा जाएगा- (1) प्रथम 20,000 रु. 9:8:3 के अनुपात में। (2) अगले 10,000 रु. 4:3:3 के अनुपात में। (3) शेष लाभ 2:1:1 के अनुपात में।

उपर्युक्त समायोजन के पूर्व फर्म का लाभ 46,920 रु. था। लाभ-हानि वितरण खाता और साझेदारों के मध्य लाभ-हानि विभाजन दर्शाने वाला विवरण बनाइए।

हल (Solution) : Profit and Loss Appropriation A/c

Dr. For the Year ending 31st December, 2018 Cr.

Particulars		Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Interest on Capital			By Profit and Loss A/c	46,920
A	2,400			
B	1,920			
C	1,200	5,520		
To B's Salary (750×12)		9,000		
To Net Profit (transferred to Capital A/cs				
A	14,200			
B	11,600			
C	6,600	32,400		
		46,920		46,920

Statement Showing the Distribution of Profit

Particulars	A	B	C
First 20,000 (9 : 8 : 3)	9,000	8,000	3,000
Next 10,000 (4 : 3 : 3)	4,000	3,000	3,000
Balance 2,400 (2 : 1 : 1)	1,200	600	600
	14,200	11,600	6,600

प्रश्न 18. अजित, अमित और अदिल एक फर्म में 5:3:2 में लाभ विभाजित करने वाले साझेदार हैं। अजित और अदिल को व्यक्तिगत रूप से गारण्टी दी है कि उसका लाभ पूँजी पर 10% वार्षिक ब्याज लगाने के पश्चात 22,500 रु. से कम नहीं होगा। साझेदारों की पूँजी क्रमश: 1,20,000 रु., 75,000 रु. एवं 60,000 रु. थी। वर्ष 2018 में लाभ पूँजी पर ब्याज काटने के पूर्व 1,19,250 रु. था। लाभ-हानि नियोजन खाता बनाइए।

हल (Solution) : लाभ-हानि वितरण खाता

Particulars		Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To intt on Capital			By Balance	1,19,250
Ajit	12,000			
Amit	7,500			
Adit	6,000	25,500		

@MP_BOARD_25 (Telegram)

To Capital A/c				
Arti	43,125			
Amit	28,125			
Adit	22,500	93,750		
		1,19,250		1,19,250

प्रश्न 19. आर्य और समर्थ 5:3 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हुए एक फर्म में साझेदार है। उनकी पूँजी क्रमशः 3,00,000 रु. एवं 2,00,000 रु. थी। साझेदारी संलेख में व्यवस्था है कि– (अ) पूँजी पर 12% वार्षिक की दर से ब्याज मिलना चाहिए। (ब) समर्थ को शुद्ध लाभ पर 5% कमीशन मिलना चाहिए। वर्ष का शुद्ध लाभ 1,23,000 रु. था। लाभ–हानि नियोजन खाता बनाइए।

हल (Solution) : लाभ–हानि वितरण खाता

Particulars		*Amount* ₹	*Particulars*	*Amount* ₹
To Intt on Capital			By Balance	1,23,000
Aarv	36,000			
Samarth	24,000	60,000		
To Commission		3,000		
To Aarva capital a/c	37,500			
Samarth capital a/c	22,500	60,000		
		1,23,000		1,23,500

इकाई–2 साझेदारी फर्म का पुनर्गठन– साझेदार का प्रवेश

अंकवार प्रश्नों की संख्या				कुल अंक
वस्तुनिष्ठ प्रश्नों (1 अंक)	अति लघुउत्तरीय प्रश्न (2 अंक)	लघुउत्तरीय प्रश्न (3 अंक)	विश्लेषणात्मक प्रश्न (4 अंक)	
3	–	1	–	6

■ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर :

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए–

(1) ख्याति है–
(a) एक चल सम्पत्ति (b) एक स्थाई सम्पत्ति
(c) एक मूर्त सम्पत्ति (d) एक कृत्रिम सम्पत्ति

(2) फर्म के पुनर्गठन पर जिस साझेदार के लाभ का भाग पूर्व की तुलना में बढ़ जाता है उसे कहते हैं–
(a) प्रभावपूर्ण साझेदार (b) नफे वाला साझेदार
(c) त्याग करने वाला साझेदार
(d) मुख्य साझेदार

(3) पुनर्मूल्यांकन खाते की हानि लिखी जाती है–
(a) चालू खाते के क्रेडिट पक्ष में
(b) पूँजी खाता के क्रेडिट पक्ष में
(c) पूँजी खाते के डेबिट पक्ष में
(d) रोकड़ खाते के डेबिट पक्ष में

(4) पुनर्मूल्यांकन का लाभ/हानि बाँटा जाता है–
(a) नए लाभ–हानि अनुपात में
(b) पुराने लाभ–हानि अनुपात में
(c) प्राप्ति अनुपात में
(d) त्याग अनुपात में

(5) नये साझेदार द्वारा ख्याति का भुगतान किया जाता है–
(a) भावी लाभ में हिस्सा पाने के लिए
(b) पूँजी के भुगतान के लिए
(c) पुराने शुल्क भुगतान के लिए
(d) सम्पत्तियों पर अधिकार के लिए

@MP_BOARD_25 (Telegram)

(6) वास्तविक औसत लाभ का सामान्य लाभ पर अधिक्य है–
(a) सामान्य लाभ (b) असामान्य लाभ
(c) अधिलाभ (d) सम्भावित लाभ

(7) जब ख्याति की राशि नगद नहीं लाई जाती है, तो इसे डेबिट किया जाएगा–
(a) पुराने साझेदार के पूँजी खाते में
(b) नये साझेदार के पूँजी खाते में
(c) सभी साझेदारों के पूँजी खाते में
(d) फर्म के रोकड़ खाते में

(8) साझेदारों के लाभानुपात में परिवर्तन पर संचितियों का विभाजन होता है–
(a) पूर्व अनुपात में (b) समान अनुपात में
(c) नये अनुपात में (d) पूँजी अनुपात में

(9) विद्यमान साझेदारों के लाभानुपात में परिवर्तन का परिणाम है–
(a) सभी साझेदारों के लाभानुपात में कमी
(b) सभी साझेदारों के लाभानुपात में वृद्धि
(c) त्यागी साझेदार के लाभानुपात में कमी
(d) त्यागी साझेदार के लाभानुपात में वृद्धि

(10) पुनर्मूल्यांकन खाता बनाया जाता है–
(a) व्यवसाय बंद होने पर
(b) नए साझेदार के प्रवेश पर
(c) फर्म में लाभ होने पर
(d) फर्म में हानि होने पर

(11) अवितरित लाभों वह संचयों को हस्तांतरित किया जाता है–
(a) रोकड़ खाते में (b) बैंक खाते में
(c) पूँजी खाते में (d) लाभ/हानि खाते में

(12) साझेदार के प्रवेश पर पुनर्मूल्यांकन से हुए लाभ को अंतरित किया जाता है–
(a) लाभ-हानि खाते में
(b) सभी साझेदारों के पूँजी खाते में
(c) नए साझेदार के पूँजी खाते में
(d) पुराने साझेदारों के पूँजी खाते में

उत्तर– (1) (d), (2) (b), (3) (c), (4) (c), (5) (a), (6) (c), (7) (b), (8) (a), (9) (c), (10) (b), (11) (c), (12) (d)।

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(1) ख्याति व्यापार की ..... सम्पत्ति है।
(2) ख्याति लाभ कमाने में ..... होती है।
(3) ख्याति पर ..... नहीं लगाया जाता है।
(4) ख्याति का वास्तविक मूल्य व्यवसाय के ..... के समय ही ज्ञात हो सकता है।
(5) औसत लाभ - सामान्य लाभ = ... लाभ।
(6) सामान्य लाभ की गणना ..... पूँजी पर की जाती है।
(7) साझेदारी ठहराव में परिवर्तन साझेदारी फर्म का ..... कहलाता है।
(8) ..... = पुराना अनुपात - नया अनुपात।
(9) नया अनुपात - पुराना अनुपात = ...।
(10) पुनर्मूल्यांकन पर होने वाले लाभ/हानि में ..... साझेदार को कोई संबंध नहीं होता है।
(11) दायित्व में कमी फर्म का ..... होता है।
(12) त्याग अनुपात ..... के बराबर होता है।

उत्तर– (1) कृत्रिम, (2) सहायक, (3) ह्रास, (4) समापन, (5) अधि, (6) फर्म की, (7) पुनर्गठन, (8) त्याग, (9) नये का अनुपात, (10) नये, (11) लाभ, (12) ख्याति।

प्रश्न 3. सही जोड़ी बनाइये–

(A)	(B)
(1) ख्याति एक	(a) पूँजी खाते के डेबिट पक्ष में
(2) पुनर्मूल्यांकन की हानि	(b) लेखांकन प्रमाप - 26
(3) फर्म का पुनर्गठन	(c) पूँजी खाते के क्रेडिट पक्ष में
(4) ख्याति का लेखांकन	(d) विक्रय योग्य सम्पत्ति है
(5) पुनर्मूल्यांकन पर लाभ	(e) अमूर्त सम्पत्ति है
(6) ख्याति एक	(f) साझेदारी ठहराव में परिवर्तन

उत्तर– (1) (e), (2) (a), (3) (f), (4) (b), (5) (c), (6) (d)।

(A)	(B)
(1) त्याग अनुपात बराबर	(a) पुनर्मूल्यांकन खाता डेबिट
(2) सामान्य लाभ	(b) नए साझेदार के प्रवेश पर
(3) संपत्ति के मूल्य में वृद्धि	(c) ख्याति का मूल्यांकन
(4) दायित्व के मूल्य में वृद्धि	(d) लाभ प्राप्ति अनुपात
(5) पुनर्मूल्यांकन खाता	(e) विनियोजित पूँजी पर
(6) औसत लाभ	(f) पुनर्मूल्यांकन खाता क्रेडिट

उत्तर– (1) (d), (2) (c), (3) (f), (4) (a), (5) (b), (6) (e)।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 4. सत्य / असत्य लिखिए–

1. ख्याति को प्रत्येक दशा में पुस्तकों में दर्शाया जाना चाहिए।
2. ख्याति पर हानि नहीं लगाया जाता है।
3. त्याग के अनुपात की दशा में साझेदार को पूर्व की तुलना में लाभ होता है।
4. एक अच्छी फर्म ख्याति को अपलिखित कर देती है।
5. लाभार्जन में परिवर्तन का ख्याति के मूल्य पर प्रभाव नहीं पड़ता है।
6. पुनर्गठन की दशा में विद्यमान ठहराव में परिवर्तन हो जाता है।
7. पुनर्मूल्यांकन खाता सम्पत्ति के विक्रय पर बनाया जाता है।
8. पुनर्मूल्यांकन खाता एक वास्तविक खाता है।
9. नये साझेदारों के सहमत होने पर ख्याति का मूल्यांकन किया जाता है।
10. साझेदारों के सहमत होने पर ख्याति का मूल्यांकन किया जाता है।
11. त्याग अनुपात लाभ प्राप्ति अनुपात से अधिक होता है।
12. लाभ में हिस्सा पाना नए साझेदार का प्रमुख अधिकार है।

उत्तर– 1. असत्य, 2. सत्य, 3. असत्य, 4. सत्य, 5. असत्य, 6. सत्य, 7. असत्य, 8. असत्य, 9. सत्य, 10. सत्य, 11. असत्य, 12. सत्य।

प्रश्न 5. एक शब्द / वाक्य में उत्तर लिखिए–

1. जब पुराना अनुपात नये अनुपात की तुलना में अधिक हो तो उसे क्या कहते हैं?
2. जब ख्याति की राशि नगद लाई जाती है तो उसे किस खाते में जमा (क्रेडिट) करते हैं।
3. लेखांकन प्रमाप-26 किस से संबंधित है?
4. ख्याति मूल्यवान सम्पत्ति कब कही जाती है?
5. ख्याति के मूल्यांकन का आधार क्या है ?
6. कौन-सी ख्याति का लेखा पुस्तकों में नहीं किया जाता?
7. वास्तविक औसत लाभ का सामान्य लाभ पर आधिक्य क्या कहलाता है?
8. जिस सम्पत्ति को देखा या स्पर्श नहीं किया जा सकता उसे क्या कहते हैं?
9. फर्म की सम्पत्तियों एवं दायित्वों के मूल्य में परिवर्तन का लेखा किस खाते में किया जाता है।
10. पुनर्मूल्यांकन खाता किस प्रकृति का खाता है?
11. त्याग अनुपात की गणना क्यों आवश्यक है?
12. दायित्व का मूल्य कम होने पर इसे पुनर्मूल्यांकन खाते के किस पक्ष में लिखा जाएगा।

उत्तर– (1) त्याग अनुपात (2) पूँजी खाते में (3) ख्याति (4) मूल्यांकन (5) लाभ (6) छिपी ख्याति (7) अधिलाभ (8) अमूर्त (9) पुर्नमूल्यांकन खाता (10) अवास्तविक (11) नये साझेदार से ख्याति के लिए (12) डेबिट पक्ष में।

■ लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर :

प्रश्न 1. नये साझेदार को कौन से प्रमुख अधिकार प्राप्त होते है?

उत्तर– नये साझेदार को दो प्रकार के अधिकार प्राप्त होते हैं–

1. फर्म की सम्पत्ति में भाग प्राप्त करना– इस अधिकार को प्राप्त करने के लिए नये साझेदार द्वारा फर्म में पूँजी लगाना पड़ती है। पूँजी की राशि का निर्धारण परस्पर ठहराव द्वारा किया जाता है। पूँजी के रूप में जो धनराशि नया साझेदार लाता है, वह उसके पूँजी खाते में जमा कर दी जाती है।

2. लाभ में भाग प्राप्त करना– नये साझेदार को फर्म के लाभ में हिस्सा कितना दिया जाए और विद्यमान साझेदार उसके लिए कितना त्याग करें, इसका निर्णय भी परस्पर ठहराव द्वारा किया जाता है। विद्यमान साझेदारों द्वारा किये जाने वाले त्याग के बदले उन्हें नये साझेदार से क्षतिपूर्ति या पुरस्कार स्वरूप कुछ प्रतिफल प्राप्त होता है, जिसे हम ख्याति कह सकते हैं। यह प्रतिफल विद्यमान साझेदारों के पिछले श्रम, जोखिम, सूझबूझ, लोकप्रियता आदि का पुरस्कार होता है।

प्रश्न 2. साझेदारों के लाभानुपात परिवर्तन से क्या आशय है?

उत्तर– साझेदारों के लाभानुपात में परिवर्तन (Change in Profit sharing Ratio of Partners)- विद्यमान सभी साझेदारों की सहमति से उनके लाभानुपात में परिवर्तन के लिये साझेदारी समझौते में परिवर्तन किया जाता है। उदाहरण के लिये, 'अ' 'ब' तथा 'स' 3 : 2 : 1 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हुए साझेदार हैं। इन्होंने निश्चय किया कि वे भविष्य में बराबर-बराबर अर्थात् 1 : 1 : 1 के अनुपात में लाभ बाँटेंगे। यह फर्म का पुनर्गठन कहलाएगा। इसमें लाभ प्राप्ति, त्याग के अनुपात की गणना के साथ-साथ ख्याति, संचित लाभ, सम्पत्ति और दायित्वों के पुनर्मूल्यांकन अथवा पूँजी खातों के समायोजन की आवश्यकता होती है।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 3. ख्याति के मूल्यांकन की आवश्यकता–मूल्यांकन किन दशाओं में आवश्यक है?

उत्तर– ख्याति का मूल्यांकन निम्नलिखित दशाओं में आवश्यक है– ख्याति के मूल्यांकन की आवश्यकता कब?

- अनुपात परिवर्तन
- नये साझेदार का प्रवेश
- विद्यमान साझेदार की निवृत्ति
- मृत्यु
- व्यवसाय की बिक्री
- फर्मों का एकीकरण

(1) जब साझेदार अपने विद्यमान पारस्परिक लाभ–विभाजन अनुपात में परिवर्तन करने का निर्णय करते हैं।

(2) जब फर्म में किसी नये साझेदार को प्रवेश दिया जाता है।

(3) जब कोई विद्यमान साझेदार फर्म से अवकाश ग्रहण करता है।

(4) जब किसी विद्यमान साझेदार की मृत्यु हो जाती है।

(5) जब किसी चालू व्यावसायिक उपक्रम को फर्म का व्यवसाय बेचने के लिये फर्म का विघटन कर दिया जाता है।

(6) जब दो फर्मों के एकीकरण (Amalgamation) का निर्णय किया जाता है।

प्रश्न 4. नये साझेदार की वैधानिक स्थिति को समझाइये।

उत्तर– भारतीय साझेदारी अधिनियम, 1932 के अनुसार एक नया साझेदार, साझेदारी में सम्मिलित होने के पूर्व के कार्यों के लिए उत्तरदायी नहीं होता है। यदि वह लिखित में दायित्व स्वीकार करता है, तो ही वह उनके लिए उत्तरदायी होता है। नये साझेदार के प्रवेश के पश्चात् वह फर्म के सभी कार्यों में सहभागी होता है और उनके लिए उत्तरदायी होता है। यदि समझौते द्वारा उसके कार्यों को सीमित किया गया हो, तो वह फर्म के कार्य अपनी सीमा में ही करता है।

प्रश्न 5. एक फर्म का औसत शुद्ध लाभ 60,000 रु. है। औसत लाभ के तीन वर्षों के क्रय के आधार पर ख्याति का मूल्य क्या होगा?

हल– ख्याति का मुल्यांकन (Valuation of Goodwill)

= औसत लाभ × 3 वर्ष

= 60,000 × 3

= 1,80,000 **Ans. 1,80,000**

प्रश्न 6. रानू, भानू और शानू समान अनुपात में साझेदार हैं। वे भविष्य में लाभ/हानि 3 : 2 : 1 के अनुपात में बाँटने का निर्णय करते हैं। लाभ प्राप्ति और त्याग अनुपात की गणना कीजिए।

हल (Solution) : पूराना अनुपात

रानु : भानु : शानु

$$\frac{1}{3} : \frac{1}{3} : \frac{1}{3}$$

$$\text{नया अनुपात} = \frac{3}{6} : \frac{2}{6} : \frac{1}{6}$$

$$\text{रानु} = \frac{1}{3} - \frac{3}{6} = \frac{2-3}{6} = \frac{1}{6} \text{ नफा अनुपात}$$

$$\text{भानु} = \frac{1}{3} - \frac{2}{6} = \text{Nil}$$

$$\text{रानु} = \frac{1}{3} - \frac{1}{6} = \frac{2-1}{6} = \frac{1}{6} \text{ त्याग अनुपात}$$

उत्तर– $\frac{1}{6}$

प्रश्न 7. ख्याति की प्रमुख विशेषताओं को लिखिए।

उत्तर– ख्याति की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

(1) ख्याति व्यवसाय की सम्पत्ति मानी जाती है।

(2) ख्याति एक अमूर्त सम्पत्ति है जिसे देखा नहीं जा सकता और न ही स्पर्श किया जा सकता है, केवल महसूस किया जा सकता है।

(3) ख्याति अधिक लाभ अर्जित करने में सहयोग प्रदान करती है।

(4) विभिन्न व्यवसायों को अलग–अलग कारणों से ख्याति प्राप्त होती है।

(5) ख्याति का मूल्यांकन किया जा सकता है।

(6) ख्याति का मूल्य सदैव स्थायी नहीं होता।

प्रश्न 8. ख्याति की प्रकृति समझाइए।

उत्तर– व्यापार की अन्य सम्पत्तियों की भाँति ख्याति भी व्यापार की सम्पत्ति है। क्योंकि वह अन्य सम्पत्तियों की भाँति व्यापार का लाभ बढ़ाने में सहायक होती है। ख्याति कैसी सम्पत्ति है? इस सम्बन्ध में विद्वानों के अलग–अलग मत हैं। कुछ विद्वान इसे स्थायी सम्पत्ति मानते हैं, तो कुछ अवास्तविक और कुछ इसे अदृश्य व अमूर्त सम्पत्ति बताते हैं।

©MP BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 9. सामान्य लाभ और अधिलाभ में अंतर लिखिए।

उत्तर- सामान्य लाभ एवं अधिलाभ में निम्नलिखित अंतर है-

क्र.	अंतर का आधार	सामान्य लाभ	अधिलाभ
1.	आशय	विनियोजित पूंजी पर अर्जित लाभ को सामान्य लाभ कहते हैं।	सामान्य लाभ पर वास्तविक लाभ के आधिक्य को अधिलाभ कहते है।
2.	सूत्र	सामान्य लाभ = विनियोजित पूंजी × लाभ की अर्जित दर / 100	अधिलाभ = वास्तविक लाभ − सामान्य लाभ
3.	ख्याति	सामान्य लाभ अर्जित करने वाले व्यापार में ख्याति का अभाव पाया जाता है।	अधिलाभ अर्जित करने वाले व्यापार में ख्याति पाई जाती है।

प्रश्न 10. त्याग अनुपात और लाभ अनुपात में अन्तर बताइए।

उत्तर- त्याग के अनुपात तथा नफे के अनुपात में अंतर निम्नलिखित है-

क्र.	अन्तर का आधार	त्याग का अनुपात	नफे का अनुपात
1.	अर्थ	यह वह अनुपात है जिसमें विद्यमान साझेदार एक-दूसरे के लिए या नये साझेदार के लिये अपने भाग का त्याग करते हैं।	यह वह अनुपात है जिसमें निवृत्त/मृतक साझेदार का भाग विद्यमान साझेदार लेते हैं। यदि अनुपात में परस्पर परिवर्तन करना हो तो विद्यमान साझेदार को भी एक-दूसरे से नफा हो सकता है।
2.	प्रयोग	इसका प्रयोग नये साझेदार द्वारा लाई गई ख्याति को पुराने साझेदारों में बांटने के लिये किया जाता है।	इसका प्रयोग निवृत्त/मृतक साझेदार को विद्यमान साझेदारों द्वारा की जाने वाली क्षतिपूर्ति की राशि वहन करने के लिए किया जाता है।
3.	गणना की रीति	इसकी गणना पुराने साझेदार के पुराने अनुपात में से उनका नया अनुपात घटाकर की जाती है।	इसकी गणना व्यवसाय जारी रखने वाले साझेदार के नये अनुपात में से उनका पुराना अनुपात घटाकर की जाती है।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 11. पुनर्मूल्यांकन हेतु की जाने वाली आवश्यक नकल प्रविष्टियाँ कीजिए।

उत्तर-

क्र.	पुनर्मूल्यांकन	Journal Entries	
(1)	सम्पत्ति का मूल्य बढ़ जाने पर (Increase in the value of Assets)	Assets a/c To Revaluation a/c (Increase in the value of Assets)	Dr.
(2)	सम्पत्ति का मूल्य घट जाने पर (Decrease in the value of Asset)	Revolution a/c To Asset a/c (Decrease in the value of Asset)	Dr.
(3)	दायित्व का मूल्य बढ़ जाने पर (Increase in liability)	Liabilities a/c To Liabilities a/c (Increase in liabilities)	Dr.

4	दायित्व का मूल्य घट जाने पर (Decrease in liability)	Liabilities a/c To Revaluation a/c (Decrease in liability)	Dr.
5	सम्पत्ति का चिट्ठे में न होना। (Asset not shown in balance sheet)	Revaluation a/c To Revaluation a/c (Asset taken into account being omitted)	Dr.
6	दायित्व का चिट्ठे में न होना। (Liability not shown in Balance Sheet)	Asset a/c To Unrecorded Liability a/c (Unrecorded liability brought into account)	Dr.

प्रश्न 12. ख्याति उत्पन्न होने के कारण या ख्याति को निर्धारित करने वाले घटक लिखिए।

उत्तर- व्यापार की ख्याति निम्नांकित बातों के द्वारा निर्धारित होती है-

1. फर्म की उपयुक्त स्थिति- व्यवसाय ऐसे स्थान पर स्थापित है, जहाँ ग्राहक अधिक संख्या में आते हों तो ऐसे व्यवसाय की बिक्री अधिक होगी।

2. व्यापार के स्वामी की व्यवहारकुशलता- ग्राहकों से मधुर व्यवहार के कारण भी लाभार्जन शक्ति बढ़ती है, जिससे ख्याति निर्मित होती है।

3. उचित मूल्य नीति- व्यापारी माल का उचित मूल्य ग्राहकों से लेता है तो वह ग्राहकों को निरन्तर अपनी ओर आकर्षित करेगा।

4. माल की गुणवत्ता- माल की गुणवत्ता यदि श्रेष्ठ है तो ग्राहक आकर्षित होगा। व्यवसाय ख्याति अर्जित करेगा।

5. विक्रय के बाद सेवा- ग्राहकों को उधार माल क्रय करने की सुविधा, माल में त्रुटि होने पर वापसी की ग्यारन्टी तथा माल की घर पहुँच सेवा प्रदान करने वाले व्यवसाय को ग्राहक पसंद करते हैं, जिससे भी ख्याति प्राप्त होती है।

प्रश्न 13. ख्याति की गणना विधियों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

अथवा

ख्याति की गणना करने की विधियाँ कौन-कौन सी हैं?

उत्तर- ख्याति का मूल्यांकन करना एक कठिन कार्य है। सामान्यतः ख्याति राशि की गणना निम्नलिखित विधियों से की जाती है-

1. औसत लाभ पर आधारित विधि- इस विधि के अनुसार सर्वप्रथम गत कुछ वर्षों का औसत लाभ ज्ञात किया जाता है। तत्पश्चात् विलेख में उल्लेखित नियम अनुसार इस प्राप्त औसत लाभ में एक निश्चित संख्या का गुणा करने के बाद प्राप्त राशि को ही ख्याति का मूल्य माना जाता है।

2. अधिलाभ आधार विधि- अधिलाभ से आशय अतिरिक्त लाभ से है। जब कोई फर्म पूँजी पर अन्य फर्मों से अधिक लाभ अर्जित करती है तो यह अतिरिक्त लाभ ही अधिलाभ है। इस विधि के अनुसार सर्वप्रथम अधिलाभ ज्ञात किया जाता है तथा इस अधिलाभ को विलेख में वर्णित संख्या से गुणा करके ख्याति राशि ज्ञात की जाती है।

3. पूँजीकरण विधि- इस विधि में यह मान लिया जाता है कि फर्म द्वारा, व्यवसाय में लगाई गई पूँजी सामान्य लाभ अर्जित करती है, यदि फर्म को अधिक लाभ हो रहा है तो वह अतिरिक्त पूँजी जो इस अतिरिक्त लाभ को प्राप्त करने हेतु लगायी जाती है, फर्म की ख्याति का मूल्य है।

प्रश्न 14. औसत लाभ तथा अधिलाभ में अन्तर बताइए।

उत्तर- औसत लाभ तथा अधिलाभ में निम्नलिखित अन्तर हैं -

क्र.	अन्तर का आधार	औसत लाभ	अधिलाभ
1.	आशय	कुछ वर्षों के वास्तविक लाभों का सरल समान्तर माध्य औसत लाभ कहलाता है।	अधिलाभ उस आधिक्य का प्रतिनिधित्व करता है, जो वास्तविक लाभ का सामान्य लाभ पर हो। सामान्य लाभ विनियोजित पूँजी पर निर्दिष्ट प्रतिशत होता है।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

2.	औसत विनियोजित पूँजी	औसत लाभ की गणना करते समय औसत विनियोजित पूँजी को ध्यान में नहीं रखा जाता है।	सामान्य लाभ की गणना के लिये औसत विनियोजित पूँजी को ध्यान में रखा जाता है, क्योंकि अधिलाभ औसत लाभ पर एक प्रकार का आधिक्य है।
3.	प्रत्याय की सामान्य दर	औसत लाभों की गणना के लिये प्रत्यय की सामान्य दर ध्यान में नहीं रखी जाती है।	अधिलाभ की गणना के लिये प्रत्यय की सामान्य दर को ध्यान में रखा जाता है, क्योंकि इसी से सामान्य लाभ की गणना की जाती है।

प्रश्न 15. फर्म के पुनर्गठन की विभिन्न दशाएँ समझाइए।

उत्तर– साझेदारी का पुनर्गठन निम्नांकित में से किसी भी ढंग से हो सकता है–

(1) विद्यमान साझेदारों के लाभालाभ अनुपात में परस्पर परिवर्तन करके। (2) नये साझेदारों के लाभालाभ अनुपात में परस्पर परिवर्तन करके। (3) विद्यमान साझेदार की मृत्यु (Death) पर। (4) दो फर्मों के एकीकरण की दशा में। (5) दो फर्मों के एकीकरण की दशा में।

उत्तर–साझेदारी फर्म के पुनर्गठन के ढंग निम्न प्रकार हैं–

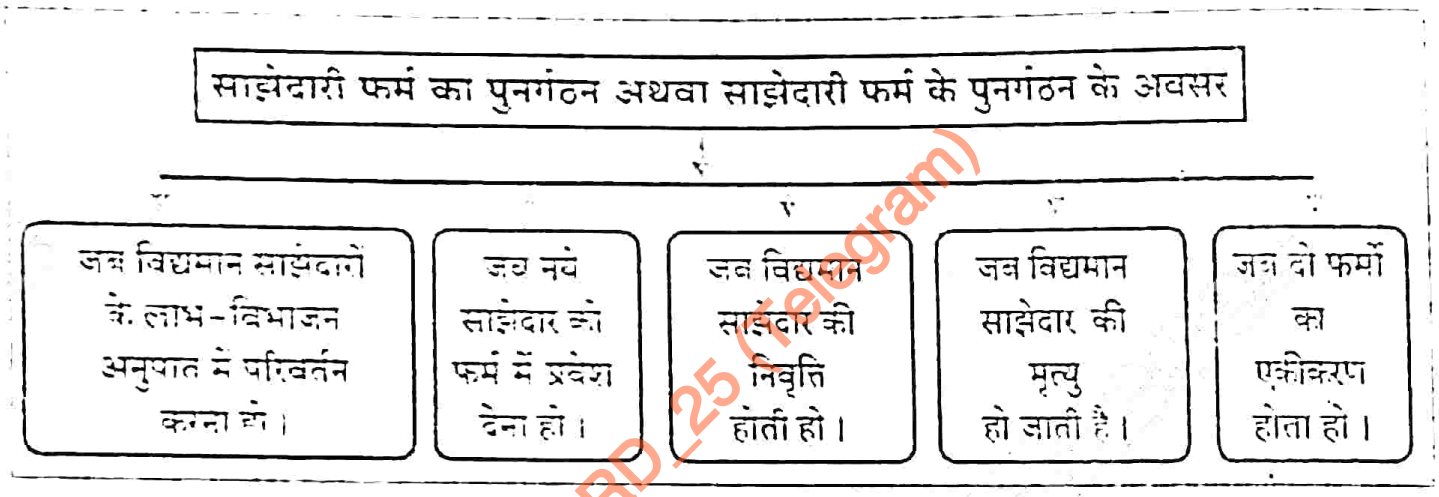

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 16. त्याग अनुपात और लाभ अनुपात में अन्तर बताइए।

उत्तर– त्याग के अनुपात तथा नफे के अनुपात में अन्तर निम्नलिखित है–

क्र.	अन्तर का आधार	त्याग का अनुपात	नफे का अनुपात
1.	अर्थ	यह वह अनुपात है जिसमें विद्यमान साझेदार एक-दूसरे के लिए या नये साझेदार के लिये अपने भाग का त्याग करते हैं।	यह वह अनुपात है जिसमें निवृत्त/मृतक साझेदार का भाग विद्यमान साझेदार लेते हैं। यदि अनुपात में परस्पर परिवर्तन करना हो तो विद्यमान साझेदार को भी एक-दूसरे से नफा हो सकता है।
2.	प्रयोग	इसका प्रयोग नये साझेदार द्वारा लाई गई ख्याति को पुराने साझेदारों में बाँटने के लिये किया जाता है।	इसका प्रयोग निवृत्त/मृतक साझेदार को विद्यमान साझेदारों द्वारा की जाने वाली क्षतिपूर्ति की राशि वहन करने के लिए किया जाता है।
3.	गणना की रीति	इसकी गणना पुराने साझेदार के पुराने अनुपात में उनका नया अनुपात घटाकर की जाती है।	इसकी गणना व्यवसाय जारी रखने वाले साझेदार के नये अनुपात में से उनका पुराना अनुपात घटाकर की जाती है।
4.	पूँजी पर प्रभाव	पुराने साझेदारों के पूँजी खाते त्याग के अनुपात में जमा (Credit) किये जाते हैं।	व्यवसाय जारी रखने वाले साझेदारों के पूँजी खाते या नफा प्राप्त करने वाले साझेदारों के पूँजी खाते नफे के अनुपात में नामे (Dr.) किये जाते हैं।

प्रश्न 17. ख्याति के मूल्यांकन की आवश्यकता–मूल्यांकन किन दशाओं में आवश्यक है?

उत्तर– ख्याति का मूल्यांकन निम्नलिखित दशाओं में आवश्यक है–

- अनुपात परिवर्तन
- नये साझेदार का प्रवेश
- विद्यमान साझेदार की निवृत्ति
- मृत्यु
- व्यवसाय की बिक्री
- फर्मों का एकीकरण

(1) जब साझेदार अपने विद्यमान पारस्परिक लाभ–विभाजन अनुपात में परिवर्तन करने का निर्णय करते हैं।

(2) जब फर्म में किसी नये साझेदार को प्रवेश दिया जाता है।

(3) जब कोई विद्यमान साझेदार फर्म से अवकाश ग्रहण करता है।

(4) जब किसी विद्यमान साझेदार की मृत्यु हो जाती है।

(5) जब किसी चालू व्यावसायिक उपक्रम को फर्म का व्यवसाय बेचने के लिये फर्म का विघटन कर दिया जाता है।

(6) जब दो फर्मों के एकीकरण (Amalgamation) का निर्णय किया जाता है।

प्रश्न 18. ख्याति के संबंध में लेखांकन प्रमाप क्या है ? समझाइए।

उत्तर– ख्याति का लेखा करने के संबंध में चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स ऑफ इण्डिया द्वारा निम्नलिखित नवीन निर्देश जारी किये गये हैं, जिनका पालन करना आवश्यक है–

लेखांकन प्रमाप 26 के अनुसार लेखा पुस्तकों में ख्याति का लेखा तभी करना चाहिए, जब वह नकद लाई गई हो। नये साझेदार के प्रवेश, विद्यमान साझेदार की निवृत्ति, मृत्यु या लाभ–विभाजन के अनुपात में परिवर्तन आदि की दशा में ख्याति का निर्माण नहीं करना चाहिए, क्योंकि ऐसी दशा में इसके लिये कोई प्रतिफल का भुगतान नहीं किया जाता है। जब कोई साझेदार फर्म में पूँजी के साथ अपने भाग की ख्याति की राशि नकद लाता है तो इसे प्रीमियम के रूप में प्राप्त किया जायगा तथा पुराने साझेदारों के पूँजी खातों में उनके त्याग के अनुपात में क्रेडिट किया जायगा।

जब ख्याति का मूल्यांकन फर्म के गठन में परिवर्तन की दशा में किसी साझेदार के प्रवेश, अवकाश ग्रहण, मृत्यु, लाभ–विभाजन अनुपात में परिवर्तन आदि किया जाय तो इसका लेखा पुस्तकों में नहीं करना चाहिये क्योंकि यह स्वाभाविक ख्याति (Inherent Goodwill) होती है। इसको साझेदारों के पूँजी खातों में समायोजित करना चाहिए। अर्थात् नये साझेदार के ख्याति के भाग से उसका पूँजी खाता डेबिट करके पुराने साझेदारों के पूँजी खाते में उनके त्याग के अनुपात में क्रेडिट कर देना चाहिये।

प्रश्न 19. एक साझेदारी फर्म में नये साझेदार के प्रवेश की आवश्यकता कब पड़ती है।

उत्तर– नये साझेदार को फर्म में प्रवेश देने के निम्नांकित उद्देश्य होते हैं–

1. पूँजी की पूर्ति– जब फर्म के व्यवसाय का विस्तार होता है तो अधिक पूँजी की जरूरत महसूस होती है। नये साझेदार के प्रवेश से इसकी पूर्ति की जा सकती है।

2. विशिष्ट योग्यता– यदि विद्यमान साझेदारों को विशिष्ट योग्यता वाले व्यक्ति की सेवाओं की जरूरत हो तो ऐसे व्यक्ति को फर्म में साझेदार के रूप में प्रवेश दिया जा सकता है।

3. प्रतिस्पर्द्धा समाप्त करना– जब कोई व्यक्ति फर्म से प्रतिस्पर्द्धा करता हो और इस कारण फर्म को हानि हो है तो ऐसे व्यक्ति को फर्म में साझेदार बनाकर प्रतिस्पर्द्धा समाप्त करने का प्रयोग किया जाता है।

4. व्यापार की उचित देखभाल– कभी–कभी व्यापार की देख–देख के लिए अतिरिक्त कर्मचारियों की नियुक्ति के स्थान पर नये व्यक्ति को साझेदार बनाना उपयुक्त समझा जाता है।

प्रश्न 20. अभिषेक और अभिनव एक फर्म में बराबर के साझेदार हैं। उन्होंने अरविंद को 1/3 भाग के लिए साझेदार बनाया, जो पूँजी के 40,000रु. देता है किन्तु अपने हिस्से की 12,000 रु. ख्याति लाने में असमर्थ हैं। अरविंद के प्रवेश पर आवश्यक नकल प्रविष्टियाँ कीजिए।

हल– **Journal Entries**

1. रोकड़ खाता Dr.			40,000
To अरविंद का पूँजी खाता		40,000	
(पूँजी हेतु राशि लाई गई)			
2. ख्याति खाता Dr.			12,000
To अरविंद का पूँजी खाता		12,000	
(ख्याति का समायोजन)			

प्रश्न 21. अ और ब 3 : 2 के अनुपात में लाभ–हानि बाँटते हैं। वे 'स' को 1/4 भाग के लिए साझेदारी में प्रवेश देते हैं। उनके लाभ/हानि विभाजन का नया अनुपात ज्ञात कीजिए।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

हल– पुराना अनुपात = अ : ब

$$3 \quad 1$$
$$4 \quad 4$$

नया अनुपात = स का हिस्सा = $\frac{1}{4}$

$$\frac{1}{1} - \frac{1}{4} = \frac{3}{4}$$

अ = $\frac{3}{4}$ का $\frac{3}{4} = \frac{9}{16}$

ब = $\frac{3}{4}$ का $\frac{1}{4} = \frac{3}{16}$

स = $\frac{1}{4}$ का $\frac{4}{4} = \frac{4}{16}$

उत्तर– $\frac{9}{16} : \frac{3}{16} : \frac{4}{16} = 9 : 3 : 4$

प्रश्न 22. अजय तथा विजय 3 : 2 के अनुपात में लाभ बाँटते है। उन्होंने संजय को 1/5 भाग का साझेदार बनाया, जो अपना हिस्सा अजय तथा विजय से बराबर प्राप्त करता है। नया अनुपात ज्ञात कीजिए।

हल– संजय द्वारा प्राप्त अनुपात = $\frac{1}{5} \cdot \frac{1}{2} = \frac{1}{10}$

(अजय/विजय से)

अजय $\frac{3}{5} - \frac{1}{10} = \frac{6-1}{10} = \frac{5}{10}$

विजय $\frac{2}{5} - \frac{1}{10} = \frac{4-1}{10} = \frac{3}{10}$

संजय $\frac{1}{5} \cdot \frac{2}{2} = \frac{2}{10}$

नया अनुपात $\frac{5}{10} : \frac{3}{10} : \frac{2}{10}$

उत्तर– 5 : 3 : 2

प्रश्न 23. सचिन और विराज 2 : 1 के अनुपात में साझेदार हैं। उनकी पूँजी क्रमश: 40,000 रु. एवं 20,000 रु. है उन्होंने 1 जनवरी 2021 को धोनी को 1/4 के लिए साझेदार बनाया जिसे वह सचिन और विराट से 3 : 2 के अनुपात में प्राप्त करता है। धोनी 30,000 रु. पूँजी तथा 15,000 रु. ख्याति के लिए लाता है। आवश्यक नकल प्रविष्टियाँ कीजिए।

हल (Solution) :

Journal Entries

Date	Particulars	LF	Dr. Amt.	Cr. Amt.
1.	गोकड खाता Dr.		45,000	
	To धोनी का पूँजी खाता			30,000
	To ख्याति खाता			15,000
	(राशि नगद लाई गई)			
2.	ख्याति खाता Dr.		15,000	
	To सचिन का पूँजी खाता			9,000
	To विराट का पूँजी खाता			6,000
	(ख्याति का समायोजन)			

प्रश्न 24. मोनू और सोनू 2 : 1 के अनुपात में साझेदार हैं। फर्म की सम्पत्ति और दायित्व हैं– देनदार 2,000 रु., स्कंध 5,000 रु., भवन 8,000 रु. और लेनदार 8,000। टीनू के प्रवेश पर निश्चित हुआ कि भवन के मूल्य में 1,100 रु. की वृद्धि की जाए देनदारों पर 3% डूबत ऋण संचिति की जाए लेनदारों पर 2% कटौती का प्रावधान किया जाए। स्कंध का मूल्य 5,800 रु. आंका गया। पुनर्मूल्यांकन खाता बनाइए।

हल–

पूनर्मुल्यांकन खाता

विवरण	राशि	विवरण	राशि
देनदार संचिती	60	भवन	1,100
		कटौती संचय (लेनदार)	160

@MP_BOARD_25 (Telegram)

पूंजी खाते–				
सोनू –	1,333	2,000	स्कंध	800
रोनू –	667			
		2060		2060

प्रश्न 25. लव और कुश एक फर्म में साझेदार हैं जो लाभ/हानि को 3 : 2 के अनुपात में बाँटते हैं वे भविष्य में लाभ/हानि को समान अनुपात में बाँटने का निश्चय करते हैं इस उद्देश्य हेतु ख्याति का मूल्यांकन 1,20,000 रु. किया गया। उपरोक्त व्यवस्था के लिए आवश्यक नकल प्रविष्टि कीजिए।

हल (Solution) :

Journal Entries

Date	Particulars		LF	Dr. Amt.	Cr. Amt.
1.	Kusha Capital A/c	Dr.		12,000	
	To Love Capital A/c				12,000
	(Adjustment of goodwill)				

New Ratio L $\frac{3}{5}-\frac{1}{2}=\frac{6-5}{10}=-\frac{1}{10}$ त्याग (sacrifice)

K $\frac{2}{5}-\frac{1}{2}=\frac{4-5}{10}=+\frac{1}{10}$ लाभ (gain)

प्रश्न 26. अमर, अकबर और एंथोनी एक फर्म में साझेदार हैं जो लाभ/हानि को 4 : 3 : 1 को अनुपात में बाँटते हैं। अप्रैल 2021 को उन्होंने लाभ/हानि को 5 : 4 : 3 के अनुपात में बाँटने का निर्णय लिया उस स्थिति को लाभ–हानि खाते में 1,20,000 रु. व सामान्य संचय खाते में 60,000 रु. का शेष था। संचय एवं लाभ–हानि खाते को बन्द करने के बजाय समायोजन प्रविष्टि करने का निश्चय किया गया। आवश्यक नकल प्रविष्टि कीजिए।

हल (Solution) :

Journal Entries

Date	Particulars		LF	Dr. Amt.	Cr. Amt.
	अमर का पूँजी खाता	Dr.		15,000	
	अकबर का पूँजी खाता			7,500	
	To एंथोनी का पूँजी खाता				22,500
	(लाभ–हानि एवं संचय का समायोजन)				

प्रश्न 27. अरूण और वरूण साझेदार है जिनकी पूँजी क्रमश: 8,000 रु. और 4,000 रु. है। वे तरूण को इस शर्त पर साझेदार बनाते हैं कि वो अपने भाग की ख्याति की प्रीमियम 1,500 रु. और अपने हिस्से की यथेष्ट पूँजी देगा जो समस्त साझेदारों की संयुक्त पूँजी की 1/3 होगी। तरूण की पूँजी ज्ञात कीजिए।

हल– तरूण की पूँजी = ?

अरूण की पूँजी = 8,000 + 750 = 8,750

वरूण की पूँजी = 4,000 + 750 = 4,750

संयुक्त पूँजी = 13,500

वरूण की पूँजी = $\frac{1}{2}\times\frac{13,500}{1}$ = 6,750

उत्तर– 6,750

@MP BOARD 25 (Telegram)

26 पटना बैंक (2023)

प्रश्न 28. एक फर्म का औसत लाभ 66,000 है और पूँजीकरण की दर 12% है। फर्म की विविध सम्पत्तियाँ और दायित्व क्रमशः 7,50,000 रु. व 3,50,000 रु. है। ख्याति की गणना कीजिए।

हल–

ख्याति = पूँजी = सम्पत्ति - दायित्व

= 7,50,000 - 3,50,000

पूँजी = 4,00,000

$$\text{पूँजीकरण विधी} = \frac{3,50,000 \times 12}{100} = 40,000$$

औसत लाभ - सामान्य लाभ = अधिलाभ

66,000 - 40,000 = 18,000

$$\frac{18,000 \times 100}{12} \quad 1 \text{ ख्याति} = 1,50,000$$

प्रश्न 29. एक फर्म की पूँजी 6,00,000 रु. है, फर्म का औसत लाभ 60,000 है ऐसे व्यापार पर 7.50% आय अपेक्षित है। अधिलाभ के पूँजीकरण मूल्य के आधार पर ख्याति का मूल्य ज्ञात कीजिए।

हल (Solution) :

$$\text{ख्याति} = \frac{6,00,000 \times 7.5}{100}$$

सामान्य लाभ = 45,000

औसत लाभ - सामान्य लाभ = अधिलाभ

60,000 - 45,000 = 15,000

$$\text{पूँजीकरण} = \frac{15,000 \times 100}{7.5} = 2,00,000$$

ख्याति = 2,00,000

प्रश्न 30. बसंत और विष्णु का निम्नलिखित चिट्ठा है–

दायित्व		राशि रु. में	सम्पत्ति	राशि रु. में
पूंजी–			भवन	25,000
बसंत	12,000		उपस्कर	4,000
विष्णु	13,000	25,000	देनदार	12,000
लेनदार		21,000	बैंक शेष	15,000
देय विपत्र		15,000	रोकड़	5,000
		61,000		61,000

निम्न शर्तों पर उन्होंने विवेक को साझेदारी में प्रवेश दिया– (1) विवेक 1/4 भाग के लिए 15,000 रु. पूँजी के लाएगा (2) ख्याति का मूल्यांकन 14,000 रु. किया गया (3) देनदार पर 5% संचिति का निर्माण किया जाएगा (4) भवन एवं उपस्कर पर 5% ह्रास काटा जाएगा। पुनर्मूल्यांकन खाता एवं साझेदारों का पूँजी खाता बनाइए।

हल (Solution) :

पुनर्मूल्यांकन खाता

देनदार संचिती		600	पूँजी खाता		
भवन–	1,250		बसंत	1,025	
उपस्कर–	200		विष्णु	1,025	2,050
		2,050			2,050

@MP_BOARD_25 (Telegram)

पूंजी खाता

विवरण	बसंत ₹	किरण ₹	विवेक ₹	विवरण	बसंत ₹	किरण ₹	विवेक ₹
Goodwill	-	-	3,500	Op Bal. Cash	1,200	13,000	-
Revolution A/c	1,025	1,025	-	Vivek capital	1,750	1,750	-
C/Bal.	12,725	13,725	11,500				
	13,750	14,750	15,000		13,750	14,750	15,000

इकाई-4 साझेदार की निवृत्ति एवं मृत्यु

अंकवार प्रश्नों की संख्या				कुल अंक
वस्तुनिष्ठ प्रश्नों (1 अंक)	अति लघुउत्तरीय प्रश्न (2 अंक)	लघुउत्तरीय प्रश्न (3 अंक)	विश्लेषणात्मक प्रश्न (4 अंक)	
2	1	-	1	8

@MP_BOARD_25 (Telegram)

■ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर :

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए-

(1) नये अनुपात में से पुराना अनुपात घटाने पर प्राप्त अनुपात कहलाता है-
(a) त्याग अनुपात (b) समान अनुपात
(c) लाभ का अनुपात (d) हानि का अनुपात

(2) मृत साझेदार के उत्तराधिकारी को देय राशि का भुगतान न करने पर कितनी वार्षिक दर से ब्याज देना पड़ता है-
(a) 10 प्रतिशत (b) 6 प्रतिशत
(c) 5 प्रतिशत (d) 8 प्रतिशत

(3) साझेदार की निवृत्ति के कारण है-
(a) साझेदार की वृद्धावस्था
(b) साझेदार का दिवालिया हो जाना
(c) परस्पर मतभेद हो जाना
(d) उपरोक्त सभी

(4) आन्तरिक कोष इनमें से नहीं है-
(a) सामान्य संचय (b) पूंजी संचय
(c) कर्मचारी दुर्घटना कोष
(d) कर्मचारियों का बचत खाता

(5) अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार को पाने का अधिकार होता है-
(a) ख्याति का भाग
(b) अविभाजित लाभ में हिस्सा
(c) पूंजी पर ब्याज (d) उपरोक्त सभी

(6) अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार को उसकी देय राशि के भुगतान की विधि है-
(a) एक (b) दो
(c) तीन (d) चार

(7) मृत साझेदार के उत्तराधिकारी को देय राशि का भुगतान कौन-सी विधि द्वारा नहीं किया जा सकता है-
(a) एक मुश्त (b) किश्तों में
(c) वार्षिक वृत्ति
(d) देय राशि के विपत्र स्वीकार करना

(8) मृत साझेदार के पूंजी खाते में नाम नहीं की जाती है-
(a) आहरण की राशि (b) चालू खाते का नाम शेष
(c) आहरण पर ब्याज की राशि
(d) संचय का भाग

(9) बाहरी दायित्व कोष नहीं है-
(a) मूल्य ह्रास कोष (b) स्टाफ पेंशन कोष
(c) कर्मचारी का बचत खाता
(d) आकस्मिकता कोष

(10) संचय की सम्पूर्ण राशि को वितरित करने पर-
(a) संचय खाते को Dr. (b) संचय खाते को Cr.
(c) साझेदारों की पूंजी खाते को Dr.
(d) उपरोक्त कोई नहीं

(11A) विद्यमान ख्याति को अपलिखित करना है–
(a) समस्त साझेदारों के पूँजी खाते नामे
(b) समस्त साझेदारों के पूँजी खाते को जमा
(c) खाते को नामे
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

43. देय राशि का किश्तों में भुगतान पर कौन सा खाता खोला जाता–
(a) साझेदार का ऋण खाता (b) साझेदार का पूँजी खाता
(c) साझेदार का पूँजी खाता (d) उपरोक्त सभी

(12) मृत साझेदार को उत्तराधिकारी को देय राशि प्राप्त होती है–
(a) मृत साझेदार की पूँजी (b) उसके हिस्से की ख्याति
(c) उसके चालू खाते का जमा शेष
(d) उपरोक्त सभी

(13) अविभाजित लाभ का विभाजन करते समय कौन सा खाता नाम किया जाता है–
(a) लाभ-हानि खातों के नाम
(b) समस्त साझेदारों के पूँजी खाते नाम
(c) समस्त साझेदारों के चालू खाते नाम
(d) उपरोक्त सभी

(14) मृत साझेदार को उत्तराधिकारी को देय राशि प्राप्त होती है–
(a) मृत साझेदार की पूँजी (b) उसके हिस्से की ख्याति
(c) उसके चालू खाते का जमा शेष
(d) उपरोक्त सभी

(15) अविभाजनीय कोष कौन–सा होता है–
(a) मूल्य ह्रास कोष (b) पूँजी संचय कोष
(c) बीमा कोष (d) उच्चावचन कोष

(16) अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार को देय राशि का निर्धारण करने के लिए उसे प्राप्त होने वाली राशियाँ कौन से खाते में जमा की जाती है–
(a) पूँजी खाते में (b) चालू खाते में
(c) लाभ-हानि खाते में (d) उपरोक्त से कोई नहीं

(17) समझौते के अनुसार अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार को उसके ऋण पर ब्याज देने के स्थान पर लाभ का कुछ अंश दिया जाता है ऐसी दशा में–
(a) ब्याज की प्रविष्टि की जाती है
(b) ब्याज की प्रविष्टि नहीं की जाती है
(c) लाभांश की प्रविष्टि की जाती है
(d) उपरोक्त से कोई नहीं

(18) अवकाश ग्रहण साझेदार को वार्षिक द्वारा भुगतान करने पर कौन–सा खाता खोला जाता है–
(a) वार्षिक उपांत खाता
(b) पूँजी खाता
(c) चालू खाता
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

(19) सम्पर्ण मूल्य किसका हिस्सा होता है–
(a) बीमित मूल्य का होता है
(b) बीमित मूल्य का हिस्सा नहीं होता है
(c) (a) एवं (b)
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

(20) A, B और C 4 : 3 : 1 के साझेदार है। B ने 8,100 रु. में अपना भाग A और B को 3,600 रु. और 4,500 रु. में बेचकर अवकाश ग्रहण किया A और C का लाभ प्राप्ति का अनुपात होगा–
(a) 5 : 4 (b) 6 : 3
(c) 4 : 5 (d) 3 : 6

(21) नन्दू, चन्दू और मंदू साझेदार है, जो 5 : 3 : 2 के अनुपात में लाभ–हानि बाँटते हैं। नन्दू की मृत्यु हो जाने पर चन्दु और मन्दु उसके अनुपात का 1/3 और 2/3 लेने को सहमत है। उनका नया अनुपात होगा–
(a) 7 : 8 (b) 8 : 7
(c) 9 : 6 (d) 10 : 5

(22) X, Y तथा Z साझेदार है जो 1/2 : 1/4 : 1/4 के अनुपात में लाभ बाँटते है। Y के अवकाश ग्रहण करने पर नया अनुपात होगा–
(a) 1 : 1 (b) 1 : 2
(c) 1/4 : 1/2 (d) 2 : 1

(23) A, B तथा C लाभ–हानि को 2 : 3 : 4 के अनुपात में बाँटते हुए साझेदार हैं। A अवकाश ग्रहण करता है तथा B और C भविष्य में 3 : 4 के अनुपात में लाभ बाँटने हेतु सहमत हैं। उसका लाभ प्राप्ति अनुपात होगा–
(a) 3 : 4 (b) 2 : 3
(c) 4 : 3 (d) 1 : 1

उत्तर– (1) (c), (2) (b), (3) (d), (4) (d), (5) (d), (6) (d), (7) (d), (8) (d), (9) (a), (10) (a), (11) (b), (11A) (a), (12) (d) (13) (a), (14) (d), (15) (b), (16) (a), (17) (a), (18) (a), (19) (a), (20) (c), (21) (a), (22) (d), (23) (d).

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(1) जीवन बीमा संचय कोष को ..... के पूँजी खाते में हस्तांतरित करेंगे।

(2) नफे के अनुपात से शेष साझेदारों के अनुपात में ..... होती है।

(3) अवकाश ग्रहण के समय पूर्नमूल्यांकन से होने वाली हानि सभी साझेदारो के पूँजी खाते के ..... में लिखी जाती है।

(4) साझेदार के अवकाश पर यदि ख्याति खाता खोला गया हो तो उसे अपलिखित करने के लिये शेष साझेदारों के पूँजी खाते ..... अनुपात में ..... किये जाएगे।

उत्तर– (1) साझेदारो, (2) वृद्धि, (3) नाम, (4) नये, जमा।

प्रश्न 3. सही जोड़ी बनाइये–

(A)	(B)
(1) फर्म से अवकाश लेना	(a) साझेदार की मृत्यु पर
(2) पुराने अनुपात से नया अनुपात अधिक	(b) मृत साझेदार का उत्तराधिकारी
(3) संचिति की राशि का भाग	(c) निवर्तन
(4) कानूनी प्रतिनिधि को भुगतान	(d) लाभ प्राप्ति का अनुपात

उत्तर– (1) (c), (2) (d), (3) (b), (4) (a)।

प्रश्न 4. सत्य/असत्य लिखिए–

(1) A, B और C क्रमश 3 : 2 : 1 के साझेदार है B निवृत होता है। A तथा C का नया अनुपात 3 : 2 होगा।

(2) नया अनुपात – पुराना अनुपात = लाभ प्राप्ति अनुपात।

(3) ऐच्छिक साझेदारी के अनुसार एक साझेदार शेष सभी साझेदारों की इच्छा से निवृत हो सकता है।

(4) जब निवृत मान साझेदार को देय राशि वार्षिक द्वारा चुकायी जातीं है तो उसका ऋण खाता रखा जाता है।

(5) संयुक्त जीवन बीमा पालिसी का समर्पण मूल्य नहीं होता है।

(6) ख्याति की राशि पर निवृत्त साझेदार का कोई अधिकार नहीं होता है।

(7) A, B तथा C क्रमश 3 : 2 : 1 के अनुपात में साझेदार हैं। B निवृत्त होता हैं और A और C का नया अनुपात 3 : 2 होगा।

(8) लाभ प्राप्ति अनुपात = नया अनुपात – पुराना अनुपात।

(9) साझेदार के अवकाश पर ख्याति नवीन चिट्ठे में दिखाई जावेगी।

उत्तर– (1) असत्य, (2) सत्य, (3) सत्य, (4) असत्य, (5) असत्य, (6) असत्य, (7) सत्य, (8) सत्य, (9) सत्य।

प्रश्न 5. एक शब्द/वाक्य में उत्तर लिखिए–

(1) नये और पुराने अनुपात का अन्तर क्या कहलाता है?

(2) जब एक साझेदार अपने को साझेदारी से अलग करता है तो ऐसी स्थिति जानी जाती है।

(3) मृत साझेदार की देय राशि का भुगतान किसे किया जाता है।

(4) साझेदार की निवृत्त के किसी एक कारण को लिखिए।

(5) साझेदार को वार्षिक द्वारा भुगतान करने पर कौन सा खाता खोला जाता है।

(6) साझेदार के निवृत होने पर हिसाब की कोई एक समस्या बताइए।

(7) बीमित मूल्य क्या है?

(8) समर्पण मूल्य क्या है?

(9) वार्षिक प्रीमियम क्या है?

(10) साझेदार के निवृत होने का कारण बताइए।

(11) साझेदार के निवृत होने पर हिसाब की कोई एक समस्या लिखिए।

(12) अविभाजनीय कोष क्या होता है?

(13) नये चिट्ठे में कौन सा कोष नहीं दर्शाया जावेगा?

उत्तर– (1) नफे का अनुपात, (2) निवृत्ति, (3) उत्तराधिकारी को, (4) अधिक उम्र के कारण, (5) वार्षिकी उचन्त, (6) लाभ का विभाजन, (7) बीमा पॉलिसी का क्रय मुल्य, (8) प्राप्त राशि, (9) प्रतिवर्ष देय राशि, (10) अस्वस्थता, (11) लाभ का विभाजन, (12) जिसको नहीं बाँटा जाता, कर्मचारी को, (13) संचय कोष।

◘ लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर :

प्रश्न 1. वे कौन–सी परिस्थितियाँ हैं, जिनमें कोई साझेदार फर्म से अवकाश ग्रहण कर सकता है? कोई पाँच कारण बताइए।

अथवा

किन–किन दशाओं में एक साझेदार फर्म से अलग हो सकता है?

उत्तर– निम्नलिखित परिस्थितियों में कोई साझेदार फर्म से अवकाश ग्रहण कर सकता है–

(1) वृद्धावस्था के कारण (2) अस्वस्थता अथवा असमर्थता होने पर (3) यदि साझेदारों के बीच आपसी मतभेद उत्पन्न हो

@MP_BOARD_25 (Telegram)

4. साझेदारों द्वारा यदि कोई विधि विरुद्ध कार्य किया जा रहा हो।
5. यदि फर्म का व्यवसाय लगातार हानि में चल रहा हो।

प्रश्न 2. फर्म के समापन पर हिसाब के निपटारा क्या आशय है?

उत्तर– साझेदारों के बीच किसी विपरीत ठहराव के अभाव में, किसी फर्म के विघटन के बाद हिसाब-किताब का निपटारा धारा 48 के अनुसार निम्न प्रकार किया जायेगा–

1. **हानियों का भुगतान** (Payment of losses)- फर्म की समस्त हानियाँ (किसी साझेदार के हिस्से की पूँजी की कमी सहित) सर्वप्रथम लाभों में से, तत्पश्चात् पूँजी में से और अन्त में आवश्यकता पड़ने पर साझेदारों द्वारा व्यक्तिगत रूप से उनके लाभ-हानि विभाजन अनुपात में नकद लाकर पूरी की जाएगी।

2. **फर्म की सम्पत्तियों का उपयोग** (Utilisation of Firm's Assets)- फर्म की सम्पत्तियों से प्राप्त धन तथा साझेदारों द्वारा अपनी पूँजी की कमी के रूप में लाई गई राशियों का वितरण निम्नांकित क्रम में किया जाएगा।

(i) फर्म के बाह्य दायित्वों के भुगतान में।

(ii) फर्म को साझेदार द्वारा दिये गये ऋण के भुगतान में। में।

(iii) साझेदारों द्वारा अपने लाभालाभ अनुपात से अधिक लाई गई पूँजी के आधिक्य के भुगतान में

(iv) साझेदारों की पूँजी लाभालाभ अनुपात में समायोजित हो जाने पर पूँजी का भुगतान उनके लाभालाभ अनुपात के अनुसार करने में।

(v) शेष राशि साझेदारों में लाभालाभ अनुपात में वितरण करने में।

प्रश्न 3. एक साझेदार की मृत्यु निवृत्ति पर उसके प्रतिनिधि को देय राशि की गणना किस प्रकार की जाती है?

उत्तर– अधिकार साझेदार के उत्तराधिकारी को होता है–

1. पूँजी की राशि
2. पूँजी पर ब्याज, यदि इसका प्रावधान हो।
3. वेतन, यदि इसका प्रावधान हो।
4. कमीशन, बोनस आदि, यदि इसका प्रावधान हो।
5. संचित कोष में उसका भाग।
6. अवितरित लाभ में उसका भाग।
7. निवृत्ति की तिथि या मृत्यु की तिथि तक चालू वर्ष में फर्म के लाभ में उसका भाग।
8. ख्याति का भाग।
9. फर्म को उसने कोई ऋण दिया हो तो ऐसे ऋण की राशि तथा उसका ब्याज।
10. अन्य कोई राशि जो फर्म से लेना है।

प्रश्न 4. एक साझेदार के फर्म से अलग होने के तरीके क्या हो सकते है?

उत्तर– भारतीय साझेदारी अधिनियम, 1932 की धारा 32(1) के प्रावधान के अनुसार, एक साझेदार निम्नांकित तीन में से किसी भी परिस्थिति में फर्म से निवृत्त हो सकता है–

1. **सहमति** (Consent)- जब सभी शेष साझेदार अपनी सहमति देते हों।

2. **स्पष्ट ठहराव** (Express Agreement)- जब सभी शेष साझेदार इस संबंध में एक स्पष्ट ठहराव करते हो।

3. **सूचना** (Notice)- जब साझेदारी ऐच्छिक (Partnership at will) हो तो शेष सभी साझेदारों को लिखित सूचना देकर कोई साझेदार निवृत्त हो सकता है।

इसके अलावा फर्म से निवृत्त होने के निम्नांकित कारण भी हो सकते हैं–

(1) वृद्धावस्था के कारण।
(2) अस्वस्थता के कारण।
(3) अन्य साझेदारों से मतभेद हो जाने के कारण।
(4) अन्य साझेदारों से मतभेद हो जाने के कारण।
(5) फर्म का व्यवसाय निरन्तर घाटे में चलने पर।

प्रश्न 5. संचय की सम्पूर्ण राशि को वितरित करने पर नकल प्रविष्टि कीजिए।

हल– **Journal Entries**

		Dr. Amt.	Cr. Amt.
1. Reserve A/c	Dr.		
To Old Partner's Capital A/c			
(Ajustment of Reserve)			

प्रश्न 6. आंतरिक कोष से क्या आशय है?

उत्तर– 'संचय' (Reserve) में निम्नांकित संचय शामिल हैं (i) पूँजी संचय (ii) पूँजी शोधन संचय (iii) सिक्यूरिटीज प्रीमियम रिजर्व (iv) ऋणपत्र शोधन संचय (v) पुनर्मूल्यांकन संचय (vi) अंश विकल्प अदत्त खाता (Share options outstanding accounts) (vii) अन्य संचय (जैसे- सामान्य संचय, विनियोग उच्चावचन संचय, कर्मचारी क्षतिपूर्ति संचय, आकस्मिक संचय आदि)। आधिक्य में 'लाभ तथा हानि विवरण' का शेष शामिल होता है। यह शेष यदि लाभ है तो इसे जोड़ा जायेगा।

प्रश्न 7. वार्षिकी से क्या आशय है?

उत्तर– निवृत्तमान साझेदार को देय रकम का भुगतान कुछ वर्षों में वार्षिकी द्वारा भी किया जा सकता है। इसके लिए एक वार्षिकी

@MP_BOARD_25 (Telegram)

उचन्त खाता (Annuity Suspense Account) खोला जाता है, जिसमें निवृत्तमान साझेदार को देय रकम जमा कर दी जाती है। इस खाते में प्रतिवर्ष निर्धारित दर से ब्याजभी जमा किया जाता है। प्रतिवर्ष निश्चित रकम का भुगतान कर दिया जाता है। सम्पूर्ण रकम का भुगतान होने के पूर्व ही यदि निवृत्तमान साझेदार की मृत्यु हो जाती है तो इस खाते का शेष एक विशेष पूँजीगत लाभ माना जाता है और फर्म के विद्यमान साझेदारों के पूँजी खातों में उनके लाभालाभ अनुपात में जमा कर दिया जाता है। यदि निवृत्तमान साझेदार इस वार्षिकी उचन्त खाते की सम्पूर्ण राशि की समाप्ति के बाद जीवित रहता है तो उसके जीवित रहने तक वार्षिकी दी जायेगी।

प्रश्न 8. साझेदारों की निवृत्त या मृत्यु पर ख्याति के उपचार को समझाइए।

उत्तर– ख्याति का उपचार– ख्याति का लेखा, फर्म की पुस्तकों में ICAI द्वारा जारी किए गए लेखांकन प्रमाप-10 के अनुसार किया जाना चाहिए।

लेखांकन प्रमाप 10 के अनुच्छेद 16 के अनुसार ख्याति का लेखा, पुस्तकों में तभी किया जा सकता है, जबकि उसके बदले कोई प्रतिफल मुद्रा के रूप में दिया गया है। अत, केवल क्रय की गई ख्याति ही खाता पुस्तकों में दिखाई जाना चाहिए। किसी साझेदार के प्रवेश, निवृत्ति, पुनर्गठन पर या लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन की दशा में ख्याति खाता नहीं खोला जा सकता है।

अतः किसी साझेदार के अवकाश ग्रहण के समय सम्पूर्ण फर्म की ख्याति के मूल्यांकन के आधार पर अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार के हिस्से की ख्याति की गणना की जावेगी। लेखा पुस्तकों में अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार के हिस्से की ख्याति से उसके पूँजी खाते को क्रेडिट किया जावेगा तथा फर्म के शेष साझेदारों के पूँजी खाते उनके लाभ प्राप्ति या लाभ के अनुपात (Gaining Ratio) में डेबिट किया जावेगा।

किसी साझेदार की मृत्यु के समय भी ख्याति का उपचार इसी प्रकार किया जावेगा। इसके लिए निम्न प्रविष्टि की जाती है-

Remaining / Continuing Partner's Capital A/c	Dr.		लाभ प्राप्ति अनुपात में
To Retiring/Deceased Partner's Capital A/c(उसके हिस्से की ख्याति से)			
(Being Retiring/Deceased Partner's share of goodwill adjusted to Remaining / Containing Partners in the gaining ratio)			

प्रश्न 9. स्वाति, पूजा और श्वेता 1/2 : 1/3 : 1/6 के अनुपात में लाभ-हानि बाँटते है। यदि श्वेता व्यापार से अलग होती है, तो स्वाति और पूजा का नया लाभानुपात क्या होगा?

हल– पुराना अनुपात

स्वाति : पूजा : श्वेता

$$= \frac{1}{2} : \frac{1}{3} : \frac{1}{6}$$

$$= \frac{3:2:1}{6}$$

श्वेता का अवकाश ग्रहण के बाद अनुपात

स्वाति : पूजा

$\frac{3}{5} : \frac{2}{5}$ (उत्तर = 3 : 2)

प्रश्न 10. A, B और C एक फर्म में साझेदार है और लाभ-हानि 1/2 : 3/10 : 1/5 के अनुपात में बाँटते है। A फर्म से अवकाश ग्रहण करता है और उसका हिस्सा B और C ने 2 : 1 के अनुपात में ले लिया। साझेदारों का नया लाभ विभाजन अनुपात निकालिए।

हल– पुराना अनुपात-

A : B : C

$$\frac{1}{2} : \frac{3}{10} : \frac{1}{5}$$

$$= \frac{5:3:2}{10}$$

A का अवकाश ग्रहण

B ने किया = $\frac{5}{10}$ का $\frac{2}{3} = \frac{10}{30} + \frac{3}{10} = \frac{10+9}{30} = \frac{19}{30}$

C ने किया = $\frac{5}{10}$ का $\frac{1}{3} = \frac{5}{30} + \frac{2}{10} = \frac{5+6}{30} = \frac{11}{30}$

(उत्तर = 19 : 11)

प्रश्न 11. X, Y और Z एक फर्म में 1/2 : 1/3 : 1/6 के अनुपात में साझेदार है Z व्यापार से अवकाश ग्रहण करता है और X तथा Y उसका लाभांश 3 : 2 में क्रय करते हैं।

हल– पुराना अनुपात = X : Y : Z

@MP_BOARD_25 (Telegram)

$$= \frac{1}{2} : \frac{1}{3} : \frac{1}{6}$$

$$= \frac{3\ 2\ 1}{6}$$

Z का अवकाश ग्रहण–

X ने किया = $\frac{1}{6}$ का $\frac{3}{5} = \frac{3}{30} + \frac{3}{6} = \frac{3+15}{30} = \frac{18}{30}$

X ने किया = $\frac{1}{6}$ का $\frac{2}{5} = \frac{2}{30} + \frac{2}{6} = \frac{2+10}{30} = \frac{12}{30}$

नया अनुपात : 18 : 12 / 3 : 2

प्रश्न 12. रमन, अमन और नमन एक फर्म में साझेदार है। उनके लाभालाभ अनुपात 4 : 3 : 2 है। 31 मार्च 2018 को अमन की मृत्यु हो जाती है। अमन की मृत्यु के पश्चात शेष साझेदारों के लाभालाभ अनुपात क्या होंगे?

हल– पुराना अनुपात

रमन : अमन : नमन

$\frac{4}{9} : \frac{3}{9} : \frac{2}{9}$

अमन की मृत्यु के पश्चात

रमन नमन

$\frac{4}{6} : \frac{2}{6}$ उत्तर – 4 : 2

प्रश्न 13. जया, पायल और मल्लिका अपनी पूँजी के अनुपात में लाभालाभ विभाजन करने वाली साझेदार हैं। उनकी पूँजी क्रमशः 20,000 रु, 15,000 रु. और 10,000 रु. थी। पायल व्यापार से निवृत्त होती है। जया और मल्लिका भविष्य में 5/8 और 3/8 के अनुपात में लाभ का विभाजन करेंगी। उनके लाभांश प्राप्ति के गणना कीजिए।

हल– पुराना अनुपात–

जया : पायल . मल्लिका

पूँजी अनुपात = 20.000 : 15.000 : 10.000

$$= \frac{4}{9} : \frac{3}{9} : \frac{2}{9}$$

पायल की निवृति के पश्चात्–

जया : पायल

$\frac{5}{8} : \frac{3}{8}$

नया – पुराना = नफे का अनुपात

$\frac{4}{9} - \frac{5}{8} = \frac{32-45}{72} = 13$

$\frac{2}{9} - \frac{3}{8} = \frac{16-27}{72} = 11$

नफे का अनुपात 13 : 11

प्रश्न 14. X, Y और Z साझेदार है जो कि लाभो को 4 : 3 : 1 के अनुपात में बाँटते है। Y की मृत्यु हो जाती है। X और Z को भविष्य में लाभों को 2 : 1 के अनुपात में बाँटने का निश्चय करते हैं। लाभ प्राप्ति अनुपात की गणना कीजिए।

हल– पुराना अनुपात X : Y : Z

$\frac{4}{8} : \frac{3}{8} : \frac{1}{8}$

नया अनुपात $\frac{2/3 X 1/3}{4-5}$ (उत्तर 4 : 5)

◘ विश्लेषणात्मक प्रश्न :

प्रश्न 1. साझेदार की मृत्यु की दशा में उसके वैधानिक उत्तराधिकारी को देय राशि की गणना करते समय किन–किन बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

उत्तर– अधिकार मृतक साझेदार से उत्तराधिकारी को होता है–

(1) पूँजी की राशि

(2) पूँजी पर व्याज, यदि इसका प्रावधान हो।

(3) वेतन, यदि इसका प्रावधान हो।

(4) कमीशन, बोनस आदि, यदि इसका प्रावधान हो।

(5) संचित कोष में उसका भाग।

(6) अवितरित लाभ में उसका भाग।

(7) मृत्यु की तिथि तक चालू वर्ष में फर्म के लाभ में उसका भाग।

(8) ख्याति का भाग।

(9) फर्म को उसने कोई ऋण दिया हो तो ऐसे ऋण की राशि तथा उसका व्याज।

(10) अन्य कोई राशि जो फर्म से लेना है।

प्रश्न 2. एक साझेदार के अवकाश पर ख्याति का लेखांकन उपचार समझाए, जब ख्यातिको नयी फर्म के स्थिति विवरण में नहीं दर्शाना है।

उत्तर– ख्याति का लेखांकन– जब किसी साझेदार की निवृत्ति या मृत्यु की दशा में शेष साझेदार फर्म का व्यवसाय जारी रखते हैं तो भविष्य के लाभों के वे ही अधिकारी होते हैं। अर्थात् उन्हें पूर्व की

@MP_BOARD_25 (Telegram)

तुलना में अतिरिक्त लाभ होता है। अतः इस अतिरिक्त लाभ की क्षतिपूर्ति उस साझेदार को की जानी चाहिए जो अवकाश ग्रहण या मृत्यु के कारण अपने भावी लाभ के भाग का विद्यमान साझेदार के हित में त्याग करता है। क्षतिपूर्ति की यह रकम ख्याति के आनुपातिक भाग के बराबर ही होती है। अतः फर्म की कुल ख्याति में निवृत्त/मृतक साझेदार का जो भाग है, वह उसके पूँजी खाते में क्रेडिट किया जाना चाहिए और विद्यमान साझेदारों (जो कि अतिरिक्त लाभ प्राप्त कर रहे हैं) के पूँजी खातों को उनके नफे के अनुपात में डेबिट किया जाना चाहिए।

प्रश्न 3. एक निवृत्त साझेदार को भुगतान के तरीके बताए।

उत्तर– निवृत्त या मृतक साझेदार को देय राशि का भुगतान ऐसा भुगतान या तो नकद किया जा सकता है अथवा किस्तों में, या वार्षिकी के द्वारा अथवा ऋण खाते में हस्तान्तरण द्वारा। मृतक साझेदार की दशा में हस्तान्तरण वसीयत के प्रबन्धकर्ता या कानूनी प्रतिनिधि के ऋण खाते उक्त देय राशि हस्तान्तरित की जाएगी।

प्रश्न 4. मृतक साझेदार को देय लाभ की गणना समझाइए।

उत्तर– पूर्व में उल्लेख किया गया है कि मृतक साझेदार को चालू वर्ष के लाभ में उसकी मृत्यु तिथि तक का लाभ दिया जाता है। व्यावहारिक कठिनाइयों को देखते हुए गत वर्ष के औसत लाभ के आधार पर गणना की जाती है।इस इस देय लाभ की गणना के लिए निम्न विधियों में से कोई एक विधि अपनाई जा सकती है (जैसा प्रश्न में निर्देश हो)

1. समय के आधार पर– गत वर्ष के लाभ को आधार मानकर मृत्यु की तिथि तक के दिनों की गणना करके इन दिनों का लाभ ज्ञात कर मृतक साझेदार का भाग निकाल लिया जाता है।

2. कुल बिक्री के अनुसार– गत अंतिम खाते बनाने की तिथि से साझेदार की मृत्यु की दिनांक तक की कुल बिक्री ज्ञात कर ली जाती है। गत वर्षों का औसत लाभ तथा विक्रय को आधार मानकर वर्तमान विक्रय पर मृत्यु की तिथि तक का कुल लाभ ज्ञात कर लिया जाता है। इसमें से मृत साझेदार का भाग दे दिया जाता है।

प्रश्न 5. पारस, विकास और नितिन एक फर्म में 3 : 2 : 1 के अनुपात में लाभ बाँटते हैं। विकास 31 दिसम्बर, 2018 को अवकाश ग्रहण करता है। इस दिन साझेदारों के पूँजी खातों के शेष क्रमशः 6,000 रु., 5,000 रु. और 4,000 रु. थे। ख्याति का मूल्य 4,500 रु. आँका गया, जो पुस्तकों में नहीं दर्शायी जावेगी। पुनर्मूल्यांकन के आधार पर मशीन 1,200 रु. तथा स्कन्ध 800 रु. कम कर दिया गया। संदिग्ध ऋणों के लिए 280 रु. संचित किये गये। लेनदारों की राशि 600 रु. कम कर दी गई और पेटेन्ट, जिसका पुस्तकीय मूल्य 300 रु. था, निर्मूल्य हो गया। लाभ–हानि समायोजन खाता तथा साझेदारों के पूँजी खाते बनाइए।

हल (Solution) :

Dr. **Profit and Loss Adjustment A/c** **Cr.**

Particulars	*Amount* ₹	*Particulars*		*Amount* ₹
To Machinery A/c	1,200	By Creditors		600
To Stock A/c	800	By Capital A/cs (Loss)		
To R.B.D. A/c	280	Paras	990	
To Patents	300	Vikas	660	
		Nitin	330	1,980
	2,580			2,580

Dr. **Partner's Capital A/cs** **Cr.**

Particulars	*Paras* ₹	*Vikas* ₹	*Nitin* ₹	*Particulars*	*Paras* ₹	*Vikas* ₹	*Nitin* ₹
To Revaluation A/c	990	660	330	By Balance b/d	6,000	5,000	4,000
To Vikas Capital A/c	1,125	–	375	By Paras Capital	–	1,125	–
To Loan A/c	–	5,840	–	By Nitin Capital	–	375	–
To Balance c/d	3,885	–	3,295				
	6,000	6,500	4,000		6,000	6,500	4,000

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 6. एक फर्म में X, Y और Z बराबर के साझेदार हैं। 31 दिसम्बर 2014 को Y की मृत्यु हो गई। इस तिथि पर उसे 20,000 रु. देय थे। यह निर्णय किया गया कि यह राशि 5,000 रु. की वार्षिकी द्वारा Y की विधवा पत्नी को भुगतान की जायेगी। प्रथम भुगतान 1 जनवरी, 2015 को किया गया तथा वार्षिकी अन्य भुगतान भी 1 जनवरी को किए गए। विधवा [illegible] 2 जनवरी 2017 को उसकी मृत्यु हो गई। वार्षिकी अदत्त राशि पर 6 प्रतिशत की दर से ब्याज की गणना की जाती है। वार्षिकी निलंबन खाता बनाइए।

हल (Solution) :

Dr. **Annuity Suspense A/c** Cr.

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2015			2015		
Jan 1	To Cash A/c	5,000	Jan 1	By Y's Capital A/c	20,000
Dec 31	To Balance c/d	15,900	Dec 31	By Interest A/c	900
		20,900			20,900
2016			2016		
Jan 1	To Cash A/c	5,000	Jan 1	By Balance b/d	15,900
Dec 31	To Balance c/d	11,500	Dec 31	By Interest A/c	600
		16,500			16,500
2017			2018		
Jan 1	To Cash A/c	5,000	Jan 1	By Balance b/d	11,500
Dec 31	To Y Capital A/c 3,400				
	To Z Capital A/c 3,400	6,800	Dec 31	By Interest A/c	300
		11,800			11,800

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 7. किन दशाओं में एक साझेदार फर्म से अवकाश ग्रहण कर सकता है?

उत्तर- निम्नांकित तीन में से किसी भी परिस्थिति में फर्म से निवृत्त हो सकता है-

1. सहमति (Consent)- जब सभी शेष साझेदार अपनी सहमति दे दें।

2. स्पष्ट अनुबंध (Express Agreement)- जब सभी शेष साझेदार इस संबंध में एक स्पष्ट अनुबंध करते हों।

3. सूचना (Notice)- जब साझेदारी ऐच्छिक (Partnership at will) हो तो शेष सभी साझेदारों को लिखित [illegible] साझेदार निवृत्त हो सकता है। सूचना देकर कोई साझेदार निवृत्त हो सकता है।

प्रश्न 8. निवृत्ति के पश्चात पूंजी खाते के समायोजन लिखिए।

उत्तर- किसी साझेदार की निवृत्ति या मृत्यु के बाद फर्म का व्यवसाय जारी रखने वाले शेष साझेदार अपनी-अपनी पूंजी का समायोजन अपने-अपने लाभ-विभाजन के अनुपात करने का निर्णय ले सकते हैं। ऐसी दशा में, उनके पूंजी खातों के शेषों के योग को नई फर्म की पूंजी (अन्य किसी निर्दिष्ट व्यवस्था के अभाव में) मान लिया जाता है। इस पूंजी का विभाजन साझेदारों के नये अनुपात में कर दिया जाता है। यदि किसी समायोजन की पूंजी का आधिक्य बचता है तो वह नकद घर ले जायेगा। यदि साझेदार की पूंजी कम पड़ती है तो वह आवश्यक रकम घर से नकद लाएगा। इस संबंध में निम्न जर्नल प्रविष्टियां की जायेगी–

(i) पूंजी का आधिक्य साझेदार द्वारा आहरित करने पर–

Partner's Capital a/c	Dr.
To Bank a/c	
(Excess capital withdrawn by partner)	

(ii) पूंजी की कमी नकद लाने पर–

Bank a/c	Dr.
To Partner's Capital a/c	
(Deficit capital brought in cash)	

प्रश्न 9. फर्म में निवृत्त साझेदार को देय राशि की गणना किस प्रकार की जाती है।

उत्तर– निवृत्तमान या मृतक साझेदार को अधिकार होता है।

(i) पूँजी की राशि।

(ii) पूँजी पर ब्याज, यदि इसका प्रावधान हो।

(iii) वेतन, यदि इसका प्रावधान हो।

(iv) कमीशन, बोनस आदि, यदि इनका प्रावधान हो।

(v) संचित कोष में उसका भाग।

(vi) अवितरित लाभ में उसका भाग।

(vii) निवृत्ति की तिथि या मृत्यु की तिथि तक चालू वर्ष में फर्म के लाभ में उसका भाग।

(viii) ख्याति का भाग।

(ix) फर्म को उसने कोई ऋण दिया हो तो ऐसे ऋण की राशि तथा उसका ब्याज।

(x) अन्य कोई राशि जो फर्म से लेना है।

यदि निवृत्तमान या मृतक साझेदार ने कोई आहरण किया हो या फर्म से ऋण लिया हो तो उपर्युक्त राशियों के योग में से ऐसे आहरण, ऋण और उन पर लगाये जाने वाले ब्याज की राशि घटा देना चाहिए। इसी प्रकार, अवितरित हानि में निवृत्तमान साझेदार का भाग भी घटा देना चाहिए। बची हुई रकम उसे देय राशि कहलाएगी।

प्रश्न 10. अ, ब और स साझेदार हैं, जो लाभों को 2 : 3 : 5 के अनुपात में बाँटते हैं। उनकी पुस्तकों में पहले से ही 1,00,000 रु. से एक ख्याति खाता विद्यमान है। ब अवकाश ग्रहण करता है और ब के अवकाश ग्रहण करने के दिन ख्याति का मूल्यांकन 90,000 रु. पर किया गया। अ और स ने भविष्य में लाभ समान अनुपात में बाँटने का निर्णय किया। आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिए।

@MP_BOARD_25(Telegram)

हल (Solution) : **Journal Entries**

Date	*Particulars*		*LF*	*Dr. Amt.* ₹	*Cr. Amt.* ₹
1.	A's Capital A/c	Dr.		20,000	
	B's Capital A/c	Dr.		30,000	
	C's Capital A/c	Dr.		50,000	
	To Goodwill A/c				1,00,000
	(Existing goodwill written off)				
2.	A' Capital A/c			10,000	
	To B Capital A/c				10,000
	(Adjustment of B Share of goodwill)				

प्रश्न 11. अजय, अतुल व अनुराग एक फर्म में साझेदार हैं। वे अपने लाभ–हानि 1 : 2 : 3 के अनुपात में बाँटते हैं। 31 दिसम्बर, 2018 को उनका चिट्ठा इस प्रकार था–

चिट्ठा

दायित्व		रकम रु.	सम्पत्तियाँ	रकम रु.
पुँजी–			भवन	60,000
अजय	24,000		फर्नीचर	16,000
अतुल	20,000		देनदार	20,000
अनुराग	16,000	60,000	रोकड़	4,000
सामान्य संचय		18,000		
लेनदार		22,000		
		1,00,000		1,00,000

अनुराग ने 1 जनवरी, 2019 को अवकाश ग्रहण किया। फर्म की ख्याति 30,000 रु. आँकी गई। अनुराग को दी जाने वाली राशि ऋण खातेमें हस्तांतरित कीजिए। उक्त विवरण से साझेदारों के पूँजी खाते बनाइए।

हल (Solution) :

Dr. Partner's Capital A/cs Cr.

Particulars	Ajay	Atul	Anurag	Particulars	Ajay	Atul	Anurag
	₹	₹	₹		₹	₹	₹
To Anurag Capital	5,000	10,000	—	By Balance b/d	24,000	20,000	16,000
To Anurag's Loan A/c	—	—	40,000	By Gen. Reserve A/c	3,000	6,000	9,000
To Balance c/d	22,000	16,000	—	By Ajay Capital A/c	—	—	5,000
				By Atul Capital	—	—	10,000
	27,000	26,000	40,000		27,000	26,000	40,000

प्रश्न 12. रवि, सोम और मंगल 2 : 3 : 5 के अनुपात में लाभ-हानि बाँटते हैं। उनका चिट्ठा 31 दिसम्बर 2018 को निम्नांकित है-

चिट्ठा

दायित्व रु.		रकम	सम्पत्तियाँ रु.	रकम
सामान्य संचय		18,000	भवन	40,000
लेनदार		12,000	फर्नीचर	20,000
पूँजी			देनदार	15,000
रवि	20,000		रोकड़	9,000
सोम	18,000			
मंगल	16,000	54,000		
		84,000		84,000

1 जनवरी, 2019 को मंगल अवकाश ग्रहण करता है। निम्नांकित को ध्यान में रखकर लाभ-हानि समायोजन खाता बनाइए- (1) भवन व फर्नीचर में 5% वृद्धि, (2) देनदारों पर 10% अशोध्य ऋण संचय, (3) लेनदारों पर 5% कटौती, (4) वैधानिक व्यय हेतु प्रावधान 200 रु.

हल (Solution) :

Profit and Loss Appropriation Account

Particulars	*Amount* ₹	*Particulars*	*Amount* ₹
To Debtors (10%)	1,500	By Creditors (5%)	600
To Legal Exp.	200	By Building (5%)	2,000
To Ravi's Capital A/c	380	By Furniture	1,000
To Som's Capital A/c	570		
To Mangal's Capital A/c	950		
	3,600		3,600

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 13. X, Y और Z एक फर्म में साझेदार हैं। वे समान अनुपात में लाभालाभ बाँटते हैं। 31 दिसंबर, 2018 को उनका चिट्ठा निम्न था–

चिट्ठा

दायित्व		रकम	सम्पत्तियाँ	रकम
		रु.		रु.
सामान्य संचय		13,500	शाकड़	2,000
लेनदार		16,500	बैंक में शेष	1,000
पूँजी खाते			स्टॉक	4,000
X-	18,000		देनदार	15,000
Y-	15,000		फर्नीचर	8,000
Z-	12,000	45,000	भवन	45,000
		75,000		75,000

Z ने जनवरी, 2019 को अवकाश ग्रहण किया। फर्म की ख्याति 22,500 रु. आंकी गई। Z को देय राशि की गणना कीजिए और उसके ऋण खाते में अंतरित कीजिए। Z के ऋण का भुगतान 4 समान किश्तों में 8 प्रतिशत वार्षिक ब्याज की दर से प्रत्येक वर्ष के अन्त में किया जाएगा। Z का ऋण खाता चार वर्षों के लिए खोलिए।

हल (Solution) : Z को देय राशि की गणना : (Calculation of amount payable to Z)

	₹
पूँजी शेष (Capital Balance)	12,000
जोड़ा : सामान्य संचय का हिस्सा (Share of General Reserve)	4,500
ख्याति का अंश (Share of Goodwill)	7,500
कुल देय राशि (ऋण खाता) [Total amount payable (Loan A/c)]	24,000

Dr. Z's Loan A/c Cr.

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
2019		₹	2019		₹
Dec.31	To Cash A/c (6,000 + 1,920)	7,920	Jan.1	By Z's Capital A/c	24,000
			Dec. 31	By Interest A/c (24,000 × 8%)	1,920
Dec.31	To Balance c/d	18,000			
		25,920			25,920
2020			2020		
Dec.31	To Cash A/c (6,000 + 1,440)	7,440	Jan.1	By Balance b/d	18,000
			Dec. 31	By Interest A/c (18,000 × 8%)	1,440
Dec. 31	To Balance c/d	12,000			
		19,440			19,440
2021				2021	
Dec.31	To Cash A/c (6,000+960)	6,960	Jan.1	By Balance b/d	12,000
Dec.31	To Balance c/d	6,000	Dec.31	By Interest A/c (12,000 × 8%)	960
		12,960			12,960
2022			2022		
Dec.31	To Cash A/c (6,000 + 480)	6,480	Jan.1	By Balance b/d	6,000
			Dec.31	By Interest A/c (6,000 × 8%)	480
		6,480			6,480

☐ [नोट : वार्षिक किश्त = 24,000 ÷ 4 = 6,000 रुपये (ब्याज अतिरिक्त)]

[**Note** : Annual instalment = 24,000 ÷ 4 = ₹ 6,000 (Excluding Interest)]

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 14. A, B और C एक फर्म में साझेदार हैं। वे 4 : 3 : 2 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हैं। A फर्म से अवकाश ग्रहण करता है। उस दिन फर्म का चिट्ठा निम्न था-

चिट्ठा

दायित्व		रकम	सम्पत्तियाँ	रकम
		रु.		रु.
बैंक अधिविकर्ष		4,000	रोकड़ शेष	1,000
विविध लेनदार		15,000	विविध देनदार	10,000
कर्मचारियों का			स्टॉक	16,000
दुर्घटना कोष		9,000	मोटर कार	8,000
पूंजी खाते-			फर्नीचर	1,000
A-	27,000		प्लाण्ट और मशीन	20,000
B-	24,000		भूमी और कारखाना	36,000
C-	13,000	64,000		
		92,000		92,000

A के अवकाश ग्रहण पर निम्नलिखित समायोजन किए गए- (1) देनदारों पर 10 प्रतिशत डूबत ऋण संचित किया गया। (2) भूमि और कारखाना 66,000 रु. प्लाण्ट और मशीनरी 80,000 रु. फर्नीचर 3,000 रु. मोटर कार 11,000 रु. और स्टॉक 21,000 पर पुनर्मूल्यांकित किए गए। (3) ख्याति का मूल्यांकन गत तीन वर्षों के औसत लाभ के द्वि-वर्षीय क्रय पर किया गया। पिछले तीन वर्षों के लाभ क्रमशः 35,000 रु, 40,000 रु., और 60,000 थे। आपको निम्नलिखित बनाना है- (i) पुनर्मूल्यांकन खाता, (ii) साझेदारों के पूंजी खाते।

हल (Solution) :

Dr. Revaluation A/c Cr.

Particulars		*Amount* ₹	*Particulars*	*Amount* ₹
To Reserve for Bad Debts		1,000	By Land & Factory	30,000
To Profit transferred to Capital A/cs			By Plant & Machinery	60,000
A	44,000		By Furniture	2,000
B	33,000		By Motorcar	3,000
C	22,000	99,000	By Stock	5,000
		1,00,000		1,00,000

Dr. Partner's Capital A/c Cr.

Particulars	*A* ₹	*B* ₹	*C* ₹	*Particulars*	*A* ₹	*B* ₹	*C* ₹
To A's Loan A/c	1,15,000	–	–	By Balance b/d	27,000	24,000	13,000
To A's Capital A/c	–	24,000	16,000	By Revaluation A/c	44,000	33,000	22,000
To Balance c/d	–	36,000	21,000	By B's Capital A/c	24,000	–	–
				By C's Capital A/c	16,000	–	–
				By Workmen's Accident Fund	4,000	3,000	2,000
	1,15,000	60,000	37,000		1,15,000	60,000	37,000

संकेत- कर्मचारियों का दुर्घटना कोष एक आंतरिक कोष अर्थात् अवितरित एकत्र लाभ हैं, अतः सभी साझेदारों के पूँजी खाते में उनके अनुपात में अंतरित कर दिया गया है।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 15. मृत साझेदार को चुकायी जाने वाली राशि के उन बिन्दुओं को समझाइए जो निवृत्त होने वाले साझेदार की देय राशि से भिन्न है।

उत्तर– साझेदार की निवृत्ति तथा मृत्यु की दशा में लेखांकन की निम्नलिखित प्रक्रिया आवश्यक होती है–

क्र.	अंतर का आधार	निवृत्ति	मृत्यु
1.	समय	साझेदार की निवृत्ति को व्यापारिक वर्ष के अंत तक स्थगित किया जा सकता है।	मृत्यु व्यापारिक वर्ष के मध्य कभी भी हो सकती है। इसे स्थगित नहीं किया जा सकता है।
2.	लाभ–हानि की गणना	साझेदार द्वारा वर्ष के अंत में अवकाश ग्रहण करने की दशा में अलग से लाभ–हानि की गणना करने की आवश्यकता नहीं होती है।	जब साझेदार की मृत्यु व्यापारिक अवधि के मध्य हो जाती है, तो मृत्यु की अवधि तक के लाभ–हानि की गणना करना होती है, जो थोड़ी कठिन होती है।
3.	हिसाब–किताब	निवृत्ति की दशा में हिसाब–किताब प्रत्यक्ष रूप से उसी साझेदार के साथ किया जाता है।	मृत्यु की दशा में हिसाब–किताब मृतक साझेदार के उत्तराधिकारी के साथ किया जाता है।
4.	भुगतान	निवृत्ति के अन्तर्गत देय राशि सामान्यतः निवृत्ति साझेदार के ऋण खाते में अंतरित कर दी जाती है।	मृतक साझेदार को देय राशि उसके उत्तराधिकारी के खाते में स्थानान्तरित की जाती है। सामान्यतः इसका नकद भुगतान होता है।

प्रश्न 16. फर्म से निवृत्त होने वाले साझेदार को दी जाने वाली राशि की गणना किस प्रकार की जाती है? समझाइए।

उत्तर– जिस तिथि को कोई साझेदार फर्म से अलग होता है या उसकी मृत्यु हो जाती है, उस तिथि तक उसे देय राशियों की गणना कर लेनी चाहिये। ऐसा करते समय यह ध्यान में रखना चाहिये कि निवृत्तमान या मृतक साझेदार को कौन–कौन–सी राशि प्राप्त करने की पात्रता है। साधारणतया निम्नलिखित राशियाँ प्राप्त करने का निवृत्तमान या मृतक साझेदार को अधिकार होता है।

(1) पूँजी की राशि।

(2) पूँजी पर ब्याज, यदि इसका प्रावधान हो।

(3) वेतन, यदि इसका प्रावधान हो।

(4) कमीशन, बोनस आदि, यदि इनका प्रावधान हो।

(5) संचित कोष में उसका भाग।

(6) अवितरित लाभ में उसका भाग।

(7) निवृत्ति की तिथि या मृत्यु की तिथि तक चालू वर्ष में फर्म के लाभ में उसका भाग।

(8) ख्याति का भाग।

(9) फर्म को उसने कोई ऋण दिया हो तो ऐसे ऋण की राशि तथा उसका ब्याज।

(10) अन्य कोई राशि जो फर्म से लेना है।

प्रश्न 17. अवकाश प्राप्त साझेदार को दी जाने वाली राशि का भुगतान किन विधियों से किया जा सकता है।

उत्तर– अवकाश प्राप्त साझेदार को भुगतान निम्न प्रकार से किया जाता है– (1) देय राशि का एक मुश्त भुगतान (2) ऋण द्वारा भुगतान / किश्तों में (3) देय राशि के लिए विपत्र स्वीकरता (4) वार्षिकी द्वारा भुगतान।

प्रश्न 18. दिनेश, महेश और नरेश 7 : 5 : 2 के अनुपात में लाभ–हानि विभाजित करते हैं। दिनेश व्यापार से निवृत्त होता है। फर्म की कुल ख्याति 28,000 रु. आंकी गई है। आवश्यक पूँजी प्रविष्टियाँ कीजिए।

©MP_BOARD_25 (Telegram)

हल (Solution) : **Journal Entries**

Date	Particulars	L.F.	Amount Dr.	Amount Cr.
	Mahesh's Capital A/c Dr. Naresh's Capital A/c Dr. To Dinesh's Capital A/c (Being Dinesh's Capital A/c credited for his share of Goodwill and remaining partners Capital A/c Debited in Gaining ratios)		10,000 4,000	 14,000

Working Note : Gaining Ratio = New ratio – Old ratio

Mahesh's Gain = $\frac{5}{7} - \frac{5}{14} = \frac{10-5}{14} = \frac{5}{14}$ Mahesh Debited 14,000 × $\frac{5}{7}$ = 10,000

Naresh's Gain = $\frac{2}{7} - \frac{2}{14} = \frac{4-2}{14} = \frac{2}{14}$ Naresh Debited 14,000 × $\frac{2}{7}$ = 4,000

Dinesh share of Goodwill 28,000 × $\frac{7}{14}$ = 14,000

प्रश्न 19. अमन, आशीष और नमीष साझेदार थे, जो लाभों को क्रमशः 5 : 3 : 2 के अनुपात में बाँटते थे। पुस्तकों में ख्याति नहीं दिखाई जाती, परन्तु यह सहमति हुई कि इसका मूल्यांकन 50,000 रु. होगा। अमन फर्म से अवकाश ग्रहण करता है तथा आशीष और नमीष ने निश्चित गणना स्पष्ट रूप से दर्शाइए।

हल (Solution) :

Journal Entries

Date	Particulars	LF	Dr. Amt.	Cr. Amt.
	Ashish Capital A/c Dr. Namish Capital A/c Dr. To Aman's Capital A/c (Adjustment of goodwill)		15,000 10,000	 25,000

@MP_BOARD_25 (Telegram)

इकाई–5 साझेदार फर्म का विघटन

अंकवार प्रश्नों की संख्या				कुल अंक
वस्तुनिष्ठ प्रश्नों (1 अंक)	अति लघुउत्तरीय प्रश्न (2 अंक)	लघुउत्तरीय प्रश्न (3 अंक)	विश्लेषणात्मक प्रश्न (4 अंक)	
2	1	–	–	4

■ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर :

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए–

(1) वसूली खाता है–
(a) व्यक्तिगत खाता
(b) नाममात्र का खाता
(c) साझेदारों का खाता
(d) वास्तविक खाता

(2) वसूली खाता बनाया जाता है–
(a) साझेदार के प्रवेश पर
(b) साझेदार की निवृत्ति पर
(c) फर्म के विघटन पर
(d) फर्म के पुनर्गठन पर

(3) फर्म के विघटन पर साझेदार के ऋण को अंतरित किया जाता है–
(a) वसूली खाते में

(b) साझेदार के पूँजी खाते में
(c) लाभ–हानि समायोजन खाते में
(d) रोकड़ खाते में

(4) कौन–सा खाता फर्म के जीवन में केवल एक बार ही बनाया जा सकता है–
(a) वसूली खाता
(b) पुनर्मूल्यांकन खाता
(c) लाभ–हानि खाता
(d) रोकड़ खाता

(5) फर्म का आकस्मिक या संयोगिक विघटन होगा यदि–
(a) सभी साझेदार दिवालिया हो जाएँ
(b) एक को छोड़कर सभी साझेदार दिवालिया हो जाएँ
(c) फर्म का व्यवसाय अवैध हो जाए
(d) कोई एक साझेदार दिवालिया हो जाए

(6) वसूली खाते में संपत्तियाँ अंतरित करते हैं–
(a) पुस्तकीय मूल्य पर
(b) साझेदारों के पूँजी खाते में
(c) लाभ–हानि समायोजन में
(d) रोकड़ खाते में

(7) फर्म के विघटन पर बैंक अधिविकर्ष को अंतरित किया जाता है–
(a) वसूली खाते में
(b) लागत मूल्य पर
(c) बाजार मूल्य पर
(d) विक्रय मूल्य पर

(8) अलिखित संपत्ति के विक्रय से प्राप्त राशि लिखी जाती है–
(a) साझेदारों के पूँजी खाते में
(b) वसूली खाते में
(c) लाभ–हानि समायोजन खाते में
(d) संपत्ति खाते में

(9) निम्नलिखित में से किसे वसूली खाते में अंतरित किया जाता है–
(a) साझेदार का ऋण
(b) अविभाजित लाभ
(c) बैंक अधिविकर्ष
(d) रोकड़

(10) निम्नलिखित में से किसे वसूली खाते में अंतरित नहीं किया जाता है–
(a) देनदार ऋण संचिति
(b) बैंक अधिविकर्ष
(c) विनियोग उच्चावचन कोष
(d) रोकड़ व बैंक शेष

(11) लेनदार और देय विपत्रों जैसे दायित्वों को वसूली खाते में अंतरित करने के पश्चात भुगतान की सूचना के अभाव में ऐसे दायित्वों का–
(a) भुगतान नहीं होगा
(b) पूर्ण भुगतान होगा
(c) आंशिक भुगतान होगा
(d) वसूली पर लाभ होने पर ही भुगतान होगा

उत्तर– (1) (b), (2) (c), (3) (b), (4) (a), (5) (a), (6) (a), (7) (d), (8) (b), (9) (c), (10) (d), (11) (b)।

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(1) वसूली खाता फर्म के जीवन में ..... बार बनाया जाता है।
(2) वसूली खाता ..... प्रकृति का खाता होता है।
(3) फर्म के विघटन पर बाहरी दायित्वों को ..... खाते में अंतरित करते हैं।
(4) वसूली खाते में संपत्तियों को उनके ..... मूल्य पर अंतरित करते हैं।
(5) वसूली खाते में संपत्तियों को उनके ..... साझेदारों में बाँटा जाता हैं।
(6) फर्म के विघटन के पश्चात साझेदार स्वयं को ..... कर सकते हैं।
(7) फर्म के विघटन पर सर्वप्रथम ..... दायित्वों को भुगतान किया जाता है।
(8) सभी साझेदारों के दिवालिया होने पर फर्म का ..... विघटन होता है।
(9) निश्चित अवधि जिसके लिए साझेदारी की गयी थी, व्यतीत हो जाने पर फर्म का ..... विघटन होता है।
(10) फर्म के विघटन पर चिट्ठे की समस्त वास्तविक सम्पत्तियों को वसूली खाते के ..... पक्ष में अंतरित करते हैं।
(11) फर्म का व्यापार अवैध हो जाने पर फर्म का ..... विघटन होता है।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

(12) फर्म का कोई साझेदार वैधानिक रूप से दिवालिया हो जाए तो फर्म का ..... विघटन होता है।

(13) फर्म के विघटन पर हिसाब की पुस्तकों को ..... कर दिया जाता है।

उत्तर– (1) एक, (2) नाममात्र (अस्थायी), (3) वसूली, (4) पुस्तक, (5) सभी, (6) व्यवसाय, (7) बाह्य, (8) अनिवार्य, (9) ऐच्छिक, (10) जमा, (11) आकस्मिक, (12) अनिवार्य, (13) बंद।

प्रश्न 3. सही जोड़ी बनाइये–

(I)	(A)	(B)
(1)	सभी साझेदारों का दिवालिया होना	(a) वसूली खाते में अंतरित करते हैं
(2)	किसी एक साझेदार का दिवालिया होना	(b) वसूली खाते में अंतरित नहीं करते हैं
(3)	वसूली खाता	(c) संयोग द्वारा विघटन
(4)	बैंक अधिविकर्ष	(d) फर्म के जीवनकाल में एक बार बनाते हैं
(5)	रोकड़ खाता	(e) अनिवार्य विघटन

उत्तर– (1) (c), (2) (e), (3) (d), (4) (a), (5) (b)।

प्रश्न 3. सही जोड़ी बनाइये–

(II)	(A)	(B)
(1)	अलिखित दायित्व का भुगतान	(a) नाममात्र का खाता
(2)	फर्म विघटन पर सबसे पहले भुगतान	(b) साझेदारों के पूँजी खाते में
(3)	वसूली खाता	(c) अनिवार्य विघटना
(4)	संचय व कोषों का अंतरण	(d) वसूली खाते के नाम पक्ष में
(5)	फर्म का व्यापार अवैध होना	(e) बाहरी दायित्व

उत्तर– (1) (d), (2) (e), (3) (a), (4) (b), (5) (c)।

प्रश्न 4. सत्य/असत्य लिखिए–

(1) वसूली खाता फर्म के पुनर्गठन पर बनाया जाता है।

(2) वसूली खाता फर्म के जीवन में अनेक बार बनाया जा सकता है।

(3) फर्म के विघटन पर सर्वप्रथम बाहरी दायित्वों का भुगतान किया जाता है।

(4) बैंक अधिविकर्ष को वसूली खाते में अंतरित नहीं किया जाता है।

(5) फर्म के समापन पर संचय व कोषों का शेष साझेदारों के पूँजी खाते में अंतरित किया जाता है।

(6) वसूली खाता वास्तविक प्रकृति का खाता होता है।

(7) फर्म के विघटन और साझेदारी के विघटन में कोई अंतर नहीं है।

(8) फर्म के विघटन पर अलिखित संपत्ति से प्राप्ति को वसूली खाते में जमा किया जाता है।

(9) फर्म के विघटन पर पुनर्मूल्यांकन खाता बनाया जाता है।

(10) ऐच्छिक साझेदारी का विघटन साझेदारों द्वारा एक दूसरे को लिखित सूचना देकर किया जा सकता है।

उत्तर– (1) असत्य, (2) सत्य, (3) सत्य, (4) असत्य, (5) सत्य, (6) असत्य, (7) असत्य, (8) सत्य, (9) असत्य, (10) सत्य।

प्रश्न 5. एक शब्द/वाक्य में उत्तर लिखिए–

(1) वसूली खाता कब बनाया जाता है?

(2) वसूली खाते में सम्पत्तियों को किस मूल्य पर अंतरित करते हैं?

(3) फर्म के विघटन पर सम्पत्तियों से प्राप्ति और दायित्वों के भुगतान के लिए कौन-सा खाता बनाते हैं।

(4) फर्म के अनिवार्य विघटन की कोई 1 दशा बताइए।

(5) फर्म के विघटन पर साझेदार का ऋण किस खाते में अंतरित करते हैं?

(6) फर्म के सांयोगिक विघटन की कोई 1 दशा बताइए।

(7) वसूली खाता फर्म के जीवन में कितनी बार बनाया जा सकता है?

(8) अलिखित संपत्ति से प्राप्त रकम को किस खाते में जमा किया जाता है?

(9) कौनसा खाता केवल फर्म के विघटन पर ही बनाया जा सकता है?

(10) वसूली खाता किस प्रकृति का खाता है?

उत्तर– (1) फर्म के समापन पर, (2) पुस्तक मुल्य, (3) वसूली खाता, (4) फर्म का व्यापार अवैध होना, (5) रोकड़, (6) सभी साझेदारों का दिवालिया होना, (7) एक बार, (8) वसूली खाते में, (9) वसूली खाता, (10) नाममात्र।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर :

प्रश्न 1. वसूली खाता को समझाइए।

उत्तर– साझेदारी फर्म के विघटन पर फर्म की सम्पत्तियां एवं दायित्वों के खाते बंद करने के लिए फर्म की सम्पत्तियों के विक्रय से प्राप्त राशि एवं दायित्वों के भुगतान का लेखा करने के लिए बनाया जाने वाला खाता वसूली खाता कहलाता है। यह नाममात्र का खाता है।

प्रश्न 2. फर्म के विघटन से क्या आशय है?

उत्तर–भारतीय साझेदारी अधिनियम, 1932 की धारा 39 का आदेश है कि जब किसी फर्म के सभी साझेदारों के बीच साझेदारी समाप्त हो जाय तो इसे फर्म के विघटन की संज्ञा दी जाती है। दूसरे शब्दों में, जब फर्म का व्यापार समाप्त हो जाता है तो इसे फर्म का अन्त या विघटन माना जाता है। सभी साझेदार फर्म को न चलाने का निर्णय ले लें या साझेदारों की संख्या घटकर केवल एक रह जाय तो फर्म का विघटन हो जाता है। फर्म के विघटन के परिणामस्वरुप फर्म का अस्तित्व समाप्त हो जाता है ।

प्रश्न 3. किसी भी चार स्थितियों का साझा कर जब एक साझेदारी फर्म को अनिवार्य रूप से भंग किया जा सकता है?

त्तर– अनिवार्य विघटन (Compulsory Dissolution)– धारा 41 के अनुसार निम्नलिखित दशाओं में फर्म का अनिवार्य विघटन हो जाता है–

(1) जब समस्त साझेदार या एक को छोड़कर समस्त साझेदार दिवालिया घोषित हो जायें।

(2) जब ऐसी कोई घटना हो जाय जिसके फलस्वरूप फर्म के व्यवसाय का संचालन अवैध हो जाता है।

(3) जब साझेदारों की संख्या 50 से अधिक हो जाती है।

प्रश्न 4. साझेदारी फर्म के विघटन से क्या आशय है?

उत्तर– भारतीय साझेदारी अधिनियम की धारा 32 के अनुसार– ''फर्म के समस्त साझेदारों के मध्य साझेदारी समाप्त होने को साझेदारी फर्म का विघटन कहते हैं। विघटन पर फर्म की सभी सम्पत्तियों का विक्रय कर प्राप्त राशि से दायित्वों का भुगतान कर दिया जाता है।

प्रश्न 5. फर्म के विघटन के समय चिट्ठे से वसूली खाते में किन खातो को अंतरित नहीं किया जाता है?

उत्तर– (1) रोकड़ खाता

(2) बैंक खाता

(3) साझेदारो के ऋण खाते।

(4) साझेदारों के पूँजी खाते।

प्रश्न 6. विघटन के समय कौन से खाते तैयार किए जाते हैं? समझाइए।

उत्तर–फर्म के विघटन की दशा में मुख्य रूप से निम्नलिखित खाते खोले जाते हैं–

(1) वसूली खाता

(2) साझेदारों के पूँजी खाते

(3) साझेदारों के चालू खाते (यदि पूँजी स्थिर हो)

(4) साझेदार या बाहरी व्यक्ति का ऋण खाता

(5) लेनदारों का खाता

(6) संचय कोष खाता

(7) संयुक्त बीमा पॉलिसी फण्ड खाता

(8) रोकड़ या बैंक खाता आदि।

साझेदारों की पूँजी स्थिर होने की दशा में लाभ/हानि संबंधी व्यवहार उनके चालू खातों में हस्तान्तरित होंगे और पूँजी परिवर्तनशील होने की दशा में उनके पूँजी खातों में हस्तान्तरित होंगे। यदि चिट्ठे में चालू खातों का कोई शेष नहीं दर्शाया गया हो तो सदैव यह मानना चाहिए कि पूँजी परिवर्तनशील है।

प्रश्न 7. फर्म के आकस्मिक समापन से क्या आशय है?

उत्तर– आकस्मिक विघटन– धारा 42 के अनुसार साझेदारों के मध्य किसी विपरीत ठहराव के अभाव में, निम्नलिखित स्थितियों में फर्म का विघटन हो जाता है–

(1) जब फर्म का निर्माण किसी निश्चित अवधि के लिए हुआ हो तो ऐसी अवधि की समाप्ति पर।

(2) जब फर्म किसी एक या अनेक संयुक्त साहस को पूरा करने के लिए निर्मित की गई हो तो ऐसे संयुक्त साहस के पूर्ण हो जाने पर।

(3) जब किसी साझेदार की मृत्यु हो जाए।

(4) जब किसी साझेदार को दिवालिया घोषित कर दिया गया हो।

प्रश्न 8. फर्म के अनिवार्य विघटन से क्या आशय है?

उत्तर– अनिवार्य विघटन– धारा 41 के अनुसार निम्नलिखित दशाओं में फर्म का अनिवार्य विघटन हो जाता है–

(1) जब समस्त साझेदार या एक को छोड़कर समस्त साझेदार दिवालिया घोषित हो जायें।

(2) जब ऐसी कोई घटना हो जाए जिसके फलस्वरूप फर्म के व्यवसाय का संचालन अवैध हो जाता है।

(3) जब साझेदारों की संख्या 50 से अधिक हो जाती है।

प्रश्न 9. फर्म के समापन के प्रभाव दर्शाइए।

उत्तर– साझेदारी फर्म के विघटन का मुख्य प्रभाव यह होता है कि जिस व्यवसाय के लिये फर्म का गठन किया गया था, वह व्यवसाय बन्द हो जाता है। साझेदारों के फर्म के साथ सम्बन्ध समाप्त हो जाते हैं। फर्म की सम्पत्तियों का विक्रय कर दिया जाता

@MP_BOARD_25 (Telegram)

है तथा वसूल हुई राशि से फर्म के दायित्वों का भुगतान कर दिया जाता है। तीसरे पक्षकारों के दावों का तथा साझेदारों के दावों का निपटारा कर दिया जाता है। साझेदारी फर्म का विघटन हो जाने पर विघटन की सार्वजनिक सूचना देने के पश्चात् साझेदारों के तीसरे पक्षकारों के साथ दायित्व समाप्त हो जाते हैं। अर्थात् किसी भी साझेदार को व्यक्तिगत रूप से दायी नहीं ठहराया जा सकता। लेनदारों तथा बाहरी दायित्वों के भुगतान के बाद फर्म के पास रोकड़ शेष रहती है तो उसका वितरण साझेदारों में उनके लाभ-विभाजन अनुपात में कर दिया जाता है। यदि विघटन पर हानि हो तो साझेदार आवश्यक धन राशि लाकर फर्म को देंगे। जब तक विघटन की सार्वजनिक सूचना जारी नहीं हो जाती, तब तक विघटित फर्म के साझेदार तीसरे पक्षकारों के प्रति उत्तरदायी बने रहेंगे। अर्थात् विघटन के पूर्व से लगाकर विघटन की सार्वजनिक सूचना जारी करने की तिथि तक किये गये कार्यों के लिये साझेदारों का दायित्व बना रहेगा। किन्तु यह बात मृतक, दिवालिये तथा निवृत्त साझेदार के लिये लागू नहीं होगी। अर्थात् ऐसी दशा में सार्वजनिक सूचना आवश्यक नहीं होती है। यदि साझेदारी फर्म की सम्पत्तियाँ फर्म के दायित्वों का भुगतान करने के लिये पर्याप्त नहीं हों तो फर्म के लेनदारों को यह अधिकार रहता है कि वे साझेदारों की व्यक्तिगत सम्पत्ति से अपने दायित्वों का भुगतान प्राप्त कर लें, यदि साझेदारों के व्यक्तिगत दायित्वों का भुगतान पहले से ही कर दिया गया हो।

प्रश्न 10. फर्म का समझौते द्वारा समापन से क्या आशय है?

उत्तर– समझौते द्वारा विघटन (Dissolution by Agreement)- धारा 40 में कहा गया है कि जब सभी साझेदार परस्पर सहमति से यह तय कर लेते हैं कि फर्म का अन्त कर दिया जाय तो ऐसी दशा में फर्म का अन्त हो जाता है।

प्रश्न 11. फर्म के समापन पर विभिन्न संपत्तियों तथा बाहरी दायित्वों के शेष वसूली खाते के किस पक्ष में अंतरित करते हैं?

उत्तर– इस खाते के डेबिट पक्ष में सम्पत्तियों के खातों (रोकड़, बैंक, साझेदारों के आहरण को छोड़कर) की राशियाँ चिट्ठे में दर्शाए पुस्त मूल्य पर (On book value) लिखी जाती हैं। इस खाते के क्रेडिट पक्ष में फर्म के बाह्य दायित्व (पूँजी, अवितरित लाभ, संचय को छोड़कर) की राशियाँ चिट्ठे में दर्शाए पुस्तमूल्य पर लिखी जाती है। सम्पत्तियों की बिक्री पर प्राप्त नकद राशियाँ तथा साझेदारों द्वारा स्वयं ली गई सम्पत्तियों को इस खाते के क्रेडिट पक्ष में दर्शाया जाता है।

इसी प्रकार दायित्वों के भुगतान की राशि, वसूली के व्यय की राशि तथा साझेदारों द्वारा स्वयं लिए गए दायित्वों की राशि इस खाते के डेबिट पक्ष में दर्शायी जाती है। जो सम्पत्ति चिट्ठे में लिखने से छूट गई हो, उसके विक्रय से प्राप्त होने वाली राशि क्रेडिट पक्ष में लिखी जाएगी। इसी प्रकार चिट्ठे में जो दायित्व लिखने से छूट गए हों, उनके भुगतान की राशि इस खाते के डेबिट पक्ष में दर्शायी जाएगी।

प्रश्न 12. साझेदारी का सुचना द्वारा विघटन से आप क्या समझते हैं?

उत्तर– सूचना द्वारा विघटन (Dissolution by Notice)- ऐच्छिक साझेदारी की दशा में किसी भी साझेदार द्वारा विघटन का नोटिस देने पर फर्म का समापन हो जाना (भारतीय साझेदारी अधिनियम, 1932 की धारा 42 के अन्तर्गत)

प्रश्न 13. साझेदारी फर्म के विघटन पर बैंक अधिविकर्ष और साझेदारों के ऋण को चिट्ठे के किस खाते में अंतरित किया जाता है?

उत्तर– साझेदारी फर्म के विघटन पर बैंक अधिविकर्ष एवं साझेदारों के ऋण खाते का रोकड़ खाते अंतरित किया जाता है।

@MP_BOARD_25(Telegram)

प्रश्न 14. फर्म के विघटन पर परिसंपत्तियों के वसूली खाते में अंतरण पर क्या प्रविष्टि की जाती है?

उत्तर– इसके लिए निम्न जर्नल प्रविष्टि की जाती है–

वसूली खाता	नाम	Realisation a/c	Dr.
सम्पत्ति खाते से		To Assets a/c	
(विभिन्न सम्पत्तियाँ वसूली खाते में हस्तान्तरित की)		(Transfer of various assets to realisation account)	

▸ विशेष : 1. सम्पत्तियों का पुस्त मूल्य (न कि वसूली योग्य मूल्य) लिखा जाना चाहिए। यदि फर्म का विघटन इसके व्यापार को बेच देने के कारण हो रहा हो तो किसी विपरीत सूचना के अभाव में, रोकड़ शेष तथा बैंक शेष भी वसूली खाते में हस्तान्तरित कर दिये जाते हैं, अन्य दशा में नहीं।

2. चिट्ठे में देनदारों को संदिग्ध ऋण संचय घटाकर दर्शाया गया हो तो देनदारों की सकल राशि ही वसूली खाते में हस्तान्तरित करनी चाहिए तथा संचय की राशि दायित्व की भाँति हस्तान्तरित करनी चाहिए।

प्रश्न 15. फर्म के विघटन पर बाहरी दायित्वों के वसूली खाते में अंतरण की क्या जर्नल प्रविष्टि होगी।

उत्तर– दायित्व के खाते बन्द करना **(Closing of liabilities accounts)** – फर्म के बाह्य दायित्वों (लेनदार, ऋण, देय विपत्र, अदत्त व्यय, संदिग्ध ऋण संचय, कर के लिए प्रावधान, कर्मचारी पेंशन तथा भविष्य निधि फण्ड तथा अन्य दायित्व) को वसूली खाते में हस्तान्तरित करके उनके खाते बन्द कर दिये जाते हैं। ध्यान रहे, साझेदारों के ऋण, पूँजी खाते, चालू खाते संचय एवं कोष तथा अवितरित लाभालाभ शेष वसूली खाते में हस्तान्तरित नहीं किये जाते हैं। बाह्य दायित्वों के हस्तान्तरण के संबंध में निम्न जर्नल प्रविष्टि की जाती है–

दायित्वों के खाते	नाम	Liabilities a/c	Dr.
वसूली खाते से		To Realisation a/c	
(विभिन्न सम्पत्तियाँ वसूली खाते में हस्तान्तरित की)		(Transfer of various liabilities to realisation account)	

प्रश्न 16. साझेदारी फर्म के विघटन के लिए न्यायालय किस आधार पर कोई भी आदेश दे सकता है?

उत्तर– न्यायालय के आदेश द्वारा विघटन (Dissolution by order of the court)–धारा 44 के अनुसार, किसी साझेदार द्वारा न्यायालय में वाद प्रस्तुत करने पर न्यायालय निम्न में से किसी भी आधार पर फर्म के विघटन का आदेश दे सकता है–

(1) किसी साझेदार का पागल या अस्वस्थ मस्तिष्क का हो जाना।

(2) स्थायी रूप से अयोग्य हो जाने के कारण किसी साझेदार द्वारा अपने कर्तव्यों को पूरा नहीं कर पाना।

(3) किसी साझेदार को ऐसे दुराचरण का दोषी हो जाने पर जिससे व्यापार का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता हो।

(4) किसी साझेदार द्वारा साझेदारी ठहराव भंग करने पर।

(5) किसी साझेदार द्वारा फर्म में अपने हित का हस्तान्तरण अन्य व्यक्ति को करने पर।

(6) व्यवसाय संचालन में निरन्तर हानि होने पर।

(7) अन्य कोई न्यायोचित आधार हो।

प्रश्न 17. फर्म के विघटन का फर्म की पुस्तकों पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर– फर्म के विघटन के साथ फर्म की पुस्तके बन्द कर दी जाती है।

@MP_BOARD_25(Telegram)

प्रश्न 18. फर्म के विघटन पर एक अलिखित संपत्ति 10,000 रु. की एक साझेदार "अ" ने ली, इसके संबंध में वसूली खाते और साझेदारों के पूँजी खाते में कहाँ और क्या लेखा होगा?

उत्तर– वसूली खाते को संपत्ति के मुल्य से क्रेडिट तथा साझेदार के पूँजी खाते को डेबिट किया जाएगा।

प्रश्न 19. एक फर्म (जिसमें राम और श्याम बराबर के साझेदार थे) के विघटन के समय उसकी वास्तविक संपत्तियों का योग 1,00,000 रु. और बाहरी दायित्वों का योग 30,000 रु. था संपत्तियों से 90,000 रु. प्राप्त हुये। वसूली खाता बनाइए।

उत्तर–

वसूली खाता

	रुपये				रुपये
संपत्तियाँ	1,00,000	बाहरी दायित्व			30,000
रोकड़ खाता	30,000	रोकड़ खाता			90,000
		पूँजी खाते	राम	5,000	
			श्याम	5,000	10,000
	1,30,000				1,30,000

प्रश्न 20. साझेदारी फर्म के विघटन के लिए न्यायालय किस आधार पर कोई भी आदेश दे सकता है?

उत्तर– न्यायालय के आदेश द्वारा विघटन (Dissolution by order of the court)–धारा 44 के अनुसार, किसी साझेदार द्वारा न्यायालय में वाद प्रस्तुत करने पर न्यायालय निम्न में से किसी भी आधार पर फर्म के विघटन का आदेश दे सकता है–

(1) किसी साझेदार का पागल या अस्वस्थ मस्तिष्क का हो जाना।

(2) स्थायी रूप से अयोग्य हो जाने के कारण किसी साझेदार द्वारा अपने कर्तव्यों को पूरा नहीं कर पाना।
(3) किसी साझेदार को ऐसे दुराचरण का दोषी हो जाने पर जिससे व्यापार का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता हो।
(4) किसी साझेदार द्वारा साझेदारी ठहराव भंग करने पर।
(5) किसी साझेदार द्वारा फर्म में अपने हित का हस्तान्तरण अन्य व्यक्ति को करने पर।
(6) व्यवसाय संचालन में निरन्तर हानि होने पर।
(7) अन्य कोई न्यायोचित आधार हो।

उत्तर– प्रश्न 21. फर्म के सभी साझेदारों ने फर्म के विघटन की इच्छा व्यक्त की। मोहन एक साझेदार 20,000 रु. के ऋण को साझेदारों की पूँजी भुगतान से पहले भुगतान चाहता है। लेकिन सोहन एक अन्य साझेदार पूँजी का भुगतान मोहन के ऋण के भुगतान के पहले चाहता है। कारण बताते हुए उनके बीच उपस का सुझाव दे।

उत्तर– साझेदारों को (मोहन/सोहन) को पहले बाहरी दायित्वों के भुगतान के पश्चात भुगतान किया जायेगा। साझेदारों को पहले ऋण का भुगतान किया जायेगा। तत्पश्चात उनके पूँजी की राशि का भुगतान किया जायेगा।

प्रश्न 22. ऐच्छिक साझेदारी का विघटन कैसे किया जा सकता है?

उत्तर– भारतीय साझेदारी अधिनियम की धारा 43 के अनुसार- जब साझेदारी ऐच्छिक हो तो कोई भी साझेदार फर्म के विघटन की सूचना दूसरे साझेदार को देकर साझेदारी फर्म का विघटन करवा सकता है।

प्रश्न 23. निम्न में से प्रत्येक दशा में फर्म का विघटन किस रीति से होगा–

(i) सभी साझेदारों के दिवालिया होने पर.
(ii) वह कार्य जिसके लिए साझेदारी की गयी थी पूर्ण हो जाने पर

उत्तर– (1) अनिवार्य विघटन
(2) अवधिपूर्ण होने पर (समझौते द्वारा समापन माना जायेगा)

प्रश्न 24. फर्म के विघटन पर दायित्वो के भुगतान का क्रम बताइए।

उत्तर– साझेदारी फर्म की सम्पत्ति का प्रयोग निम्नलिखित क्रम एवं रीति से किया जाएगा-
(1) तीसरे पक्षकारों के ऋण चुकाने के लिए।
(2) प्रत्येक साझेदार के ऋण को चुकाने के लिए, जो कि उसने फर्म को दिया है।
(3) आनुपातिक रूप से प्रत्येक साझेदार की पूँजी वापस करने के लिए।
शेष रकम यदि कोई बचती है, तो साझेदारी के मध्य उनके लाभ-हानि के अनुपात में बाँट दिया जाएगा।

प्रश्न 25. क्या होगा यदि फर्म के विघटन पर कोई साझेदार स्वयं की पूँजी की कमी के भुगतान में असमर्थ हो?

उत्तर– हानियों का भुगतान (Payment of losses)- फर्म की समस्त हानियाँ (किसी साझेदार के हिस्से की पूँजी की कमी सहित) सर्वप्रथम लाभों में से, तत्पश्चात् पूँजी में से और अन्त में आवश्यकता पड़ने पर साझेदारों द्वारा व्यक्तिगत रूप से उनके लाभालाभ विभाजन अनुपात में नकद लाकर पूरी की जायेगी।

प्रश्न 26. क्या होगा जब ऐसा आभास हो जाए की साझेदारी फर्म का व्यवसाय निरंतर हानि में ही चलेगा?

उत्तर– जब ऐसा आभास हो जाये कि साझेदारी फर्म का व्यवसाय निरंतर हानि में ही चलेगा तो सभी साझेदार आपस में मिलकर सहमति से फर्म को समापन कर सकते है।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 27. वसूली खाता और पूनर्मूल्यांकन खाते में अंतर कीजिए।

उत्तर– पुनर्मूल्यांकन खाता एवं वसूली खाते में निम्नलिखित अन्तर हैं–

क्र.	अन्तर का आधार	पुनर्मूल्यांकन खाता	वसूली खाता
1.	उद्देश्य	इस खाते का उद्देश्य सम्पत्तियों एवं दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन करना है।	इसका उद्देश्य फर्म के विघटन पर सम्पत्तियों की बिक्री व दायित्वों के भुगतान से होने वाला लाभ या हानि ज्ञात करना है।
2.	बनाने का समय	यह खाता सामान्यतः किसी साझेदार के प्रवेश, अवकाश ग्रहण अथवा मृत्यु होने पर बनाया जाता है।	यह खाता केवल साझेदारी फर्म के विघटन के समय ही बनाया जाता है।
3.	खातों पर प्रभाव	पुनर्मूल्यांकन खाते से सम्पत्तियों एवं दायित्वों के खाते बन्द नहीं होते हैं।	वसूली खाते में जिन सम्पत्तियों एवं दायित्वों का लेखा किया जाता है, उनके खाते बन्द हो जाते हैं।

प्रश्न 28. साझेदारी के विघटन और फर्म के विघटन में अन्तर लिखिए।

उत्तर- साझेदारी के विघटन तथा फर्म के विघटन में निम्नलिखित अन्तर है-

क्र.	अन्तर का आधार	साझेदारी फर्म का समापन	साझेदारी का समापन
1.	व्यवसाय की समाप्ति	इसके समापन से व्यवसाय बन्द हो जाता है।	इसके समापन से व्यवसाय बन्द नहीं होता है।
2.	अनिवार्यता	फर्म के समापन से साझेदारी भी अनिवार्य रूप से समाप्त हो जाती है।	साझेदारी के समापन पर फर्म का समापन अनिवार्य नहीं है।
3.	आपसी संबंध	सभी साझेदारों के आपसी संबंध टूट जाते हैं।	इसमें आपसी संबंधों का विच्छेद नहीं होता है।

प्रश्न 29. साझेदारी के आकस्मिक विघटन तथा अनिवार्य विघटन में दो अंतर लिखिये।

उत्तर- आकस्मिक विघटन (Dissolution on the happening of certain contingency)- धारा 42 के अनुसार साझेदारों के मध्य किसी विपरीत ठहराव के अभाव में, निम्नलिखित स्थितियों में फर्म का विघटन हो जाता है- (i) जब फर्म का निर्माण किसी निश्चित अवधि के लिए हुआ हो तो ऐसी अवधि की समाप्ति पर। (ii) जब फर्म किसी एक या अनेक संयुक्त साहस (Joint Venture) को पूरा करने के लिए निर्मित की गई हो तो ऐसे संयुक्त साहस के पूर्ण हो जाने पर। (iii) जब किसी साझेदार की मृत्यु हो जाय। (iv) जब किसी साझेदार को दिवालिया घोषित कर दिया गया हो।

प्रश्न 30. वसूली खाते का प्रारूप दीजिए।

उत्तर-

वसूली खाते का प्रारूप

Dr. **(Specimen of Realisation A/c)** Cr.

विवरण	राशि	विवरण	राशि
1. विविध सम्पत्तियाँ (पृथक-पृथक, अपने नाम से)	पुस्त मूल्य	1. विविध दायित्व (पृथक-पृथक अपने नाम से)	पुस्त मूल्य
2. रोकड़/बैंक खाता :		2. विशिष्ट कोष : *	
लेनदारों को भुगतान		डूबत ऋण कोष	पुस्त मूल्य
समापन व्यय का भुगतान	चुकाई गई	कर्मचारियों की भविष्य निधि	पुस्त मूल्य
अलिखित दायित्व का भुगतान	राशि का	ह्रास कोष आदि	पुस्त मूल्य
अन्य कोई भुगतान	योग	* (पृथक-पृथक अपने नाम से)	
3. साझेदार का पूँजी/चालू खाता (साझेदार द्वारा दायित्व लेने पर)	निश्चित मूल्य से	3. रोकड़/बैंक खाता (सम्पत्तियों के विक्रय से प्राप्त राशियों के योग से)	शुद्ध प्राप्ति
4. बैंक खाता (साझेदार के ऋण पर प्रीमियम देने पर)	प्रीमियम की रकम	4. साझेदार का पूँजी/चालू खाता (साझेदार द्वारा कोई सम्पत्ति लेने पर)	निश्चित मूल्य से
5. साझेदारों के पूँजी/चालू खाते (पृथक-पृथक नाम से)	वसूली पर लाभ की रकम से	5. साझेदार का ऋण खाता (ऋण भुगतान पर छूट की रकम से)	छूट की रकम
		6. साझेदारों के पूँजी/चालू खाते (पृथक-पृथक नाम से)	वसूली पर हानि की रकम से

प्रश्न 31. फर्म के विघटन पर साझेदारी अधिनियम के अनुसार हिसाब किताब का निबटारा करने के लिए परिसंपत्तियों का किस क्रम में उपयोग किया जा सकता है?

उत्तर- फर्म की सम्पत्तियों से प्राप्त धन तथा साझेदारों द्वारा अपनी पूँजी की कमी के रूप में लाई गई राशियों का वितरण निम्नांकित क्रम में किया जायेगा- (i) फर्म के बाह्य दायित्वों के भुगतान में। (ii) फर्म को साझेदार द्वारा दिये गये ऋण के भुगतान में। (ii) साझेदारों द्वारा अपने लाभालाभ (iv) साझेदारों की पूँजी लाभालाभ अनुपात में समायोजित हो जाने पर पूँजी का भुगतान उनके लाभालाभ अनुपात के अनुसार करने में। (v) शेष राशि साझेदारों में लाभालाभ अनुपात में वितरण करने में। ❑

@MP_BOARD_25 (Telegram)

भाग–2

इकाई–1 कम्पनी लेखे–अंश पूँजी के लिए लेखांकन

■ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर :

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए–

(1) कम्पनी की अधिकृत पूँजी का वह भाग जो जनता के समक्ष बेचने के लिए प्रस्तुत किया जाता है, कहलाता है–

(a) निर्गमित पूँजी (b) याचित पूँजी
(c) प्रार्थित पूँजी (d) संचित पूँजी

(2) अंशों के हरण पर जप्त की गई राशि किस खाते में हस्तांतरित की जाती है–

(a) अंश प्रीमियम खाते में
(b) अंश हरण खाते में
(c) अंश आवेदन खाते में
(d) अंश याचना खाते में

(3) अंशों के पुनः निर्गमन पर दिया गया बट्टा अधिकतम कितना हो सकता है–

(a) 15% (b) 10%
(c) अंश हरण राशि के बराबर
(d) इनमें से कोई नहीं

(4) निम्नलिखित में से किसे मताधिकार प्राप्त है–

(a) ऋणपत्रधारी (b) समता अंशधारी
(c) पूर्वाधिकार अंशधारी (d) इनमें से कोई नहीं

(5) निम्नलिखित में से किसकी लाभांश की दर अनिश्चित है–

(a) ऋणपत्रधारी (b) समता अंशधारी
(c) पूर्वाधिकार अंशधारी (d) इनमें से कोई नहीं

(6) समता अंशधारी होते है–

(a) कम्पनी के ग्राहक (b) कम्पनी के स्वामी
(c) कम्पनी के लेनदार (d) इनमें से कोई नहीं

(7) अंश धारी प्राप्त करते है–

(a) ब्याज (b) लाभांश
(c) कमीशन (d) इनमें से कोई नहीं

(8) निजी कम्पनी के अधिकतम सदस्यों की संख्या कितनी हो सकती है–

(a) 20 (b) 200
(c) 40 (d) 7

(9) जप्त अंशों के पुनर्निर्गमन करने पर अंश हरण खाते का शेष कहाँ स्थानांतरित करते हैं–

(a) अंश पूँजी खाते में
(b) अंश आवंटन खाते में
(c) लाभ–हानि खाते में
(d) पूँजीगत संचय खाते में

(10) ऐसे अंश जिन्हें लाभांश प्राप्ति एवं कम्पनी के समापन पर पूँजी की वापसी का अधिकार पूर्वाधिकारी अंशों के बाद होता है, उसे कहा जात है–

(a) पूर्वाधिकारी अंश (b) समता अंश
(c) अधिकार अंश (d) इनमें से कोई नहीं

(11) जिन अंशों पर लाभांश की दर निश्चित होती है और जिन्हें समापन पर पूँजी की वापसी का पहला अधिकार होता है, वह कहलाते हैं–

(a) समता अंश (b) पूर्वाधिकार अंश
(c) ऋणपत्र (d) इनमें से कोई नहीं

(12) वह पूँजी जिससे अधिक अंशों का निर्गमन नहीं किया जा सकता, कहलाती है–

(a) चुकता पूँजी (b) याचित पूँजी
(c) अधिकृत पूँजी (d) निर्गमित पूँजी

(13) एक कम्पनी ने 10 रु. वाले 10,000 रु. अंश निर्गमित किए। जनता से 12,000 रु. अंशों के लिए आवेदन पत्र प्राप्त हुए, यह कहलाएगा–

(a) याचना (b) अतिअभियान
(c) अल्प अभिदान (d) अवशिष्ट याचना

(14) भारतीय कम्पनी अधिनियम 2013 के अनुसार एक कम्पनी निर्गत कर सकती है–

(a) सिर्फ समता अंश (b) सिर्फ पूर्वाधिकार अंश
(c) समता एवं पूर्वाधिकार अंश
(d) इनमें से कोई नहीं

@MP_BOARD_25 (Telegram)

(15) अंश आवेदन खाता है–

(a) व्यक्तिगत खाता (b) अव्यक्तिगत खाता
(c) वास्तविक खाता (d) नाममात्र का खाता

(16) सार्वजनिक कम्पनी की न्यूनतम एवं अधिकतम सदस्य संख्या है–

(a) 7 और 50 (b) 10 और 20
(c) 7 और असीमित (d) निर्धारित नहीं

(17) अंश हरण के अंश धारी को नोटिस देना होगा–

(a) 10 दिन का (b) 60 दिन का
(c) 14 दिन का (d) 15 दिन का

(18) अंश हरण सम्बंधी लिखित सूचना अंशधारी को कितने दिन पूर्व देनी चाहिए–

(a) 21 दिन (b) 14 दिन
(c) 7 दिन (d) इनमें से कोई नहीं

(19) सार्वजनिक कम्पनी द्वारा अंशों के विक्रय हेतु जारी किए जाने वाला प्रलेख है–

(a) पार्षद सीमा नियम (b) पार्षद अंतर नियम
(c) सारणी 'F' (d) प्रविवरण

(20) पूँजी का भाग जो केवल कम्पनी के समापन के समय माँगा जाता है, कहलाता है–

(a) अधिकृत पूँजी (b) निर्गमित पूँजी
(c) प्रार्थित पूँजी (d) संचित पूँजी

(21) अवशिष्ट याचना पर सारणी 'F' के अनुसार ब्याज की दर होती है–

(a) 6% वार्षिक (b) 10% वार्षिक
(c) 8% वार्षिक (d) 5% वार्षिक

(22) प्रतिभूति प्रीमियम है–

(a) पूँजीगत लाभ (b) आगमगत लाभ
(c) पूँजीगत हानि (d) आगमगत हानि

उत्तर– (1) (a), (2) (b), (3) (c), (4) (b), (5) (c), (6) (b), (7) (b), (8) (b), (9) (d), (10) (c), (11) (b), (12) (c), (13) (b), (14) (c), (15) (d), (16) (c), (17) (c), (18) (d), (19) (d), (20) (d), (21) (b), (22) (a)।

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(1) ..... अंशधारियों को प्रत्येक प्रस्ताव पर मत देने का अधिकार है।

(2) कम्पनी के समापन पर ..... अंशधारियों को पूँजी सबसे पहले लौटाई जाती है।

(3) ..... कम्पनी के वास्तविक स्वामी माने जाते हैं।

(4) जब निर्गमित किए गए अंशों की तुलना में अधिक आवेदन प्राप्त हो तो इसे ..... कहते हैं।

(5) जब अंशों को उसके अंकित मूल्य से अधिक पर जारी किया जाए तो वह ..... पर निर्गमन कहलाता है।

(6) जब अंशों को उसके मूल्य से अधिक मूल्य से कम पर किया जाए तो उसे ..... निर्गमन कहा जाता है।

(7) कम्पनी विधान द्वारा निर्मित एक ..... है।

(8) प्रतिभूति प्रीमियम संचय का शेष कम्पनी के चिट्ठे में ..... की ओर दिखाया जाता है।

(9) अंश जिन पर एक निश्चित प्रतिशत दर पर लाभांश भुगतान किया जाता है ..... कहलाते है।

(10) अंशों के निर्गमन पर प्राप्त प्रीमियम, कम्पनी का ..... लाभ है।

(11) अंश का ..... मूल्य होता है जबकि स्कंध का कोई ..... मूल्य नहीं होता है।

(12) 20 रु. वाला कोई अंश 25 रु. पर जारी किया जाए तो इसे अंश का ..... पर निर्गमन कहते है।

(13) हरण किए गए अंश के पुनर्निर्मंमन पर बट्टे की राशि से ..... खाता डेबिट किया जाता है।

(14) तालिका 'F' के अनुसार अग्रिम याचना पर 12% वार्षिक की दर से ब्याज दिया जाता है।

(15) अंश ..... प्रकार के होते है।

(16) अंश आबंटन खाता ..... खाता होता है।

(17) पार्षद सीमा नियम ..... का उल्लेख करता है।

(18) अशोद्ध ऋणपत्र वे होते हैं जिनका ..... कम्पनी के समापन की दशा में किया जाता है।

उत्तर– (1) समता, (2) पूर्वाधिकार, (3) समता अंशधारी, (4) अति अभिदान, (5) प्रीमियम, (6) बट्टे पर, (7) कृत्रिम–व्यक्ति, (8) दायित्व, (9) पूर्वाधिकार, (10) पूँजीगत, (11) निश्चित्, (12) प्रीमियम, (13) अंश हरण, (14) 12%, (15) दो, (16) अस्थायी, (17) पूँजी, (18) भुगतान।

प्रश्न 3. सही जोड़ी बनाइये–

(I)	(A)	(B)
(1)	कम आवेदन की प्राप्ति	(a) अदत्त याचना
(2)	अवशिष्ट याचना	(b) पूँजीगत संचय
(3)	संचित पूँजी	(c) अल्प अभिदान

@MP_BOARD_25 (Telegram)

(5) [illegible] (e) कम्पनी का समापन

(6) [illegible] (f) [illegible]

उत्तर— [illegible]

(II) (A) — (B)

1. अति अभिदान — (a) पूंजी बाजार की [illegible]
2. [illegible] — (b) कम्पनी के स्वामी
3. समता अंशधारी — (c) पूर्वाधिकार अंश
4. पूर्वाधिकार अंश — (d) [illegible]
5. राष्ट्रीय स्टॉक एक्सचेंज — (e) निर्गमित पूंजी
6. [illegible] — (f) कम्पनी की [illegible]

उत्तर— (1) [illegible] (2) [illegible] (3) [illegible] (4) [illegible] (5) [illegible] (6) [illegible]

(III) (A) — (B)

1. निर्गमित पूंजी — (a) समता अंशधारी
2. लाभांश की दर पूर्वनिर्धारित वाले अंश — (b) अति अभिदान
3. मताधिकार प्राप्त अंशधारी — (c) कम्पनी के समापन पर
4. लाभांश का पूर्वाधिकार — (d) समता अंश
5. अधिक आवेदन प्राप्ति — (e) पूर्वाधिकार अंशधारी

उत्तर— (1) (c) (2) (d) (3) (a) (4) (e) (5) (b)।

प्रश्न 4. सत्य/असत्य लिखिए—

1. अधिकृत [illegible] अंश पूंजी का एक भाग है।
2. अंश स्कन्ध का कोई अंकित मूल्य नहीं होता।
3. समता अंशधारियों को सदैव [illegible] लाभांश देना अनिवार्य है।
4. कम्पनी में अंशधारियों का दायित्व असीमित होता है।
5. अंश प्रीमियम एक पूंजीगत लाभ है।
6. दो याचनाओं के मध्य 15 दिन से कम का अंतर नहीं होना चाहिए।
7. एक सार्वजनिक कम्पनी न्यूनतम अभिदान राशि प्राप्त किए बिना अंशों का आवंटन नहीं कर सकती है।
8. कम्पनी अधिकृत पूंजी से अधिक अंश का निर्गमन कर सकती है।
9. अंशों के निर्गमन पर दिया जाने वाला बट्टा 10% से अधिक नहीं हो सकता है।
10. दो याचनाओं के मध्य न्यूनतम 2 माह का समय होना चाहिए।
11. अंशों की संपूर्ण राशि एक साथ प्राप्त की जा सकती है।
12. अग्रिम याचना प्राप्त होने पर बैंक खाता डेबिट और अग्रिम याचना खाता क्रेडिट किया जाता है।
13. एक निजी कम्पनी प्रविवरण जारी नहीं करती है।
14. अंश प्रीमियम की राशि को चिट्ठे में "संचय व अतिरेक" शीर्षक के अंतर्गत प्रदर्शित किया जाता है।
15. समता अंश पर लाभांश की दर निश्चित होती है।

उत्तर— (1) सत्य, (2) सत्य, (3) सत्य, (4) असत्य, (5) सत्य, (6) असत्य, (7) सत्य, (8) असत्य, (9) सत्य, (10) असत्य, (11) सत्य, (12) सत्य, (13) सत्य, (14) सत्य, (15) असत्य।

प्रश्न 5. एक शब्द/वाक्य में उत्तर लिखिए—

1. निर्गमित अंशों से कम के लिए आवेदन पत्र आए तो ऐसी स्थिति को क्या कहते हैं?
2. कम्पनी की स्थापना करने वाले व्यक्ति को क्या कहते हैं?
3. क्रय प्रतिफल−शुद्ध सम्पत्ति = ?
4. अंकित मूल्य से अधिक मूल्य पर अंशों का निर्गमन कहलाता है।
5. अंकित मूल्य से कम मूल्य पर अंशों का निर्गमन कहलाता है।
6. अंकित मूल्य पर अंशों का निर्गमन कहलाता है।
7. जब अंशों का निर्गमन अंकित मूल्य से अधिक मूल्य पर किया जाए तो आधिक्य राशि क्या कहलाती है?
8. अंश धारी को जो प्रमाण पत्र दिया जाता है, उसे कहते हैं।

उत्तर— (1) अल्पअभिदान, (2) प्रवर्तक, (3) प्रीमियम, (4) प्रीमियम पर निर्गमन, (5) बट्टे पर निर्गमन, (6) सम मुल्य पर, (7) प्रीमियम, (8) अंशपत्र।

◻ अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर :

प्रश्न 1. अंश से क्या आशय है?

उत्तर— प्रत्येक कम्पनी की समस्त पूंजी एक निश्चित राशि के छोटे-छोटे हिस्सों अथवा इकाइयों में विभक्त रहती है। ऐसी प्रत्येक इकाई, जिसमें कम्पनी की पूँजी विभक्त होती है, अंश कहलाती है। संक्षेप में, अंश एक इकाई है, जिसमें कम्पनी की कुल पूंजी बँटी रहती है।

भारतीय कम्पनी अधिनियम के अनुसार, "अंश से तात्पर्य कम्पनी की अंश पूंजी में रहने वाले अंशों से है और जहाँ भी अंशों और स्कन्धों में स्पष्ट अन्तर न हो, वहाँ इसमें स्कन्ध भी शामिल माना जाता है।"

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 2. समता / साधारण अंश से क्या तात्पर्य है?

उत्तर– "समता अंश या साधारण अंश वे अंश होते हैं, जो पूर्वाधिकार अंश नहीं है।" अर्थात जिन अंशों को लाभांश के भुगतान तथा पूँजी के पुनर्भुगतान का पूर्वाधिकार नहीं हो, वे समता अंश कहलाते हैं। जब तक कि पूर्वाधिकार अंशों को ये दोनों अधिकार प्राप्त नहीं हो, तब तक पूर्वाधिकार अंश भी समता अंश ही समझे जाते हैं।

प्रश्न 3. अग्रिम याचना से क्या आशय है?

उत्तर– जब कोई अंशधारी देय राशि से अधिक राशि का भुगतान कम्पनी को आवेदन या आवंटन या याचना पर कर देता है तो ऐसे आधिक्य को याचना की अग्रिम प्राप्ति कहते हैं। ऐसा आधिक्य स्वीकार करने का अधिकार अन्तर्निवियों द्वारा दिया गया है तो कम्पनी अग्रिम राशि स्वीकार कर सकती हैं।

प्रश्न 4. अंशों के हरण से आप क्या समझते है?

उत्तर– अंशों की रकम किस्तों में चुकाने की व्यवस्था होती है तो प्राय: यह पाया जाता है कि कुछ अंशधारी एक या अधिक किस्तों की रकम चुकाने में असमर्थ रहते हैं। ऐसी स्थिति में कम्पनी के पास दो विकल्प रहते हैं–

(अ) दोषी अंशधारी पर अदत्त राशि के लिये वैधानिक कार्यवाही करे या

(ब) दोषी अंशधारी को आवंटित अंशों का हरण कर ले।

अंशों के हरण का अभिप्राय कम्पनी द्वारा अंश की राशि को जब्त कर लेने से है जो संबंधित अंशधारी से प्राप्त हो चुकी है।

प्रश्न 5. निजी कम्पनी को परिभाषित कीजिए।

उत्तर– निजी कम्पनी से आशय– कम्पनी अधिनियम 2013 की धारा 2(68) के अनुसार प्रायवेट कम्पनी से आशय ऐसी कम्पनी से हैं, जो अपने अन्तर्नियमों द्वारा–

(i) अपने अंशों के हस्तान्तरण के अधिकार पर प्रतिबंध लगाती हैं।

(ii) जिसकी सदस्य संख्या कम से कम दो एवं अधिकतम सदस्य संख्या 200 तक सीमित रहती हैं। इस 200 की संख्या की गणना करते समय संयुक्त अंशधारी को एक सदस्य माना जाता हैं।[1]

(iii) कम्पनी के अंशों या ऋण पत्रों की खरीदी के लिए ये जनता को आमंत्रित नहीं कर सकती हैं।

प्रश्न 6. अंशों का समर्पण से क्या आशय है?

उत्तर– जब कोई अंशधारी अपने अंशों पर देय याचनाओं की राशि का भुगतान करने में असमर्थ रहता है और अपनी स्वेच्छा से अंशों पर अपने अधिकार को त्याग कर उन्हें कम्पनी कोक समर्पित करता है, तो इसे अंशों का समर्पण कहते हैं। समर्पित अंशों का लेखा, अंश हरण के लेखे के समान ही किया जाता है। समर्पित अंशों का पुनर्निर्गमन भी किया जाता है।

प्रश्न 7. बकाया मांग से क्या आशय है?

उत्तर– अवशिष्ट याचना– जब कुछ अंशधारी याचना किए हुआ धन कम्पनी को नहीं देते हैं तो उन रकम उनके द्वारा भुगतान हो से रह जाती है उसे अवशिष्ट याचना कहा जाता है। इस पर ब्याज की गणना निर्दिष्ट दर से की जाती है।

प्रश्न 8. प्रतिभूति प्रीमियम रिजर्व का उपयोग लिखिए।

उत्तर– निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इसका उपयोग किया जा सकता है–

(1) कम्पनी के अनिर्गमित अंशों को कम्पनी के सदस्यों में चुकता बोनस अंशों के रूप में निर्गमित करने में।

(2) कम्पनी के प्रारंभिक व्ययों को अपलिखित करने में।

(3) कम्पनी के अंशों का ऋणपत्रों के निर्गमन सम्बन्धी व्यय, कमीशन, छूट आदि को अपलिखित करने में।

(4) शोध्य पूर्वाधिकार अंशों या ऋणपत्रों के शोधन पर देय कमीशन की व्यवस्था करने में।

(5) धारा 68 के अन्तर्गत अपने स्वयं के अंशों या प्रतिभूतियों को करने के लिए। इसे कभी भी पूँजी संचय में हस्तांतरित नहीं किया जा सकता।

प्रश्न 9. अग्रिम मांग से क्या अभिप्राय है?

उत्तर– अग्रिम याचना– जब कोई अंशधारी देय राशि से अधिक राशि का भुगतान कम्पनी को आवेदन या आवंटन या याचना पर कर देता है तो ऐसे आधिक्य को याचना की अग्रिम प्राप्ति कहते हैं। कम्पनी की तालिका अ के अनुसार अग्रिम राशि 6 प्रतिशत वार्षिक दर से कम्पनी द्वारा ब्याज ऐसी राशि प्राप्त होने की तिथि से याचना की राशि देय होने की तिथि तक की अवधि के लिए चुकाया जायेगा।

प्रश्न 10. भागयुक्त एवं अभाग युक्त पूर्वाधिकार अंश क्या है?

उत्तर– भागित पूर्वाधिकार अंश (Participating Preference Shares)– ऐसे पूर्वाधिकार अंश जिन पर एक निश्चित दर के अलावा ज्यादा लाभ होने की दशा में अतिरिक्त लाभांश भी दिया जा सकता है, भागित या भाग्यग्राही पूर्वाधिकार अंश कहलाते हैं।

अभागित पूर्वाधिकार अंश (Non - Participating Preference Shares)– जिन पूर्वाधिकार अंशों पर केवल एक निश्चित दर से

@MP_BOARD_25 (Telegram)

ही लाभांश दिया जाता है एवं कम्पनी के अतिरिक्त लाभ में उनका भाग नहीं रहता है, तो उन्हें अभागित या अभाग्यग्राही पूर्वाधिकार अंश कहते हैं।

प्रश्न 11. शोधनीय एवं अशोधनीय पूर्वाधिकार अंश से क्या आशय है?

उत्तर– विमोचनशील पूर्वाधिकार अंश (Redeemable Preference Shares)– जिन पूर्वाधिकार अंशों का शोधन एक निश्चित अवधि के बाद कर दिया जाता है, उन्हें विमोचनशील पूर्वाधिकार अंश कहते हैं। इन्हें शोध्य पूर्वाधिकार अंश भी कहा जाता है।

अविमोचनशील पूर्वाधिकार अंश ((Non-Redeemable Preference Shares)– ऐसे पूर्वाधिकार अंश जिनका कम्पनी के जीवनकाल में शोधन नहीं किया जा सकता है उन्हें अविमोचनशील पूर्वाधिकार अंश कहते हैं। इन्हें अशोध्य पूर्वाधिकार अंश भई कहा जाता है।

प्रश्न 12. न्यूनतम अभिदान को समझाइए।

उत्तर– न्यूनतम अभिदान– न्यूनतम अभिदान वह राशि होती है, जिसकी प्राप्ति के बिना किसी भी अंश पूँजी का आबंटन नहीं किया जा सकता है। इस राशि का उल्लेख कम्पनी के प्रविवरण में किया जाता है तथा इसकी राशि का निर्धारण करते समय कम्पनी की प्रकृति, आकार व अन्य बातों को ध्यान में रखते हुए सेबी के मार्गदर्शक निर्देशों के अनुसार न्यूनतम अभिदान की राशि कम्पनी द्वारा निर्गमित की गई रकम के 90 प्रतिशत से कम नहीं होना चाहिए।

प्रश्न 13. संचित पूँजी क्या होती है।

उत्तर– प्रार्थित पूँजी का वह भाग जो कम्पनी द्वारा कम्पनी के समापन पर मंगाया जाता है।

प्रश्न 14. अंश प्रीमियम से क्या आशय है?

उत्तर– जब कोई कम्पनी अपने अंश अंकित मूल्य से अधिक मूल्य पर निर्गमित करती है तो इस प्रीमियम मूल्य कहा जायगा। उदाहरणार्थ– 100 रु. के अंकित मूल्य का निर्गमन यदि 110 रु. की दर से किया जाता है तो यह प्रीमियम मूल्य कहलाएगा और प्रीमियम की राशि प्रति अंश 10 रु. (110–100) होगी।

प्रश्न 15. समता अंश किसे कहते है?

उत्तर– समता या साधारण अंशों से अभिप्राय उन अंशों से है, जिन पर कम्पनी के विभाजन योग्य लाभ में से लाभांश पूर्वाधिकार अंशों पर लाभांश बाँटने के बाद ही मिलता है। इन पर लाभांश बाँटना अनिवार्य नहीं होता है।

प्रश्न 16. पूर्वाधिकार अंश को समझाइये।

उत्तर– ये कम्पनी के विशिष्ट अंश होते हैं। ये अंश पूँजी के वे भाग हैं, जिन पर अंशधारियों को कुछ विशेष पूर्वाधिकार प्राप्त होते हैं। इन पर एक निश्चित प्रतिशत से लाभांश भुगतान किया जाता है। इसके अलावा कम्पनी के समापन के समय पूर्वाधिकार अंशधारियों को पूँजी वापस करने में प्राथमिकता दी जाती है। इन्हें अधिमान अंश भी कहते हैं।

प्रश्न 17. पार्षद सीमा नियम क्या होता है?

उत्तर– पार्षद सीमा नियम कम्पनी का सबसे प्रमुख एवं महत्वपूर्ण प्रलेख है।यह कम्पनी अधिनियम के अन्तर्गत स्थापित कम्पनी की शक्तियों की सीमाओं की व्याख्या करता है। इसमें कम्पनी के कार्यक्षेत्र का दिग्दर्शन होता है। कम्पनी केवल उन्हीं कार्यों को कर सकती है, जो इसमें दिए रहते हैं। इस प्रकार यह प्रलेख कम्पनी तथा बाहरी लोगों के सम्बन्ध को निश्चित करता। इसे कम्पनी का उद्देश्य पत्र भी कहते हैं। इसमें आसानी से परिवर्तन नहीं किया जा सकता है।

प्रश्न 18. न्यूनतम अभिदान क्या है?

उत्तर– न्यूनतम अभिदान (Minimum Subscription)– कम्पनी द्वारा निर्गमित पूँजी के उस भाग को न्यूनतम अभिदान कहा जाता है जिसकी प्राप्ति के बिना किसी भी अंश पूंजी का आबंटन नहीं किया जा सकता। न्यूनतम अभिदान की राशि कितनी होगी यह कम्पनी की प्रकृति, आकार आदि पर निर्भर करता है, किन्तु फिर भी यह राशि इतनी अवश्य होनी चाहिए जिससे कि कम्पनी के प्रारंभिक रूप में किये जाने वाले व्ययों के भुगतान की व्यवस्था की जा सके।

प्रश्न 19. स्कन्ध से क्या आशय है?

उत्तर– स्कन्ध– जब कम्पनी को स्कन्ध से सम्बन्धित अंशों पर पूर्ण भुगतान (Full Payment) प्राप्त हो जाता है अर्थात् वे पूर्णदत्त (Fully paid) हो जाते हैं, तब उन्हें स्कन्ध (Stock) में बदला जा सकता है। अत: स्कन्ध का आशय पूर्ण चुकता अंशों की एकत्रित रकम से है, जिन्हें बाद में किसी भी रकम के छोटे–छोटे टुकड़ों में बाँटा जा सकता है ताकि अंश की किसी भी रकम को हस्तांतरित किया जा सके।

प्रश्न 20. सार्वजनिक कम्पनी क्या है।

उत्तर– कम्पनी अधिनियम, 2013 में सार्वजनिक कम्पनी की स्पष्ट परिभाषा नहीं दी हुई है। अधिनियम की धारा 2(71) में इतना ही कहा गया है कि "सार्वजनिक कम्पनी का आशय एक

@MP_BOARD_25(Telegram)

ऐसी कम्पनी से है जो प्रायवेट कम्पनी नहीं है (Public Company means a Company which is not a private company) तथा जिसकी न्यूनतम चुकता पूंजी 5 लाख रुपये या ऐसी अधिक राशि हो, जो निर्धारित की जाय।

प्रश्न 21. निजी कम्पनी क्या है?

उत्तर– निजी कम्पनी से आशय– कम्पनी अधिनियम 2013 की धारा 2(68) के अनुसार प्रायवेट कम्पनी से आशय ऐसी कम्पनी से है, जो अपने अन्तर्नियमों द्वारा–

(i) अपने अंशों के हस्तान्तरण के अधिकार पर प्रतिबंध लगाती हैं।

(ii) जिसकी सदस्य संख्या कम से कम दो एवं अधिकतम सदस्य संख्या 200 तक सीमित रहती हैं। इस 200 की संख्या की गणना करते समय संयुक्त अंशधारी को एक सदस्य माना जाता हैं।[1]

(iii) कम्पनी के अंशों या ऋण पत्रों की खरीदी के लिए ये जनता को आमंत्रित नहीं कर सकती हैं।

प्रश्न 22. अंशो का हरण कब किया जा सकता है?

उत्तर– अंशों की रकम किस्तों में चुकाने की व्यवस्था होती है तो प्राय: यह पाया जाता है कि कुछ अंशधारी एक या अधिक किस्तों की रकम चुकाने में असमर्थ रहते हैं। ऐसी स्थिति में कम्पनी के पास दो विकल्प रहते हैं–

(अ) दोषी अंशधारी पर अदत्त राशि के लिये वैधानिक कार्यवाही करे या

(ब) दोषी अंशधारी को आबंटित अंशों का हरण कर ले।

अंशों के हरण का अभिप्राय कम्पनी द्वारा अंश की राशि को जब्त कर लेने से है जो संबंधित अंशधारी से प्राप्त हो चुकी है।

प्रश्न 23. अंश से क्या आशय है?

उत्तर– कम्पनी की पूँजी छोटी-छोटी इकाइयों में विभाजित होती है, जिन्हें अंश कहते हैं।

प्रश्न 24. कम्पनी की एक परिभाषा दीजिए।

उत्तर– कम्पनी अधिनियम 2013 की धारा 2(20) के अनुसार "कम्पनी उसे कहते हैं जिसका समामेलन इस अधिनियम अथवा इसके पूर्व के किसी कम्पनी अधिनियम के अधीन हुआ है।"

प्रश्न 25. कम्पनी शब्द का क्या अर्थ है?

उत्तर– सामान्य तौर पर कम्पनी व्यक्तियों का एक ऐसा ऐच्छिक एवं वैधानिक संघ है, जिसका निर्माण किसी लाभदायक व्यवसाय के संचालन हेतु किया जाता है। यह वैधानिक दृष्टि से एक कृत्रिम व्यक्ति है जिसका अपना पृथक नाम एवं अपने सदस्यों का पृथक अस्तित्व होता है। इसके सदस्यों का दायित्व प्राय: सीमित होता है। इसकी सार्वमुद्रा (Common Seal) होती है। **इसकी पूँजी छोटी-छोटी इकाइयों में विभाजित होती है, जिन्हें अंश** कहते हैं।

प्रश्न 26. 'कम्पनी एक कृत्रिम व्यक्ति है।' स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– कम्पनी अधिनियम द्वारा निर्मित एक व्यक्ति है। कम्पनी का निर्माण मनुष्यों द्वारा नियमों के तहत किया जाता है, इसलिए इसे कृत्रिम व्यक्ति माना जाता है। प्राकृतिक व्यक्तियों की तरह कम्पनी सम्पत्ति, माल आदि का क्रय-विक्रय कर सकती है, अन्य पक्षों के साथ अनुबंध कर सकती है तथा उन पर मुकदमा भी कर सकती है। कम्पनी की अपने स्वयं की व्यक्ति की भाँति पहचान उसकी सार्वमुद्रा है।

प्रश्न 27. अति अभिदान को समझाइए।

उत्तर– अति अभिदान– जब निर्गमित अंशों से भी अधिक अंशों के लिए आवेदन राशि कम्पनी के पास आती है। तो इसे अत्याधिक (अति) अभिदान कहते हैं। ऐसी दशा में कम्पनी के संचालक आवेदकों को आनुपातिक आवंटन कर सकते हैं। या कुछ आवेदकों को पूर्ण भुगतान, कुछ को इन्कार भी कर सकती है।

प्रश्न 28. संचयी एवं असंचयी पूर्वाधिकार अंशों को समझाइए।

उत्तर– 1. संचयी पूर्वाधिकार अंश (Cumulative Preference Shares)– यदि किसी वर्ष में अपर्याप्त लाभ होने से इन अंशों के धारकों को लाभांश नहीं दिया जा सका है, तो उसका संचय होता रहता है। आगामी वर्षों में मिलने वाले लाभों से इसे पूरा किया जा सकता है, इसलिए उन्हें संचयी पूर्वाधिकार अंश कहते हैं।

2. असंचयी पूर्वाधिकार अंश (Non-Cumulative Preference Shares)– इन अंशों के धारकों को प्रत्येक वर्ष के लाभ में से ही लाभांश दिया जाता है। यदि किसी वर्ष कम्पनी को लाभ प्राप्त नहीं होता है अथवा अपर्याप्त लाभ होता है, तो इन्हें लाभांश नहीं दिया जाता है।

प्रश्न 29. परिवर्तनीय एवं अपरिवर्तनीय पूर्वाधिकार अंशों को समझाइए।

उत्तर– परिवर्तनशील पूर्वाधिकार अंश (Convertible Preference Shares)– ऐसे पूर्वाधिकार अंश, जिन्हें निश्चित शर्तों के अधीन समता अंशों में परिवर्तित किया जा सकता है, परिवर्तनशील या परिवर्तनीय पूर्वाधिकार अंश कहलाते हैं।

अपरिवर्तनशील पूर्वाधिकार अंश (Non-Convertible Preference Shares)– ऐसे पूर्वाधिकार अंश जिनको समता अंशों में परिवर्तित नहीं किया जा सकता है, अपरिवर्तनशील पूर्वाधिकार अंश कहलाते हैं।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 30. जेड लिमिटेड ने 10रु. वाले 30,000, 12% पूर्वाधिकार अंश जनता में निर्गमित किए। सम्पूर्ण राशि एकमुश्त प्राप्त हो गयी। जेड लिमिटेड की पुस्तकों में नकल प्रविष्टियाँ कीजिए।

हल (Solution) :

Journal Entries

Date	Particulars		LF	Dr. Amt.	Cr. Amt.
1.	Bank A/c	Dr.		3,00,000	
	To 12% Preference Share App. A/c				3,00,000
	(Being App. Money Recd.)				
2.	12% Preference share App. A/c	Dr.		3,00,000	
	To 12% Preference Share Capital A/c				3,00,000
	(App. Money transferred to capital A/c)				

प्रश्न 31. एक कम्पनी ने 10 रु. वाले 25,000 जनता में निर्गमित किए। सभी राशियाँ एकमुश्त प्राप्त हो गई। आवश्यक पंजी प्रविष्टी कीजिए।

हल (Solution) :

Journal Entries

Date	Particulars		LF	Dr. Amt.	Cr. Amt.
1.	Bank A/c	Dr.		2,50,000	
	To Share App. A/c				2,50,000
	(App. Money Recd.)				
2.	Share App A/c	Dr.		2,50,000	
	To Share Capital				2,50,000
	(App. Money transferred)				

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 32. XYZ लिमिटेड ने 10रु. वाले 20,000, समता अंश 10% प्रीमियम पर, जनता में निर्गमित किए। सम्पूर्ण राशि एकमुश्त प्राप्त हो गयी। XYZ लिमिटेड की पुस्तकों में नकल प्रविष्टि कीजिए।

हल (Solution) :

Journal Entries

Date	Particulars		LF	Dr. Amt.	Cr. Amt.
1.	Bank A/c	Dr.		2,20,000	
	To Share App. A/c				2,20,000
	(App. Money Recd.)				
2.	Share App A/c	Dr.		2,20,000	
	To Share Capital A/c				2,00,000
	To Securities Pre. Reserve A/c				20,000
	(App. Money transferred to Capital A/c)				

■ विश्लेषणात्मक प्रश्न :

प्रश्न 1. पूर्वाधिकार अंश तथा समता अंश में अन्तर लिखिए।

उत्तर– पूर्वाधिकार अंश तथा समता अंश में अन्तर–

क्र.	अन्तर का आधार	पूर्वाधिकार अंश	समता अंश
1.	लाभांश की दर	एक निश्चित दर से इन पर लाभांश दिया जाता है।	लाभांश की दर अनिश्चित रहती है अर्थात् बदलती रहती है।
2.	लाभांश की निश्चितता	लाभांश प्राय: निश्चित रूप से दिया जाता है।	लाभांश देना अनिवार्य नहीं है।
3.	शोधन	इनका शोधन कम्पनी के जीवन काल में किया जा सकता है।	कम्पनी के जीवन काल में इनका शोधन संभव नहीं।
4.	विशिष्टता	ये विशिष्ट अंश होते हैं।	ये साधारण अंश होते हैं।
5.	मताधिकार	इनके धारकों को केवल अपने हित के मामलों में मताधिकार है।	इनके धारक को सभी प्रकार के मामलों में मताधिकार का अधिकार है।

प्रश्न 2. पार्षद सीमा नियम एवं अन्तर्नियम में अंतर लिखिए।

उत्तर– पार्षद सीमा नियम एवं अन्तर्नियम में अंतर निम्न है–

क्र.	अन्तर का आधार	पार्षद सीमा नियम	पार्षद अन्तर्नियम
1.	विषय सामग्री	यह कम्पनी के उद्देश्यों व अधिकारों को स्थापित करता है।	इसमें सीमा नियम में दिए हुए उद्देश्यों तथा अधिकारों को क्रियान्वित करने के लिए, नियम तथा उपनियम लिखे जाते हैं।
2.	महत्व	यह कम्पनी का प्रमुख प्रलेख है।	यह कम्पनी का सहायक प्रलेख है।
3.	अनिवार्यता	प्रत्येक कम्पनी के लिए इसका बनाना अनिवार्य है।	इसे बनाना केवल अंश सीमित कम्पनियों के लिए अनिवार्य है।
4.	सीमाएँ	यह भारकतीय कम्पनी अधिनियम के अंतर्गत है।	यह भारतीय अधिनियम एवं पार्षद सीमा नियम दोनों के अधीन होता है।
5.	सम्बन्ध	यह कम्पनी तथा इससे सम्बन्ध रखने वाले बाहरी व्यक्तियों के बीच सम्बन्धों को नियंत्रित करता है।	यह कम्पनी के अंशधारियों व अधिकारियों के बीच संबंधों को नियंत्रित करता है।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 3. अंशपत्रधारी एवं ऋणपत्रधारी में अंतर लिखिए।

उत्तर– अंशधारी और ऋणपत्रधारी में अन्तर निम्नलिखित हैं–

क्र.	अन्तर का आधार	अंशधारी	ऋणपत्रधारी
1.	स्थिति	अंशधारी कम्पनी का स्वामी होता है।	ऋणपत्रधारी कम्पनी का लेनदार होता है।
2.	प्रतिफल पर	अंशधारी प्रतिफल में लाभांश पाता है।	ऋणपत्रधारी प्रतिफल में व्याज पाता है।
3.	समापन भुगतान	कम्पनी के समापन पर भुगतान ऋणपत्रधारियों के भुगतान के बाद प्राप्त होता है।	अंशपत्रधारियों के पहले भुगतान मिलता है।
4.	सदस्यता	अंशपत्रधारी कम्पनी के सदस्य होते हैं।	ऋणपत्रधारी कम्पनी के सदस्य नहीं होते हैं।
5.	मताधिकार	अंशधारी को कम्पनी के प्रस्ताव पर मत देने का अधिकार होता है।	ऋणपत्रधारी को मताधिकार नहीं होता है।

प्रश्न 30. जेड लिमिटेड ने 10रु. वाले 30,000, 12% पूर्वाधिकार अंश जनता में निर्गमित किए। सम्पूर्ण राशि एकमुश्त प्राप्त हो गयी। जेड लिमिटेड की पुस्तकों में नकल प्रविष्टियाँ कीजिए।

हल (Solution) :

Journal Entries

Date	Particulars		LF	Dr. Amt.	Cr. Amt.
1	Bank A/c	Dr.		3,00,000	
	To 12% Preference Share App. A/c				3,00,000
	(Being App. Money Recd.)				
2.	12% Preference share App. A/c	Dr.		3,00,000	
	To 12% Preference Share Capital A/c				3,00,000
	(App. Money transfered to capital A/c)				

प्रश्न 31. एक कम्पनी ने 10 रु. वाले 25,000 जनता में निर्गमित किए। सभी राशियाँ एकमुश्त प्राप्त हो गई। आवश्यक पंजी प्रविष्टी कीजिए।

हल (Solution) :

Journal Entries

Date	Particulars		LF	Dr. Amt.	Cr. Amt.
1.	Bank A/c	Dr.		2,50,000	
	To Share App. A/c				2,50,000
	(App. Money Recd.)				
2.	Share App A/c	Dr.		2,50,000	
	To Share Capital				2,50,000
	(App. Money transferred)				

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 32. XYZ लिमिटेड ने 10रु. वाले 20,000, समता अंश 10% प्रीमियम पर, जनता में निर्गमित किए। सम्पूर्ण राशि एकमुश्त प्राप्त हो गयी। XYZ लिमिटेड की पुस्तकों में नकल प्रविष्टि कीजिए।

हल (Solution) :

Journal Entries

Date	Particulars		LF	Dr. Amt.	Cr. Amt.
1.	Bank A/c	Dr.		2,20,000	
	To Share App. A/c				2,20,000
	(App. Money Recd.)				
2.	Share App A/c	Dr.		2,20,000	
	To Share Capital A/c				2,00,000
	To Securities Pre. Reserve A/c				20,000
	(App. Money transferred to Capital A/c)				

▣ विश्लेषणात्मक प्रश्न :

प्रश्न 1. पूर्वाधिकार अंश तथा समता अंश में अन्तर लिखिए।

उत्तर– पूर्वाधिकार अंश तथा समता अंश में अन्तर–

क्र.	अन्तर का आधार	पूर्वाधिकार अंश	समता अंश
1.	लाभांश की दर	एक निश्चित दर से इन पर लाभांश दिया जाता है।	लाभांश की दर अनिश्चित रहती है अर्थात् बदलती रहती है।
2.	लाभांश की निश्चितता	लाभांश प्राय: निश्चित रूप से दिया जाता है।	लाभांश देना अनिवार्य नहीं है।
3.	शोधन	इनका शोधन कम्पनी के जीवन काल में किया जा सकता है।	कम्पनी के जीवन काल में इनका शोधन संभव नहीं।
4.	विशिष्टता	ये विशिष्ट अंश होते हैं।	ये साधारण अंश होते हैं।
5.	मताधिकार	इनके धारकों को केवल अपने हित के मामलों में मताधिकार है।	इनके धारक को सभी प्रकार के मामलों में मताधिकार का अधिकार है।

प्रश्न 2. पार्षद सीमा नियम एवं अन्तर्नियम में अंतर लिखिए।

उत्तर– पार्षद सीमा नियम एवं अन्तर्नियम में अंतर निम्न है–

क्र.	अन्तर का आधार	पार्षद सीमा नियम	पार्षद अन्तर्नियम
1.	विषय सामग्री	यह कम्पनी के उद्देश्यों व अधिकारों को स्थापित करता है।	इसमें सीमा नियम में दिए हुए उद्देश्यों तथा अधिकारों को क्रियान्वित करने के लिए, नियम तथा उपनियम लिखे जाते हैं।
2.	महत्व	यह कम्पनी का प्रमुख प्रलेख है।	यह कम्पनी का सहायक प्रलेख है।
3.	अनिवार्यता	प्रत्येक कम्पनी के लिए इसका बनाना अनिवार्य है।	इसे बनाना केवल अंश सीमित कम्पनियों के लिए अनिवार्य है।
4.	सीमाएँ	यह भारकतीय कम्पनी अधिनियम के अंतर्गत है।	यह भारतीय अधिनियम एवं पार्षद सीमा नियम दोनों के अधीन होता है।
5.	सम्बन्ध	यह कम्पनी तथा इससे सम्बन्ध रखने वाले बाहरी व्यक्तियों के बीच सम्बन्धों को नियंत्रित करता है।	यह कम्पनी के अंशधारियों व अधिकारियों के बीच संबंधों को नियंत्रित करता है।

©MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 3. अंशपत्रधारी एवं ऋणपत्रधारी में अंतर लिखिए।

उत्तर– अंशधारी और ऋणपत्रधारी में अन्तर निम्नलिखित हैं–

क्र.	अन्तर का आधार	अंशधारी	ऋणपत्रधारी
1.	स्थिति	अंशधारी कम्पनी का स्वामी होता है।	ऋणपत्रधारी कम्पनी का लेनदार होता है।
2.	प्रतिफल पर	अंशधारी प्रतिफल में लाभांश पाता है।	ऋणपत्रधारी प्रतिफल में ब्याज पाता है।
3.	समापन भुगतान	कम्पनी के समापन पर भुगतान ऋणपत्रधारियों के भुगतान के बाद प्राप्त होता है।	अंशपत्रधारियों के पहले भुगतान मिलता है।
4.	सदस्यता	अंशपत्रधारी कम्पनी के सदस्य होते हैं।	ऋणपत्रधारी कम्पनी के सदस्य नहीं होते हैं।
5.	मताधिकार	अंशधारी को कम्पनी के प्रस्ताव पर मत देने का अधिकार होता है।	ऋणपत्रधारी को मताधिकार नहीं होता है।

प्रश्न 4. कम्पनी की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर– कम्पनी की विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं–

1. **कृत्रिम व्यक्ति** (An Artificial Person) – कम्पनी विधान द्वारा निर्मित एक कृत्रिम व्यक्ति है। यह समस्त व्यक्ति की तरह सम्पत्ति का क्रय-विक्रय, अन्य पक्ष के साथ अनुबन्ध कर उन पर वाद प्रस्तुत कर सकती है। यह अपने अधिकारों एवं दायित्वों के निर्वाहन में सर्वमुद्रा (Common Seal) लगाकर कोई कार्य करती है तो वही कार्य कम्पनी द्वारा किया गया कार्य माना जाता है।

2. **सीमित दायित्व** (Limited Liability) – कम्पनी के सदस्यों अंशधारियों का दायित्व उनके द्वारा खरीदे गये अंशों तक ही सीमित रहता है। कम्पनी के एक वैधानिक व्यक्ति होने के कारण अपने ऋणों के भुगतान के लिए वह स्वयं उत्तरदायी होती है।

3. **शाश्वत या स्थायी अस्तित्व**– कम्पनी का जीवन स्थायी प्रकृति का होता है। कम्पनी सदस्यों की मृत्यु, अंशों के हस्तान्तरण, सदस्यों के दिवालिया होने पर उसके अस्तित्व पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

4. **प्रतिनिधिक व्यवस्था**– कम्पनी का प्रबंध प्रतिनिधि प्रणाली के होता है। कम्पनी के अंशधारी साधारण सभा में अपने में से ही कुछ व्यक्तियों को चुनते हैं और इन्हें कम्पनी के व्यवसाय संचालन का अधिकार देते हैं।

प्रश्न 5. पूर्वाधिकार अंशों के तीन प्रकार समझाइए।

उत्तर– 1. **संचयी पूर्वाधिकार अंश** (Cumulative Preference Shares)– यदि किसी वर्ष में अपर्याप्त लाभ होने से इन अंशों के धारकों को लाभांश नहीं दिया जा सका है, तो इनका संचय होता रहता है। आगामी वर्षों में मिलने वाले लाभों से इसे पूरा किया जा सकता है, इसलिए इन्हें संचयी पूर्वाधिकार अंश कहते हैं।

2. **असंचयी पूर्वाधिकार अंश** (Non-Cumulative Preference Shares) – इन अंशों के धारकों को प्रत्येक वर्ष के लाभ में से ही लाभांश दिया जाता है। यदि किसी वर्ष कम्पनी को लाभ प्राप्त नहीं होता है अथवा अपर्याप्त लाभ होता है, तो इन्हें लाभांश नहीं दिया जाता है।

3. **भागयुक्त पूर्वाधिकार अंश** (Participating Preference Shares)– निश्चित दर से लाभांश प्राप्त करने के बाद इन अंशों को कम्पनी के अतिरिक्त लाभ (साधारण अंशों को लाभांश आदि देने के बाद बचे हुए लाभ) में से हिस्सा प्राप्त करने का अधिकार होता है।

प्रश्न 6. कम्पनी की पूँजी संरचना पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर– कम्पनी अधिनियम में अंश पूँजी शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में किया गया है, अतः अंश पूँजी को निम्नांकित भागों में विभक्त किया जा सकता है–

1. **अधिकृत पूँजी** (Authorised Capital)– कोई भी कम्पनी अधिकृत पूँजी से अधिक पूँजी निर्गमित नहीं कर सकती है। कम्पनी का रजिस्ट्रेशन इसी पूँजी के आधार पर होता है, अतः इसे 'रजिस्टर्ड पूँजी' (Registered Capital) या अंकित पूँजी (Nominal Capital) भी कहा जाता है।

2. **निर्गमित पूँजी** (Issued Capital)– कम्पनी की अधिकृत पूँजी का वह भाग, जो जनता द्वारा क्रय करने हेतु निर्गमित किया जाता है, निर्गमित पूँजी कहलाता है।

3. **प्रार्थित पूँजी** (Subscribed Capital)– निर्गमित पूँजी का वह भाग जिसे जनता द्वारा ले लिया जाता है, प्रार्थित पूँजी कहलाता है।

4. **याचित पूँजी या माँगी हुई पूँजी** (Called up Capital)– प्रार्थित पूँजी का वह भाग, जो जनता से माँग लिया जाता है, उसे याचित पूँजी या माँगी हुई पूँजी कहते हैं।

5. **अयाचित पूँजी या न माँगी गई पूँजी** (Uncalled Capital)– प्रार्थित पूँजी का वह भाग, जो अभी जनता से माँगा नहीं गया है, अयाचित पूँजी या न माँगी गई पूँजी कहलाता है।

6. **प्रदत्त पूँजी या चुकता पूँजी** (Paid-up Capital)– माँगी हुई पूँजी का वह भाग, जो जनता द्वारा चुका दिया गया है, प्रदत्त पूँजी या चुकता पूँजी कहलाता है।

7. **संचित पूँजी** (Reserve Capital)– सीमित दायित्व वाली कम्पनी एक विशेष प्रस्ताव द्वारा यह निर्णय कर सकती है कि प्रार्थित पूँजी का वह भाग जो माँगा नहीं गया है, केवल कम्पनी के समापन की दशा में ही माँगा जाएगा। उसे संचित पूँजी या आरक्षित पूँजी कहते हैं।

प्रश्न 7. अंशों के हरण एवं समर्पण में अंतर लिखिए।

उत्तर– अंशों के हरण एवं समर्पण में अंतर निम्नलिखित हैं–

क्र.	अन्तर का आधार	अंशों का हरण	अंशों का समर्पण
1.	अर्थ	जब कोई अंशधारी नियत तिथि तक कम्पनी द्वारा अंशों पर माँगी गई राशि का भुगतान करने में असमर्थ रहता है तो ऐसे अंशधारी के अंशों को कम्पनी द्वारा रद्द कर दिया जाता है तथा अंशों पर प्राप्त राशि को जब्त कर लिया जाता है।	कोई भी अंशधारी जब अंशों पर देय याचना राशि का भुगतान करने में असमर्थ हो जाता है तो इस स्थिति में वह अपने धारण किये हुए अंशों पर अपने अधिकारों का त्याग करते हुए उन्हें कम्पनी को लौटा देता है।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

2.	सूचना	अंश हरण करने संबंधी सूचना अंशधारी को 14 दिन पूर्व दी जाती है।	अंशों का हरण चूँकि कम्पनी अपनी इच्छा से करता है, अतः सूचना देने की आवश्यकता नहीं होती है।
3.	इच्छा	अंशों का हरण अंशधारी की इच्छा के विरुद्ध किया जाता है।	जबकि अंशों का समर्पण अंशधारी अपनी इच्छा से कम्पनी के करता है। वह ऐसा करता है।
4.	प्रस्ताव	अंश हरण का प्रस्ताव संचालक मंडल की सभा में पारित किया जाता है।	जबकि अंशों के समर्पण हेतु किसी प्रस्ताव की आवश्यकता नहीं होती है।

प्रश्न 8. अधिकृत पूँजी तथा चुकता पूँजी में अन्तर लिखिए।

उत्तर– अधिकृत पूँजी तथा चुकता पूँजी में अन्तर -

क्र.	अधिकृत पूँजी (Authorised Capital)	चुकता पूँजी (Paid up Capital)
(1)	अधिकृत पूँजी वह पूँजी है, जिसका उल्लेख पार्षद सीमा नियम में होता है।	यह याचित पूँजी का वह भाग है, जिसका भुगतान कम्पनी को प्राप्त हो गया है।
(2)	अधिकृत पूँजी के आधार पर ही स्टॉम्प ड्यूटी निर्धारित की जाती है।	इसके आधार पर स्टॉम्प ड्यूटी का निर्धारण नहीं होता है।
(3)	यह कम्पनी के पंजीयन शुल्क का आधार होती है।	यह पंजीयन शुल्क का आधार नहीं होती है।
(4)	अधिकृत पूँजी में परिवर्तन के लिए पार्षद् सीमा नियम में परिवर्तन जरूरी होता है।	इस पूँजी में परिवर्तनन के लिए पार्षद सीमा नियम में परिवर्तन जरूरी नहीं है।
(5)	यह चुकता पूँजी से अधिक हो सकती है।	यह अधिकृत पूँजी से अधिक नहीं हो सकती।

प्रश्न 9. प्रविवरण के उद्देश्य बतलाइए।

उत्तर– (1) अंश व ऋणपत्र खरीदने के लिए जनता को निमंत्रण देना।
(2) कम्पनी की स्थापना की सूचना जनता को देना।
(3) कम्पनी में धन विनियोग करने के लिए जनता को शर्तों का विवरण देना तथा विश्वास दिलाना।
(4) कम्पनी के संचालकों द्वारा प्रविवरण की सत्यता की जिम्मेदारी लेना।

प्रश्न 10. पूर्वाधिकार अंशों की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर– 1.पूँजी की कमी की सुविधा– पूर्वाधिकार अंशों के निर्गमन की दशा में आवश्यकता पड़ने पर कम्पनी की पूँजी कमी की जा सकती है अर्थात् पूर्वाधिकार अंशों के कारण पूँजी में लोच बनी रहती है।

2. अति पूँजीकरण पर नियंत्रण– पूर्वाधिकार अंशों की दशा में अति पूँजीकरण को नियंत्रित किया जा सकता है। अति पूँजीकरण की दशा में शोधनीय पूर्वाधिकार अंशों का शोधन किया जा सकता है।

3. कम्पनी के प्रबंधन में सुविधा– पूर्वाधिकार अंशधारियों का कम्पनी के प्रबंधन में हस्तक्षेप नहीं होता जो प्रबंधन को विधाजनक बनाती है।

प्रश्न 11. समता अंश की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर– समता अंश या साधारण अंशों में निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं– (1) लाभांश की दर बदलती रहती है।
(2) पूर्वाधिकार अंशधारियों को लाभांश देने के बाद इनको लाभांश मिलता है।
(3) लाभ होने पर प्रति वर्ष लाभांश देना अनिवार्य नहीं है।
(4) कम्पनी के समापन पर इनकी पूँजी का भुगतान सबसे अन्त में होता है।
(5) प्रत्येक प्रस्ताव पर मत देने का अधिकार।
(6) समता अंशधारी कम्पनी के वास्तविक मालिक होते हैं।

©MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 12. अंश एवं स्कन्ध में अन्तर लिखिए।

उत्तर– अंश एवं स्कन्ध में अन्तर–

क्र.	अन्तर का आधार	अंश	स्कंध
1.	उद्देश्य	अंश का मुख्य उद्देश्य पूँजी प्राप्त करना ही होता है।	इसका उद्देश्य अंशधारियों को अपनी राशि को टुकड़ों में बेचने की सुविधा देना होता है।
2.	हस्तांतरण	अंश का हस्तांतरण केवल पूर्ण मूल्य में होता है, अंश का विभाजन नहीं होता।	स्कंध का हस्तांतरण टुकड़ों में भी हो सकता है।
3.	पूर्णदत्तता	अंश का पूर्णदत्त होना आवश्यक नहीं है।	स्कंध सदैव पूर्णदत्त होते हैं।
4.	लोकप्रियता	अंश अधिक लोकप्रिय है।	स्कंध लोकप्रिय नहीं है।

प्रश्न 13. (रिक्त है)

उत्तर– रिक्त है।

प्रश्न 14. अवशिष्ट याचना एवं अग्रिम याचना को समझाइए।

उत्तर– अवशिष्ट याचना से अभिप्राय उस राशि से है, जो अंशधारियों से माँगने के पश्चात् प्राप्त नहीं होती है। जैसे– कम्पनी ने 1,000 अंशों पर ५ रु. प्रति अंश की दर से याचना की। अंशधारियों से 980 अंशों पर याचना की राशि मिल जाती है, किन्तु 20 अंशों पर 5 रु. प्रति अंश से 100 रु. की राशि अंशधारियों द्वारा भुगतान नहीं की जाती है, तो इस राशि को अवशिष्ट याचना कहा जाता है। इसे माँग पर बकाया भी कहते हैं।

पार्षद अन्तर्नियम के निर्धारित प्रावधानों के अनुसार एक कम्पनी अपने अंशधारियों से विभिन्न याचनाओं की राशि अग्रिम (Advanced) के रूप में प्राप्त कर सकती है। जब आवेदक किसी राशि के देय होने पर आवश्यकता से अधिक धनराशि भेजता है, तो धनराशि के आधिक्य को अग्रिम याचना कहते हैं।

प्रश्न 15. पूर्वाधिकार अंशों के प्रकार लिखिए।

उत्तर–**1. संचयी पूर्वाधिकार अंश–** यदि किसी वर्ष में अपर्याप्त लाभ होने से इन अंशों के धारकों को लाभांश नहीं दिया जा सका है, तो उसका संचय होता रहता है। आगामी वर्षों में मिलने वाले लाभों से इसे पूरा किया जा सकता है, इसलिए उन्हें संचयी पूर्वाधिकार अंश कहते हैं।

2. असंचयी पूर्वाधिकार अंश– इन अंशों के धारकों को प्रत्येक वर्ष के लाभ में से ही लाभांश दिया जाता है। यदि किसी वर्ष कम्पनी को लाभ प्राप्त नहीं होता है अथवा अपर्याप्त लाभ होता है, तो इन्हें लाभांश नहीं दिया जाता है।

3. परिवर्तनशील पूर्वाधिकार अंश– ऐसे पूर्वाधिकार अंश, जिन्हें निश्चित शर्तों के अधीन समता अंशों में परिवर्तित किया जा सकता है, परिवर्तनशील या परिवर्तनीय पूर्वाधिकार अंश कहलाते हैं।

4. अपरिवर्तनशील पूर्वाधिकार अंश– ऐसे पूर्वाधिकार अंश जिनको समता अंशों में परिवर्तित नहीं किया जा सकता है, अपरिवर्तनशील पूर्वाधिकार अंश कहलाते हैं।

प्रश्न 16. अंशों के हरण की विधि समझाइए।

उत्तर– **1. सचिव द्वारा सूची तैयार करना–** जो-जो अंशधारी कम्पनी द्वारा माँगी गई याचना राशि का निर्दिष्ट समय के भीतर भुगतान करने में असमर्थ रहते हैं या त्रुटि करते हैं, उनकी एक सूची कम्पनी सचिव द्वारा तैयार कर ली जाती है। यह सूची संचालक मंडल की सभा में प्रस्तुत की जाती है।

2. अंशधारियों को नोटिस भेजना– कम्पनी के अन्तर्नियमों में दिये गये नियमों या तालिका 'F' के नियमों (28 से 34) को ध्यान में रखकर संचालक मंडल यह आदेश देता है कि ऐसे सभी अंशधारियों को नोटिस भेजे जायें जिन्होंने याचना राशि तथा ब्याज (यदि कोई हो) का भुगतान नहीं किया हो।

3. नोटिस में राशि व ब्याज का उल्लेख– इस नोटिस में यह निर्देश दिया जाता है कि अदत्त राशि का भुगतान एक निर्दिष्ट तिथि तक कर दिया जाये। यह तिथि 14 दिन से पूर्व की निर्दिष्ट नहीं की जानी चाहिए। नोटिस में यह भी उल्लेख कर दिया जाता है कि निर्दिष्ट तिथि तक अदत्त राशि तथा ब्याज (यदि कोई हो) का भुगतान नहीं किया गया तो अंशों का हरण कर लिया जायगा।

4. पुनः नोटिस भेजना– इस निर्दिष्ट तिथि तक कोई भुगतान यदि नहीं किया जाता तो पुनः एक नोटिस इसी प्रकार का और भेजा जाता है। यदि इस नोटिस के मिलने के बाद भी सम्बन्धित अंशधारी अदत्त राशि का भुगतान कम्पनी को नहीं करता है तो तत्सम्बन्धी सूचना संचालक मंडल की सभा में दे दी जाती है।

@MP BOARD_25 (Telegram)

5. **संचालक मण्डल द्वारा अंशों का हरण–** संचालक मंडल की सभा ऐसे अंशों का हरण करने सम्बन्धी प्रस्ताव पारित कर देती है। तत्पश्चात सम्बन्धित अंशधारी को सूचना भेज दी जाती है कि उसके अंशों का हरण कर लिया गया है। अतः वह अंश प्रमाण पत्र कम्पनी को लौटा दे।

प्रश्न 17. उन परिस्थितियों का वर्णन करें जिनके अंतर्गत कम्पनी बट्टे पर अंशों का निर्गमन कर सकती है?

उत्तर– अंशों का बट्टे पर निर्गमन कम्पनी निम्न दो दशाओं में कर सकती है–

(i) कम्पनी अपने संचालकों व कर्मचारियों को निर्धारित शर्तों के अनुसार प्रस्वेद समता अंशों (Sweat Equity Shares) के रूप में बट्टे पर निर्गमित कर सकती है।

(ii) किसी वैधानिक समझौते के अन्तर्गत जब कम्पनी के ऋणदाताओं को ऋण के बदले अंश आवंटित किए जाते हैं। यह कार्य भारतीय रिजर्व बैंक के दिशा निर्देशों के अनुसार किया जाता है।

प्रश्न 18. उन उद्देश्यों का वर्णन करें जिनके लिए कम्पनी प्रतिभूति प्रीमियम की राशि का प्रयोग किया जा सकता है?

उत्तर– कम्पनी अधिनियम 2013 की धारा 52 के अन्तर्गत अंश प्रीमियम (प्रतिभूति प्रीमियम) की राशि के उपयोग पर वैधानिक प्रतिबंध है। प्रतिबन्ध का उद्देश्य यह है कि इस राशि को कम्पनी का सामान्य लाभ नहीं माना जाना चाहिए, वरन् इसे कम्पनी के निर्दिष्ट कार्यों में ही प्रयुक्त करना चाहिए।

अंश प्रीमियम की रकम का उपयोग निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु किया जा सकता है–

(1) कम्पनी के प्रारंभिक व्ययों को अपलिखित करने में।

(2) कम्पनी द्वारा दिए अभिगोपन कमीशन के अपलेखन में।

(3) अंशधारियों को बोनस अंश निर्गमित करने में।

(4) पूर्वाधिकार अंशों के शोधन पर देय प्रीमियम के प्रावधान में।

(5) ऋण पत्रों के शोधन पर प्रीमियम देने के लिए।

(6) अपने स्वयं के अंशों या प्रतिभूतियों के क्रय के लिए (धारा 68)

यह उल्लेखनीय है कि धारा 52 के अनुसार प्रीमियम की राशि को प्रतिभूति प्रीमियम खाता (Securities Premium A/c) में हस्तांतरित कर देना चाहिए किन्तु अनुसूची III में वर्णित आर्थिक चिट्ठे में इसे इसका नाम 'प्रतिभूति प्रीमियम संचय' (Securities Premium Reserve) दिया गया है। यद्यपि अधिनियम की धारा के अनुसार 'प्रतिभूति प्रीमियम' (Securities Premium) भी गलत नहीं होगा।

प्रश्न 19. अंशों के हरण की वैध दशाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर– जब अंशों की रकम किस्तों में चुकाने की व्यवस्था होती है तो प्रायः यह पाया जाता है कि कुछ अंशधारी एक या अधिक किस्तों की रकम चुकाने में असमर्थ रहते हैं। ऐसी स्थिति में कम्पनी के पास दो विकल्प रहते हैं– (अ) दोषी अंशधारी पर अदत्त राशि की प्राप्ति के लिए वैधानिक कार्यवाही करे अथवा (ब) दोषी अंशधारी को आवंटित अंशों का हरण कर ले। अंशों के हरण का अभिप्राय कम्पनी द्वारा अंश की उस रकम को जब्त कर लेने से है जो सम्बन्धित अंशधारी से प्राप्त हो चुकी है। अंशों के हरण के संबंध में कम्पनी अधिनियम,2013 की तालिका 'F' के 28 से 34 तक के नियमों को ध्यान में रखना आवश्यक है।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 20. इन्दौर के अमन लिमिटेड ने 6,00,000 रु. का एक भवन, भुवन ट्रेडर्स से खरीदा। उन्होंने 1,00,000 रु. नकद दिए और शेष राशि के लिए 100 रु. वाले 5,000 समता अंश पूर्ण दत्त निर्गमित किए। कम्पनी की बही में जर्नल प्रविष्टियां कीजिए।

हल (Solution) :

Journal Entries

Date	*Particulars*	*LF*	*Dr. Amt.*	*Cr. Amt.*
1.	Building A/c Dr.		6,00,000	
	To Bhuvan Traders			6,00,000
	(Bulding Purchased)			
2.	Bhuvan Traders Dr.		6,00,000	
	To Bank A/c			1,00,000
	To Equity Share Capital A/c			5,00,000
	(Being cash paid & equal share issued)			

प्रश्न 21. राम लिमिटेड ने एक अंशधारी के 10 रु. वाले पूर्णयाचित 50 अंशों को जप्त कर लिया। अंशधारी ने आवेदन पर 3 रु. प्रति अंश तो दे दिए थे लेकिन आवंटन के 3 रु. प्रति अंश व अंतिम याचना के 4 रु. प्रति अंश नहीं दे सका। अंशों के हरण की पंजी प्रविष्टि कीजिए।

हल (Solution) :

Journal Entries

Date	Particulars		LF	Dr. Amt.	Cr. Amt.
1.	Share Capital A/c	Dr		500	
	To Share forfeited A/c				150
	To Call in Arrears A/c				350
	(Being 50 Shares forfeited)				

प्रश्न 22. अ, ब, स लिमिटेड ने 100 रु. वाले 5,000 अंश 10 रु. प्रतिशत प्रीमियम पर निर्गमित किए जो इस प्रकार देय हैं– आवेदन पर 20 रु., आवंटन पर 50 रु. (प्रीमियम सहित) एवं याचना 40 रु. प्रति अंश। कंपनी की पुस्तकों में आवश्यक पंजी प्रविष्टियां कीजिए।

हल (Solution) :

Journal Entries

Date	Particulars		LF	Dr. Amt.	Cr. Amt.
1	Bank A/c	Dr.		1,00,000	
	To Share App. A/c				1,00,000
	(App. Money Recd.)				
2	Share App. A/c	Dr.		1,00,000	
	To Share Capital A/c				1,00,000
	(App. Money Treat. to Capital A/c)				
3.	Share Allotment A/c	Dr.		2,50,000	
	To Share Premium A/c				50,000
	To Share Capital A/c				2,00,000
	(Allot. Money Due)				
4	Bank A/c	Dr.		2,50,000	
	To Share Allotment A/c				2,50,000
	(Allotment Money Recd)				
5.	Share 1st Call A/c	Dr.		2,00,000	
	To Share Capital A/c				2,00,000
	(1st Call money due))				
6.	Bank A/c	Dr.		2,00,000	
	To Share 1st Call A/c				2,00,000
	(1st call money transferred)				

प्रश्न 23. गणेश लिमिटेड ने 100 रु. प्रत्येक के 50,000 समता अंशों का निर्गमन किया जो 25 रु. आवेदन पर 50 रु. आवंटन पर एवं 25 रु. प्रथम एवं अंतिम याचना पर देय है। सभी राशि विधिवत प्राप्त हो गई, इन व्यवहारों को कंपनी के रोजनामचे में अभिलिखित करें।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

हल (Solution) :

Journal Entries

Date	Particulars		LF	Dr. Amt.	Cr. Amt.
1.	Bank A/c To Share App. A/c (App. Money Recd)	Dr.		1,25,000	1,25,000
2.	Share App A/c To Share Capital A/c (App Money transferred)	Dr.		1,25,000	1,25,000
3.	Share Allotment A/c To Share Capital A/c (Allotment Money due)	Dr.		2,50,000	2,50,000
4.	Bank A/c To Share Allotment A/c (Allotment money Reecd)	Dr.		2,50,000	2,50,000
5.	Share Ist Call A/c To Share Capital A/c (Ist Call Money due)	Dr.		1,25,000	1,25,000
6.	Bank A/c To Share Ist Call A/c (Ist call money reecd.)	Dr.		1,25,000	1,25,000

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 24. अमर लिमिटेड की 3,00,000 रु. की अधिकृत पूँजी है, जो कि 10 रु. प्रत्येक अंश के 30,000 अंशों में विभाजित है, से पंजीकृत है। जनता को आमंत्रित की गई जिस पर 4 रु. प्रति अंश आवेदन पर, 3 रु. प्रति अंश आवंटन पर, 3 रु. प्रति अंश प्रथम एवं अंतिम याचना पर देय हैं। इन अंशों पर पूर्ण अभिदान प्राप्त हुआ और सभी राशियाँ प्राप्त की गई, रोजनामचा एवं रोकड़ पुस्तक तैयार करें।

हल (Solution) :

Journal Entries

Date	Particulars		LF	Dr. Amt.	Cr. Amt.
1.	Bank A/c To Equity share application A/c (Application money received)	Dr.		1,20,000	1,20,000
2.	Equity share application A/c To Equity share capital A/c (Allotment money due with premium)	Dr.		1,20,000	1,20,000
3.	Equity share allotment A/c To Equity share capital A/c (Allotment money due with premium)	Dr.		90,000	90,000
4.	Bank A/c To Equity share application A/c (Allotment money received)	Dr.		90,000	90,000

5.	Equity share 1st Final Call A/c To Equity share capital A/c (Final call money due)	Dr.		90,000	90,000
6.	Bank A/c To Equity share 1st / Final call A/c (Final call money received)	Dr.		90,000	90,000

Cash book

Date	Receipt	Amount ₹	Date	Payment	Amount ₹
1.	Share Application money A/c	1,20,000		By Balance	3,00,000
2.	Share Allotment money A/c	90,000			
3.	Share Ist Call money A/c	90,000			
		3,00,000			3,00,000

प्रश्न 25. कविता लिमिटेड ने 10 रु. वाले 30,000 समता अंश निर्गमित किए। आवेदन पर 2 रु., आवंटन पर 3 रु. और याचना पर 5 रु. देय थे। एक व्यक्ति जिसके पास 200 है उसने याचना राशि नहीं चुकाई। अत: उसके अंश जप्त कर लिए गए। जप्त अंशों को 8 रु. प्रति अंश से पुन: निर्गमित किए गए। जर्नल एवं पुन: प्रविष्टि कीजिए।

हल (Solution) :

Journal Entries

Date	Particulars		LF	Dr. Amt.	Cr. Amt.
1.	Share Capital A/c To Share forfeited A/c To Call in Arrears A/c (200 share forfeited due to non reciept of call money)			2,000	 1,000 1,000
2.	Bank A/c Share forfeited A/c To Share Capital A/c (Share Reissued)	Dr. Dr.		1,600 400	 2,000
3.	Share forfeited A/c To Capital Reserve A/c (Forfeited transferred)	Dr.		600	 600

प्रश्न 26. ललित ग्लास लिमिटेड में 100 रु. प्रत्येक के 10,000 अंशों 110 रु. प्रति अंशों में निर्गमन किया, जिन पर 20 रु. आवेदन पर 40 रु. आवंटन पर (प्रीमियम सहित) 30 रु. प्रथम याचना पर एवं 20 रु. अंतिम याचना पर देय हैं। 12,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए एवं 10,000 अंशों का आवंटन किया गया और 2,000 अंशों को अस्वीकार कर, उन पर प्राप्त राशि लौटा दी गई। सभी राशि प्राप्त हो गई, आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए।

हल (Solution) :

Journal Entries

Date	Particulars		LF	Dr. Amt.	Cr. Amt.
1.	Bank A/c To Equity Share Application A/c (Application money received)	Dr.		₹ 2,40,000	₹ 2,40,000

@MP_BOARD_25 (Telegram)

2.	Equity share Application A/c To Equity Share Capital A/c To Bank A/c (Application money transferred to capital A/c)	Dr.		2,40,000	 2,00,000 40,000
3.	Equity Share Allotment A/c To Equity Share Capital A/c To Securities Premium Reserve A/c (Allotment made including premium)	Dr.		4,00,000	 3,00,000 1,00,000
4.	Bank A/c To Equity Share Allotment A/c (Allotment money received with premium)	Dr.		4,00,000	 4,00,000
5.	Equity Share First Call A/c To Equity Share Capital A/c (First call money due)	Dr.		3,00,000	 3,00,000
6.	Bank A/c To Equity Share First Call A/c (First call money received)	Dr.		3,00,000	 3,00,000
7.	Equity Share Second and Final Call A/c To Equity Share Capital A/c (Second and final due due)	Dr.		2,00,000	 2,00,000
8.	Bank A/c To Equity Share Second and Final Call A/c (Second and Final call received)	Dr.		2,00,000	 2,00,000

@MP_BOARD_25 (Telegram)

इकाई–2 ऋणपत्रों का निर्गमन

अंकवार प्रश्नों की संख्या				कुल अंक
वस्तुनिष्ठ प्रश्नों (1 अंक)	अति लघुउत्तरीय प्रश्न (2 अंक)	लघुउत्तरीय प्रश्न (3 अंक)	विश्लेषणात्मक प्रश्न (4 अंक)	
4	4	–	1	16

▫ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर :

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए–

(1) ऋणपत्रों के निर्गमन पर कटौती की राशि है–

(a) पूँजीगत हानि (b) आगमगत हानि

(c) पूँजीगत व्यय (d) आगमगत व्यय

(2) ऋणपत्र पर व्याज के भुगतान की अवधि है–

(a) 3 माह (b) 6 माह

(c) 1 वर्ष (d) किसी भी समय

(3) ऋणपत्रधारी कम्पनी के होते है–

(a) स्वामी (b) लेनदार

(c) देनदार (d) कर्मचारी

(4) ऋणपत्र जिनका हस्तांतरण केवल सुपुर्दगी मात्र से हो जाता है–

(a) वाहक ऋणपत्र (b) बंधक ऋणपत्र

(c) रजिस्टर्ड ऋणपत्र (d) साधारण ऋणपत्र

(5) ऋणपत्रों के प्रतिफल स्वरूप ऋणपत्रधारी को प्राप्त होता है–

(a) लाभ (b) ब्याज

(c) कमीशन (d) दलाली

(6) ऋणपत्रों से होने वाली आय होती है–

(a) निश्चित (b) अनिश्चित

(c) अत्यधिक (d) इनमें से कोई नहीं

(7) ऋणपत्रों के निर्गमन पर प्रीमियम को चिट्ठे में दर्शाया जाता है–

(a) अंश पूंजी में (b) सुरक्षित ऋण में

(c) रिजर्व तथा आधिक्य (d) चालू दायित्व में

(8) स्वयं के ऋणपत्र वे ऋणपत्र है जो–

(a) कम्पनी अपने प्रवर्तकों को आवंटित करती है

(b) अपने निदेशकों को आवंटित करती है

(c) बाजार से खरीदती है और विनियोग के रूप में अपने पास रखती है

(d) उपर्युक्त सभी

(9) ऋण पत्रों के प्रकार होते हैं–

(a) एक (b) चार

(c) तीन (d) दो

उत्तर– (1) (a), (2) (b), (3) (b), (4) (a), (5) (b), (6) (a), (7) (c), (8) (a), (9) (b).

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(1) ऋणपत्रधारी को कम्पनी के .... में भाग लेने का अधिकार नहीं होता है।

(2) ऋणपत्र ऋण का एक लिखित .... है।

(3) जिन ऋणपत्रों को अंशों में परिवर्तित किया जा सकता है, उन्हें .... ऋणपत्र कहते हैं।

(4) ऋणपत्रधारी कम्पनी .... के होते हैं।

(5) ऋणपत्रधारी को .... देने का अधिकार नहीं होता है।

(6) ऋणपत्रधारियों को ऋण वापसी के लिए .... पर प्राथमिकता दी जाती है।

(7) ऋणपत्रों पर दिया जाने वाला बट्टा चिट्ठे के .... पक्ष की ओर विविध व्यय शीर्षक के अंतर्गत दर्शाया जाता है।

(8) जिन ऋणपत्रों का भुगतान एक निश्चित अवधि के बाद कर दिया जाता है उन्हें .... ऋणपत्र कहते हैं।

(9) कम्पनी प्रवर्तक को उनकी सेवाओं के बदले ऋणपत्र जारी करने पर .... खाता डेबिट किया जाता है।

(10) वह पत्र जो लिए गए ऋण के बदले कम्पनी की सार्वमुद्रा के अधीन जारी किया जाता है .... कहलाता है।

उत्तर– (1) प्रबंधन, (2) प्रमाण, (3) परिवर्तनीय, (4) लेनदार, (5) वोट, (6) समापन, (7) सम्पत्ति, (8) शोध्य, (9) ख्याति, (10) ऋणपत्र।

प्रश्न 3. सही जोड़ी बनाइये–

	(A)	(B)
(1)	ऋणपत्रधारी	(a) कृत्रिम संपत्ति
(2)	ऋणपत्रों पर प्रीमियम	(b) 10%
(3)	ऋणपत्रों के निर्गमन पर कटौति	(c) कम्पनी के ऋणदाता
(4)	ऋणपत्रों के निर्गमन में प्राप्त राशि	(d) पूंजीगत लाभ
(5)	ऋणपत्रों के निर्गमन पर अधिकतम कटौति	(e) पूंजीगत प्राप्ति

उत्तर– (1) (c), (2) (a), (3) (d), (4) (e), (5) (b)।

प्रश्न 4. सत्य/असत्य लिखिए–

(1) ऋणपत्र धारी कम्पनी के सदस्य नहीं होते है।

(2) ऋणपत्र धारियों को कम्पनी के सामान्य सभा में मतदान करने का अधिकार होता है।

(3) ऋणपत्र अल्पकालीन ऋण की प्रकृति के होते है।

(4) ऋणपत्र धारी को कम्पनी के अंशधारी भी कहते हैं।

(5) ऋणपत्र स्वामित्व पूंजी का एक हिस्सा है।

(6) ऋणपत्रों पर दिए जाने वाले ब्याज का भुगतान कम्पनी के लाभों में से किया जाता है।

(7) बंधक ऋणपत्र सुरक्षित ऋणपत्र कहलाते हैं।

(8) ऋणपत्रधारियों को निश्चित दर से लाभांश मिलता है।

(9) कम्पनी ऋणपत्रों का निर्गमन रोकड़ के अतिरिक्त अन्य प्रतिफल में कर सकती है।

(10) स्थायी ऋणपत्रों को अमोचनीय ऋणपत्रों के नाम से भी जाना जाता है।

(11) कूपन दर ऋणपत्रों पर ब्याज दर निर्धारित रहती है।

(12) ऋणपत्रों को अंशों में परिवर्तित नहीं किया जा सकता है।

उत्तर–(1) सत्य, (2) असत्य, (3) असत्य, (4) असत्य, (5) असत्य, (6) सत्य, (7) सत्य, (8) असत्य, (9) सत्य, (10) सत्य, (11) सत्य, (12) असत्य।

प्रश्न 5. एक शब्द/वाक्य में उत्तर लिखिए–

(1) दीर्घकालीन ऋणों के लिए जारी प्रपत्र कहलाते हैं?

(2) ऋणपत्र जिन्हें अंशों में परिवर्तित किया जा सकता है, कहलाते है?

(3) ऋणपत्रधारियों को ऋण के प्रतिफल में प्राप्त होता है।

(4) ऋणपत्र जिसका भुगतान केवल कम्पनी के समापन पर होता है, कहलाते हैं।

(5) किन ऋणपत्रों का भुगतान केवल सुपुर्दगी मात्र से हो जाता है।

(6) निर्गमित ऋणपत्रों का कम से कम कितना भाग लाभों में संचित करना अनिवार्य है।

(7) ऋणपत्र जिसमें ब्याज का पूर्व उल्लेख नहीं होता है, कहलाते है।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

(8) वे ऋणपत्र जिनका नाम कंपनी के रजिस्टर में दर्ज होता है, कहलाते हैं।

(9) ऋणपत्रधारी कम्पनी के कौन होते हैं?

(10) क्या ऋणपत्रों को जब्त किया जा सकता है?

उत्तर- (1) ऋणपत्र, (2) परिवर्तनीय, (3) ब्याज, (4) अशोध्य (5) वाहक, (6) 25%, (7) शून्य कूपन दर, (8) पंजीकृत, (9) लेनदार, (10) नहीं।

अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर :

प्रश्न 1. ऋणपत्र को परिभाषित कीजिए।

उत्तर- कम्पनी अधिनियम, 2013 की धारा 2(30) के अनुसार "ऋणपत्र, में ऋणपत्र, स्कंध, बाण्ड्स, अथवा अन्य कोई विलेख शामिल है जो कम्पनी द्वारा लिये गये ऋण के प्रमाणस्वरूप हो चाहे वे कम्पनी सम्पत्तियों अधिकार रखते हो या नहीं।"

प्रश्न 2. एक ऋणपत्रधारी की कम्पनी में क्या स्थिति होती है?

उत्तर- ऋणपत्रधारी की स्थिति- वास्तव में ऋणपत्रधारी कम्पनी के लेनदार होते हैं। उन्हें उनके द्वारा ऋणपत्र के माध्यम से दिये गये ऋण एवं उस पर ब्याज अनिवार्य रूप से प्राप्त होता है। चाहे कम्पनी को लाभ हो अथवा नहीं। यदि कम्पनी, निर्गमन की शर्तों के अधीन इनका भुगतान नहीं कर पाती है तो ऋणपत्रधारी न्यायालय में वाद प्रस्तुत करेक अपना ऋण वसूल कर सकते हैं। उन्हें कम्पनी के प्रबन्ध एवं नियंत्रण में भाग लेने का अधिकार नहीं होता है।

प्रश्न 3. ऋणपत्र के निर्गमन के उद्देश्य लिखिए।

उत्तर- ऋणपत्रों की उपयोगिता या लाभ को निम्न प्रकार बताया जा सकता है-

1. वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति- अंशों के निर्गमन के पश्चात् भी यदि कम्पनी को पूँजी की आवश्यकता होती है तो कम्पनी ऋणपत्र को निर्गमित कर आवश्यक राशि प्राप्त कर लेती है।

2. स्वामित्व नहीं- ऋणपत्रधारियों का कम्पनी पर स्वामित्व नहीं होने से उन्हें मताधिकार प्राप्त नहीं होता है।

3. निश्चित आय- ऋणपत्रों पर निश्चित ब्याज दर होने से कम्पनी को मालूम होता है कि उसे ब्याज के रूप में कितनी राशि भुगतान करना होगी तथा ऋणपत्रधारी को ब्याज से कितनी आय प्राप्त होती रहेगी।

4. प्रबंध में भागीदारी नहीं- ऋणपत्रधारियों को कम्पनी के प्रबंध में भाग लेने का अधिकार नहीं होता है। अतः कम्पनी का नियंत्रण पूर्व अंशधारियों के पास ही बना रहता है।

प्रश्न 4. पंजीकृत ऋणपत्र से क्या आशय है?

उत्तर- रजिस्टर्ड ऋणपत्र (Registered Debentures)- ऐसे ऋणपत्र जिन्हें कम्पनी के ऋणपत्रधारियों के रजिस्टर में दर्ज किया हो। इन्हें सुपुर्दगी किया जा सकता है।

प्रश्न 5. वाहक ऋणपत्र से क्या आशय है?

उत्तर- वाहक ऋणपत्र (Bearer Debentures)- ऐसे ऋणपत्र जो कम्पनी के ऋणपत्रधारियों के रजिस्टर में नहीं हो। इन्हें सुपुर्दगी द्वारा हस्तांतरित किया जा सकता है।

प्रश्न 6. परिवर्तनीय ऋणपत्र क्या है?

उत्तर- परिवर्तनशील ऋणपत्र (Convertible Debentures)- ऐसे ऋणपत्र जिन्हें एक निश्चित अवधि की समाप्ति पर अंशों में या नये ऋण पत्रों में परिवर्तित कराया जा सकता है।

प्रश्न 7. अपरिवर्तनीय ऋणपत्र से क्या अर्थ है?

उत्तर- अपरिवर्तनशील ऋणपत्र (Non-convertible Debentures)- ऐसे ऋणपत्र जिन्हें अंशों में या नये ऋण पत्रों में परिवर्तित नहीं कराया जा सकता है।

प्रश्न 8. शोध्य ऋणपत्र से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- शोध्य ऋणपत्र (Redeemable Debentures)- ऐसे ऋणपत्र जिनका भुगतान कम्पनी के जीवन काल में नहीं किया जा सकता है। केवल कम्पनी के समापन की दशा में ही इनका भुगतान संभव होता है।

प्रश्न 9. अशोध्य ऋणपत्र से क्या आशय है?

उत्तर- अशोध्य ऋणपत्र (Irredeemable Debentures)- ऐसे ऋणपत्र जिनका भुगतान कम्पनी के जीवन काल में नहीं किया जा सकता है। केवल कम्पनी के समापन की दशा में ही इनका भुगतान संभव होता है।

प्रश्न 10. सुरक्षित ऋणपत्र को समझाइए।

उत्तर- सुरक्षित या बन्धक ऋणपत्र (Secured or Mortgage Debentures)- ऐसे ऋणपत्र जो कम्पनी की चल तथा अचल सम्पत्तियों पर प्रभार द्वारा सुरक्षित होते हैं।

प्रश्न 11. असुरक्षित ऋणपत्र को समझाइए।

उत्तर- असुरक्षित ऋणपत्र (Unsecured Debentures)- ऐसे ऋणपत्र जिनके धारी को ऋण तथा ब्याज के भुगतान के लिये सम्पत्तियों पर प्रभार द्वारा सुरक्षित होते हैं।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 12. ऋण पत्र के निर्गमन की विधि बताइये।

उत्तर– [illegible]

[illegible] निर्गमित किये जा सकते हैं।

प्रश्न 13. प्रीमियम पर ऋणपत्र के निर्गमन से क्या आशय है? (2016)

उत्तर– प्रीमियम मूल्य पर ऋणपत्रों का निर्गमन– [illegible]

■ लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर :

प्रश्न 1. हस्तांतरण के आधार पर ऋणपत्रों के प्रकारों को समझाइए।

अथवा

'पंजीकृत ऋणपत्र' एवं 'वाहक ऋणपत्र' को समझाइए।

उत्तर– हस्तान्तरण की दृष्टि से ऋणपत्रों के प्रकार

1. वाहक ऋणपत्र– [illegible] अनुमान नहीं किया जाता।

2. पंजीकृत ऋणपत्र– [illegible] पंजीकृत या रजिस्टर्ड ऋणपत्र कहे जाते हैं।

प्रश्न 2. शोधन के आधार पर ऋणपत्रों के प्रकारों को समझाइए।

अथवा

शोध्य एवं अशोध्य ऋणपत्र से क्या आशय है?

उत्तर– भुगतान की दृष्टि से ऋणपत्रों के प्रकार

1. [illegible] ऋणपत्र– [illegible] ऋणपत्र से आशय ऐसे [illegible] पूर्व निश्चित तिथि को या [illegible] के अन्त का किया जाता है।

2. अशोध्य या अपरिशोध्य ऋणपत्र– ऐसे ऋणपत्र, जिनका भुगतान [illegible] के समापन पर ही किया जाता है, अशोध्य या अपरिशोध्य ऋणपत्र कहे जाते हैं। इन्हें अशोध्य इसलिए कहा जाता है क्योंकि इनका भुगतान कम्पनी के जीवनकाल में नहीं किया जाता है, किन्तु ब्याज का भुगतान न किये जाने की दशा में इस प्रकार के ऋणपत्रों का भुगतान कम्पनी के जीवनकाल में भी किया जा सकता है।

प्रश्न 3. सुरक्षा के आधार पर ऋणपत्रों के प्रकारों को समझाइए।

अथवा

सुरक्षित एवं असुरक्षित ऋणपत्र से क्या आशय है?

उत्तर– सुरक्षा की दृष्टि से ऋणपत्रों के प्रकार–

1. रक्षित या बन्धक ऋणपत्र– जब कम्पनी अपनी संपत्ति [illegible] रखकर ऋणपत्र निर्गमित करती है तो ऐसे ऋणपत्रों को रक्षित या बन्धक ऋणपत्र कहा जाता है। इस तरह बन्धक रखी गई सम्पत्ति का विक्रय तब तक नहीं किया जा सकता, जब तक कि इस प्रकार के ऋणपत्रों का भुगतान नहीं कर दिया गया हो।

2. साधारण या अरक्षित ऋणपत्र– ऐसे ऋणपत्र जिनके भुगतान हेतु कोई सम्पत्ति रक्षित या बन्धक नहीं रखी जाती है, साधारण या अरक्षित ऋणपत्र कहे जाते हैं। कम्पनी के समापन के समय इनके धारक साधारण लेनदार की तरह माने जाते हैं तथा कम्पनी इनमें अंकित ऋण की देनदार होती है।

प्रश्न 4. ऋणपत्र की उपयोगिता लिखिए।

उत्तर– ऋणपत्रों के निर्गमन से कम्पनी को निम्नलिखित लाभ हैं–

1. दीर्घकालीन पूँजी का साधन– ऋणपत्रों से दीर्घकालीन पूँजी प्राप्त होती है, जो स्थायी संपत्तियाँ खरीदने में प्रयुक्त होती है अतः समापन के पूर्व ऋणपत्रधारियों को भुगतान करने की समस्या नहीं रहती है।

2. लाभांश की तुलना में ब्याज कम लगना– कम्पनी द्वारा अंशों पर जो लाभांश दिया जाता है उसकी तुलना में ऋणपत्रों पर ब्याज प्रायः कम लगता है।

3. प्रबंध में भागीदारी नहीं– ऋणपत्रधारियों को कम्पनी के प्रबंध में भाग लेने का अधिकार नहीं होता है। अतः कम्पनी का नियंत्रण मूल स्वामियों या प्रवर्तकों के हाथों में ही रहता है।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

4. **आयकर की बचत**– ऋणपत्रों के निर्गमन से कम्पनी को आयकर की बचत होती है, क्योंकि ऋणपत्रों पर दिया गया ब्याज, लाभ पर प्रभार होता है।

5. **लोचपूर्ण पूँजी ढाँचा**– ऋणपत्र जारी करके कम्पनी आवश्यक मात्रा में वित्त एकत्रित कर सकती है। जब वित्त की आवश्यकता नहीं हो तो ऋणपत्रों का शोधन करके पूँजी में कमी की जा सकती है।

प्रश्न 5. अंकुर लिमिटेड ने 50 रु. वाले 4,000, 12% ऋणपत्र जारी किए। जिन पर 20 रु. आवेदन एवं शेष राशि आवंटन पर देय है। ऋणपत्र की सभी राशियाँ यथा समय प्राप्त हो गई। अंकुर लिमिटेड की पुस्तकों में नकल प्रविष्टियाँ कीजिए।

हल (Solution) :

Journal Entries

Date	Particulars	LF	Dr. Amt.	Cr. Amt.
			₹	₹
1.	Bank A/c Dr. To 12% Debenture Application A/c (Application money received)		80,000	80,000
2.	12% Debenture Application A/c Dr. To Debenture A/c (Application money transferred to debenture A/c)		80,000	80,000
3.	12% Debenture Allotment A/c Dr. To Debenture A/c (Allotment due on Debentures with premium)		1,20,000	1,20,000
4.	Bank A/c Dr. To 12% Debenture Allotment A/c (Allotment money received)		1,20,000	1,20,000

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 6. X लिमिटेड ने 10,000, 6% ऋणपत्र प्रत्येक 100 रु. वाले निर्गमित किए। इन ऋणपत्रों पर समस्त राशि एकमुश्त प्राप्त हो गई। नकल प्रविष्टियाँ कीजिए।

हल (Solution) :

Journal Entries

Date	Particulars	LF	Dr. Amt.	Cr. Amt.
			₹	₹
1.	Bank A/c Dr. To 6% Debenture Application & Allotment A/c (Receipts of Full amount on 10,000, 6% debentures on application)		10,00,000	10,00,000
2.	6% Debenture Application & Allotment A/c Dr. To 6% Debentures A/c (Application money transferred to 6% Debentures A/c)		10,00,000	10,00,000

प्रश्न 7. अंकित लिमिटेड ने 100 रु. वाले 10,000, 12% ऋणपत्र 10 रु. प्रति ऋणपत्र प्रीमियम सहित प्राप्त हो गई। नकल प्रविष्टियाँ कीजिए।

हल (Solution) :

Journal Entries

Date	Particulars		LF	Dr. Amt.	Cr. Amt.
				₹	₹
1.	Bank A/c	Dr.		11,00,000	
	To 12% Debenture Application and Allotment A/c				11,00,000
	(Receipts of full amount on 10,000, 12% debentures with premium)				
2.	12% Debenture Application & Allotment A/c	Dr.		11,00,000	
	To 12% Debentures A/c				10,00,000
	To Securities Premium Reserve A/c				1,00,000
	(Application money transferred to 12% debentures and Securities Premium Reserve A/c)				

प्रश्न 8. अक्षय लिमिटेड ने 100 रु. वाले 8,000, 10% ऋण पत्र 5% कटौती पर निर्गमित किए। सभी ऋणपत्रों की राशि एकमुश्त प्राप्त हो गई। आवश्यक पंजी प्रविष्टियाँ कीजिए।

हल (Solution) :

Journal Entries

Date	Particulars		LF	Dr. Amt.	Cr. Amt.
				₹	₹
1.	Bank A/c	Dr.		7,60,000	
	To 10% Debenture Application & Allotment A/c				7,60,000
	(Receipts of full amount on 8,000; 10% debentures after deducting discount at 5%)				
2.	10% Debenture Application & Allotment A/c	Dr.		7,60,000	
	Discount on Debentures A/c	Dr.		40,000	
	To 10% Debentures A/c				8,00,000
	(Application money transferred to 10% debenture A/c)				

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 9. A लिमिटेड ने इण्डिया लिमिटेड से 2,40,000 रु. की संपत्ति एवं 25,000 के दायित्व 2,20,000 रु. में क्रय किए। ए लिमिटेड ने क्रय प्रतिफल का भुगतान 100 रु. वाले 10% ऋणपत्र निर्गमित करके किया। A लिमिटेड की पुस्तकों में आवश्यक पंजी प्रविष्टियाँ कीजिए।

हल (Solution) :

Journal Entries

Date	Particulars		LF	Dr. Amt.	Cr. Amt.
			₹	₹	
	Sundry Assets A/c	Dr.		2,40,000	
	Goodwill A/c*	Dr.		5,000	
	To Liabilities A/c				25,000
	To India Ltd.				2,20,000
	(Purchase of assets and liabilities of the India Ltd.)				
	India Ltd.	Dr.		2,20,000	
	To 12% Debenture A/c				2,20,000
	(Issue of debentures of ₹ 100 each)				

प्रश्न 10. ऋणपत्रों से आप क्या समझते हो? इसकी विशेषताएं लिखिए।

उत्तर– ऋणपत्र, ऋणदाता तथा कम्पनी के बीच एक अनुबन्ध होता है, जिसके अन्तर्गत कम्पनी ऋणदाता से लिये गये ऋण का ब्याज सहित भुगतान करने का वचन देती है। इसमें ऋण राशि की सभी शर्तें दी होती है।

अन्य शब्दों में, 'ऋणपत्र' एक प्रपत्र है, जो किसी ऋण की प्राप्ति की स्वीकृति है तथा जो कम्पनी की सार्वमुद्रा के अधीन निर्गमित किया जाता है।

ऋणपत्र की प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार से हैं-

1. **ऋण का प्रमाण–** ऋणपत्र कम्पनी द्वारा लिये गये ऋण का प्रलेख/प्रमाण है।
2. **निश्चित ब्याज दर–** ऋणपत्रों का निर्गमन एक निश्चित ब्याज दर पर किया जाता है।
3. **वापसी का अनुबंध–** ऋणपत्र में उस अवधि का स्पष्टीकरण होता है, जिसके पश्चात मूल राशि का भुगतान किया जाता है।
4. **सम्पत्तियों पर प्रभार–** ऋणपत्र प्रायः कम्पनी की सम्पत्तियों पर अचल या चल प्रभार (Floating Charge) रखते हैं, अतः वे सुरक्षित होते हैं।
5. **दीर्घकालीन ऋण–** ऋणपत्रों द्वारा लिया गया ऋण दीर्घकालीन प्रकृति का होता है।
6. **सार्वमुद्रा अंकित होना–** प्रत्येक ऋणपत्र पर कम्पनी की सार्वमुद्रा (Common Seal) अंकित होती है।

प्रश्न 11. अंश व ऋणपत्र में अंतर लिखिए।

उत्तर– अंश व ऋणपत्र में अंतर–

क्र.	अन्तर का आधार	अंश	ऋणपत्र
1.	परिभाषा	अंश अधिकृत पूंजी के छोटे भाग को कहते हैं।	ऋण के प्रतिफल में कम्पनी की सार्वमुद्रा के अधीन दिया गया प्रमाण पत्र ही ऋण पत्र कहलाता है।
2.	प्रतिफल	अंश का प्रतिफल लाभांश है।	ऋणपत्र का प्रतिफल ब्याज है।
3.	प्रकार	अंश दो प्रकार के होते हैं– (1) पूर्वाधिकार (2) समता।	ऋणपत्र अनेक प्रकार के होते हैं।
4.	भुगतान	अंशों का भुगतान कम्पनी के जीवनकाल में नहीं होता।	ऋणपत्र का भुगतान अनुबंध के तहत निश्चित अवधि पर होता है।
5.	आय का स्वभाव	अंश पर आय निश्चित नहीं रहती।	ऋणपत्र पर ब्याज के रूप में आय निश्चित ही प्राप्त होती है।
6.	जोखिम	अंश में विनियोगकर्ता को अधिक जोखिम उठानी पड़ती है।	ऋणपत्र में जोखिम कम होती है, क्योंकि ऋणपत्र प्रायः सुरक्षित रहते हैं।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 12. अंशपत्रधारी एवं ऋणपत्र धारी में अंतर लिखिए।

उत्तर– अंशपत्रधारी एवं ऋणपत्रधारी में निम्नलिखित अंतर हैं–

क्र.	अन्तर का आधार	अंशपत्रधारी	ऋणपत्रधारी
1.	स्वामित्व	अंशधारी कम्पनी के स्वामी होते हैं।	ऋणपत्रधारी कम्पनी के ऋणदाता होते हैं।
2.	प्रतिफल	अंशधारी कम्पनी के लाभ में से लाभांश प्राप्त करता है।	ऋणपत्रधारी ऋण की राशि पर ब्याज प्राप्त करता है।
3.	लाभांश/ब्याज का भुगतान	अंशधारी को लाभांश का भुगतान लाभ होने की दशा में ही किया जा सकता है।	ऋणपत्रधारी को ब्याज का भुगतान अवश्य किया जाता है, चाहे कम्पनी को लाभ हो या हानि।
4.	सदस्यता	अंशधारी कम्पनी का सदस्य होता है।	ऋणपत्रधारी कम्पनी का सदस्य नहीं होता है।
5.	मताधिकार	अंशधारियों को कम्पनी के प्रत्येक प्रस्ताव पर मत देने का अधिकार होता है।	ऋणपत्रधारकों को मत देने का अधिकार नहीं होता है।
6.	प्रवन्ध में भाग	अंशधारी को कम्पनी के प्रवन्ध में भाग लेने का अधिकार होता है।	ऋणपत्रधारी को कम्पनी के प्रवन्ध में भाग लेने का अधिकार नहीं होता है।

प्रश्न 13. सुविधा लिमिटेड ने 100 रु. वाले 2,000 11% ऋणपत्र 10% प्रीमियम पर जारी किए। इन पर राशियाँ इस प्रकार देय थी– 20 रु आवेदन पर, 40 रु. आवंटन पर (प्रीमियम सहित) एवं शेष राशि प्रथम एवं अंतिम याचना पर देय थी। सभी राशियाँ यथा समय प्राप्त हो गई। आवश्यक पंजी प्रविष्टियाँ कीजिए।

हल (Solution) :

Journal Entries

Date	Particulars		L.F.	Debit ₹	Credit ₹
(1)	Bank a/c To 11% Debenture Application a/c (Amount received on application for 2,000 debentures @ ₹ 20)	Dr.		40,000	40,000
(2)	11% Debenture Application a/c To 11% Debentures a/c (Amount due on application for 2,000 debentures)	Dr.		40,000	40,000
(3)	11% Debenture Allotment a/c To 11% Debentures a/c To Securities Premium Reserve a/c (Amount due on allotment on 2,000 Debenture @ ₹ 40 including premium)	Dr.		80,000	60,000 20,000
(4)	Bank a/c To 11% Debentures Allotment a/c (Amount received on allotment and excess application money adjusted)	Dr.		80,000	80,000
(5)	11% Debenture First & Final Call a/c To 11% Debentures a/c (Amount due on call on 2,000 debentures @ ₹ 50)	Dr.		1,00,000	1,00,000
(6)	Bank a/c To 11% Debenture First & Final Call a/c (Amount received on first & Final Call @ ₹ 50)	Dr.		1,00,000	1,00,000

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 14. अनंत लिमिटेड ने 100 रु. वाले 5,000, 12% ऋणपत्र 10% कटौती पर निर्गमित किए। इनका भुगतान इस प्रकार देय था– आवेदन पर 10%, आवंटन 20 रु., प्रथम याचना पर 40रु. और अंतिम याचना पर। सभी राशियाँ यथा समय प्राप्त हो गई। अनंत लिमिटेड की पुस्तकों में आवश्यक नकल प्रविष्टियाँ कीजिए।

हल (Solution) :

Journal Entries (जर्नल प्रविष्टियाँ)

Date दिनांक	Particulars विवरण			Dr. डे. Amount ₹	Cr. क्रे. Amount ₹
(1)	बैंक खाता नाम 12% ऋणपत्र आवेदन खाते से (2,000 ऋणपत्रों की आवेदन राशि प्राप्त)	Bank a/c To 12% Deb. Application a/c (Amount received on application for 2,000 Deb.)	Dr.	60,000	60,000

(2)	12% ऋणपत्र आवेदन खाता	नाम	12% Deb. Application a/c	Dr.	60,000	
	12% ऋणपत्र खाते से		To 12% Debenture a/c			60,000
	(आवेदन राशि देय)		(Amount due on application)			
(3)	12% ऋणपत्र आवंटन खाता	नाम	12% Deb. Allotment a/c	Dr.	1,00,000	
	निर्गमन पर बट्टा खाता	नाम	Discount on Issue of Deb. a/c	Dr.	20,000	
	12% ऋणपत्र खाते से		To 12% Debentures a/c			1,20,000
	(आवंटन पर राशि देय एवं बट्टा दिया)		(Amount due on allotment and discount allowed)			
(4)	बैंक खाता	नाम	Bank a/c	Dr.	1,00,000	
	12% आवंटन खाते से		To 12% Deb. Allotment a/c			1,00,000
	(आवंटन राशि प्राप्त)		(Amount received on allotment)			
(5)	12% ऋणपत्र याचना खाता	नाम	12% Deb. call a/c	Dr.	20,000	
	12% ऋणपत्र खाते से		To 12% Debentures a/c			20,000
	(याचना राशि देय)		(Amount due on call)			
(6)	बैंक खाता	नाम	Bank a/c	Dr.	20,000	
	12% ऋणपत्र याचना खाते से		To 12% Deb. Call a/c			20,000
	(याचना राशि प्राप्त)		(Amount received on call)			

प्रश्न 15. B लिमिटेड ने एक व्यवसाय 5,50,000 रु. में क्रय किया। क्रममूल्य का भुगतान 12% ऋणपत्रों द्वारा किया गया और इस हेतु 5,00,000 के ऋण पत्र 10% प्रीमियम पर निर्मित किए गए। B लिमिटेड की पुस्तकों में जनरल लेखे कीजिए।

हल (Solution) :

Journal Entries

Date	*Particulars*		*L. F.*	*Debit* ₹	*Credit* ₹
(1)	Machinery a/c	Dr.		5,50,000	
	To Atul Traders				5,50,000
	(Machinery purchased from Atul Traders)				
(2)	Atul Traders	Dr.		5,50,000	
	To 15% Debentures a/c				5,00,000
	To Securities Premium Reserve a/c				50,000
	(Issue of ₹ 5 lakh debentures at 10% premium)				

प्रश्न 16. X लिमिटेड ने Y लिमिटेड से 5,00,000 रु. की संपत्ति तथा 1,20,000 रु. के दायित्व, 3,20,000 रु. में लेने की सहमति दी। जिसका भुगतान 100 रु. मूल्य वाले 15% ऋणपत्रों को जारी करके किया गया। X लिमिटेड की पुस्तकों में नकल प्रविष्टियाँ कीजिए।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

हल (Solution) :

Journal of Mohit Ltd.

Date	Particulars	L. F.	Debit ₹	Credit ₹
	Sundry Assets A/c Dr.		8,40,000	
	To Sundry Liabilities A/c			80,000
	To Capital Reserve (Balancing figure)			40,000
	To Ram Ltd.			7,20,000
	(Being purchase of assets and liabilities of Ram Ltd.)			
	Ram Ltd. Dr.		7,20,000	
	To 9% Debenture A/c (6,000 × ₹100)			6,00,000
	To Security Premium Reserve (6,000 × ₹ 20)			1,20,000
	(Being issue of 9% debentures at a premium of ₹ 20 per debenture)			

इकाई–3 कम्पनी के वित्तीय विवरण, वित्तीय विवरण का विश्लेषण

अंकवार प्रश्नों की संख्या				कुल अंक
वस्तुनिष्ठ प्रश्नों (1 अंक)	अति लघुउत्तरीय प्रश्न (2 अंक)	लघुउत्तरीय प्रश्न (3 अंक)	विश्लेषणात्मक प्रश्न (4 अंक)	
5	–	1	–	8

@MP_BOARD_25 (Telegram)

■ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर :

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए–

(1) चिट्ठे को कहा जाता है–
(a) संपत्ति विवरण
(b) दायित्व विवरण
(c) स्थिति विवरण
(d) आय विवरण

(2) वार्षिक साधारण सभा में कम्पनी के हिसाब किताब प्रस्तुत किये जाते हैं–
(a) सचिव द्वारा
(b) संचालक मण्डल द्वारा
(c) अंकेक्षक द्वारा
(d) प्रमुख प्रशासनिक अधिकारी द्वारा

(3) कम्पनी का चिट्ठा तैयार किया जाता है–
(a) क्षैतिज प्रारूप में
(b) लंबवत प्रारूप में
(c) दोनों में
(d) साझेदारी फर्म के चिट्ठे के प्रारूप में

(4) कम्पनी अधिनियम 2013 के अंतर्गत चिट्ठे की मदों को बाँटा गया है–
(a) दो वर्गों में (b) तीन वर्गों में
(c) पाँच वर्गों में (d) दस वर्गों में

(5) आर्थिक चिट्ठा व्यवसाय का ..... दर्शाता है–
(a) लाभ–हानि (b) वित्तीय स्थिति
(c) लाभ–हानि तथा वित्तीय स्थिति
(d) व्यवसाय में प्राप्त जोखिम

(6) अंश धारियों की निधि में शामिल है–
(a) समता अंश पूँजी
(b) पूर्वाधिकार अंश पूँजी
(c) समता एवं पूर्वाधिकार अंश पूँजी
(d) समता अंश पूँजी, पूर्वाधिकार अंश, पूँजी व संचय एवं आधिक्य

(7) ख्याति को चिट्ठे में दर्शायेंगे–
(a) गैर चालू आस्तियाँ (b) चालू आस्तियाँ
(c) गैर चालू आस्तियाँ – मूर्त
(d) गैर चालू आस्तियाँ – अमूर्त

(8) आर्थिक चिट्ठे का प्रारूप कम्पनी अधिनियम की किस सूची में वर्णित है–

(a) अनुसूची – V (b) अनुसूची – III

(c) अनुसूची – II (d) अनुसूची – I

(9) निम्न में से कौन सी संपत्तियाँ चालू अस्तियाँ नहीं है–

(a) देनदार (b) स्टॉक

(c) पेटेण्ट (d) प्राप्य बिल

(10) कम्पनी के चिट्ठे में चालू दायित्व शीर्षक में किसे शामिल किया जाता है–

(a) अल्पकालीन ऋण (b) ऋण पत्र

(c) सावधिक ऋण (d) बाण्ड

(11) अदत्त याचनाओं को घटाया जाता है–

(a) आधिक्य पूँजी में से

(b) निर्गमित पूँजी में से

(c) प्रार्थित पूँजी में से

(d) चुकता पूँजी में से

(12) पूँजी संचय को आर्थिक चिट्ठे में किस शीर्षक के अंतर्गत दर्शाया जाता है–

(a) चालू दायित्व (b) विविध व्यय

(c) अंश पूँजी (d) संचय एवं आधिक्य

(13) प्रारम्भिक व्यय चिट्ठे में निम्न शीर्षक के अधीन दर्शाया जाता है–

(a) ऋण एवं अग्रिम (b) संचय एवं आधिक्य

(c) स्थायी संपत्तियाँ (d) अन्य व्यय

उत्तर– (1) (c), (2) (a), (3) (b), (4) (a), (5) (b), (6) (d), (7) (d), (8) (b), (9) (c), (10) (a), (11) (b), (12) (d), (13) (a)।

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(1) चिट्ठा किसी व्यावसायिक उपक्रम की वित्तीय स्थिति को किसी ..... तिथि को प्रकट करता है।

(2) संपत्तियाँ सदैव समता एवं ..... के बराबर होती है।

(3) कम्पनी अधिनियम 2013 के अंतर्गत चिट्ठा ..... प्रारूप में तैयार किया जाता है।

(4) ख्याति एक प्रकार की ..... और ..... संपत्ति है।

(5) अंश पूँजी जिस प्रमुख शीर्षक में लिखी जाती है उसे ..... कोष कहते हैं।

(6) निर्गमित पूँजी कभी भी ..... पूँजी से अधिक नहीं हो सकता है।

(7) चालू दायित्वों का निपटारा ..... के भीतर किया जाता है।

(8) ..... पर लाभांश भुगतान नहीं किया जाता है।

(9) ब्याज व्यय को ..... शीर्षक में दर्शायेंगे।

(10) लेनदेन कम्पनी के ..... होते हैं।

(11) ऋण पत्र ..... ऋण होते हैं।

(12) भुनाये गए विपत्रों का दायित्व ..... है।

(13) प्रतिभूति प्रीमियम संचय को ..... शीर्षक में दिखाया जाता है।

उत्तर– (1) निर्धारित/निश्चित, (2) दायित्व, (3) लम्बवत, (4) अमूर्त, कृत्रिम, (5) अंशधारियों का, (6) अधिकृत, (7) एक वर्ष, (8) ऋणपत्रों पर, (9) वित्तीय लागत, (10) व्यवहार, (11) दीर्घकालीन, (12) चालू दायित्व, (13) संचय एवं आधिक्य।

प्रश्न 3. सही जोड़ी बनाइये–

A	(A)	(B)
(1)	चिट्ठा तैयार किया जाता है	(a) कुछ विशेष लेखांकन प्रथाओं के आधार पर
(2)	लाभ तथा हानि के विवरण में दर्शाया जाता है	(b) समता तथा दायित्व के बराबर
(3)	संपत्ति सदैव बराबर होती है	(c) किसी तिथि विशेष पर

उत्तर– (1) (c), (2) (a), (3) (b)।

B	(A)	(B)
(1)	व्यापारिक देयताएँ	(a) स्थायी संपत्तियाँ
(2)	ऋणपत्र	(b) संचय एवं आधिक्य
(3)	वाहन	(c) विविध लेनदार
(4)	करों के लिए प्रावधान	(d) दीर्घकालीन ऋण
(5)	सामान्य संचय	(e) चालू दायित्व

उत्तर– (1) (c), (2) (d), (3) (a), (4) (e), (5) (b)।

प्रश्न 4. सत्य/असत्य लिखिए–

(1) वित्तीय विवरण में लाभ–हानि विवरण और स्थिति विवरण दोनों को शामिल किया जाता है।

(2) वित्तीय विवरणों में व्यावसायिक उपक्रम के हिसाब–किताब का सारांश दर्शाया जाता है।

(3) कम्पनी के चिट्ठे में अधिकृत पूँजी को दर्शाने की आवश्यकता नहीं होती है।

(4) चालू कार्य को चल संपत्ति शीर्षक में दर्शाया जाता है।

(5) पेटेण्ड तथा व्यापार चिन्ह चालू सम्पत्तियाँ होती है।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

(6) आकस्मिक दायित्वों को दायित्व पक्ष के योग में सम्मिलित किया जाता है।
(7) ऐसी संपत्तियाँ जो वर्ष के दौरान नगद राशि में परिवर्तित की जा सकती है चालू संपत्तियां कहलाती है।
(8) चालू दायित्वों का निपटारा 12 माह के अंदर किया जाता है।
(9) सकल लाभ की राशि में वृद्धि लाभदायकता में वृद्धि को इंगित करती है।
(10) बिक्री में वृद्धि हुए बिना उत्पादन लागत में वृद्धि होने से लाभ की मात्रा बढ़ती है।
(11) ख्याति एक प्रकार का खाता होता है।
(12) फर्म का चिट्ठा स्थायित्व के क्रम में नहीं दर्शाया जाता है।
(13) वित्तीय विवरण विशेष लेखांकन प्रथाओं के आधार पर तैयार किए जाते हैं।
(14) चिट्ठा एक प्रकार का खाता होता है।
(15) चिट्ठा को स्थिति विवरण भी कहते हैं।

उत्तर– (1) सत्य, (2) सत्य, (3) असत्य, (4) सत्य, (5) सत्य, (6) असत्य, (7) सत्य, (8) सत्य, (9) असत्य, (10) असत्य, (11) सत्य, (12) सत्य, (13) सत्य, (14) असत्य, (15) सत्य।

प्रश्न 5. एक शब्द/वाक्य में उत्तर लिखिए–

(1) कम्पनी के लाभ को कौन से शीर्षक में दिखाया जाता है।
(2) कम्पनी के लाभ-हानि खाते की कौन-सी अनुसूची के अनुसार दर्शाया जाता है।
(3) कम्पनी का स्थिति विवरण किस प्रारूप में तैयार किया जाता है।
(4) रहतिया को चिट्ठे में किस शीर्षक के अंतर्गत दिखाया जाता है।
(5) क्या कम्पनी के चिट्ठे में पिछले वर्ष से संबंधित आंकड़ों का प्रदर्शन करना आवश्यक होता है?
(6) कम्पनी का चिट्ठा किस अधिनियम द्वारा शामिल होता है किस शीर्षक में प्रस्तावित लाभांश दर्शाया जाता है।
(7) किस शीर्षक के विकास संबंधी व्यय को दर्शाया जाता है।
(8) कम्पनी की सम्पत्तियाँ किनके बराबर होती है।

उत्तर– (1) संचय एवं आधिक्य, (2) III, (3) लम्बवत्, (4) चालू सम्पत्ति, (5) हाँ, (6) कम्पनी अधिनियम, (7) चालू सम्पत्तियाँ, (8) दायित्व के।

■ लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर :

प्रश्न 1. वित्तीय विवरण की उपयोगिता एवं महत्व बताइए।

उत्तर– वित्तीय विवरण का महत्व निम्नलिखित है–

1. वित्तीय नीतियों के लिए आधार– वित्तीय नीतियाँ विशेष रूप से सरकार की कराधान नीतियाँ निर्गमित औद्योगिक संस्थान की कार्यक्षमता या निष्पादन से सम्बन्ध होती है। इस तरह से वित्तीय विवरण औद्योगिक कराधान तथा सरकार की अन्य आर्थिक नीतियों के लिए निर्विष्ट या निवेश प्रदान करते हैं।

2. प्रत्याशित निवेशकों के लिए आधार– निवेशकों में दीर्घकालिक और अल्पकालिक दोनों प्रकार के निवेशक होते है। उनके निवेश के निर्णय में प्रमुख स्थान देने योग्य बात अपने निवेश के लिए न्यायोचित लाभ के साथ सुरक्षा एवं तरलता होती है।

3. ऋणों की स्वीकृति के लिए आधार– निर्गमित संस्थानों को बैंकों तथा अन्य वित्तीय संस्थानों से विभिन्न उद्देश्यों हेतु ऋण उठाने पड़ते हैं। ऋणदाता संस्थान निगमों के वित्तीय निष्पादनों के आधार पर ऋण स्वीकृत करते हैं। अतः वित्तीय विवरण ऋणों के स्वीकार के लिए आधार होते हैं।

प्रश्न 2. वित्तीय विवरणों की सीमाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर– वित्तीय विवरणों के निम्न दोष या सीमाएँ हैं–

1. केवल रिपोर्ट मात्र– वित्तीय विवरण कम्पनी की स्थिति को पूर्ण रूप से व्यक्त नहीं करता है क्योंकि इसमें कुछ तथ्य अनुमानित होते हैं जिनकी वास्तविक स्थिति समापन के समय ज्ञात होती है।

2. वित्तीय स्थिति नहीं दर्शाता– वित्तीय विवरण कम्पनी की वास्तविक वित्तीय स्थिति को नहीं दर्शाता क्योंकि इसके अन्तर्गत दर्शाये जाने वाली सम्पत्तियों व दायित्वों का मूल्य विभिन्न आधारों पर मूल्यांकित होता है जो वास्तविक मूल्य से भिन्न होते हैं।

3. सारांश मात्र– वित्तीय विवरण पूर्ण रूप से विस्तृत नहीं होता है। यह एक सारांश मात्र होता है।

प्रश्न 3. गैर-चालू सम्पत्तियों में किन सम्पत्तियों को शामिल किया जाता है?

उत्तर– गौर चालू सम्पत्तियों में स्थायी सम्पत्तियों को शामिल किया जाता है जैसे– मशीन भवन, संमंत्र आदि।

प्रश्न 5. वित्तीय विवरणों की सीमाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर– वित्तीय विवरणों के निम्न दोष या सीमाएँ हैं–

1. केवल रिपोर्ट मात्र– वित्तीय विवरण कम्पनी की स्थिति को पूर्ण रूप से व्यक्त नहीं करता है क्योंकि इसमें कुछ तथ्य अनुमानित होते हैं जिनकी वास्तविक स्थिति समापन के समय ज्ञात होती है।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

2. वित्तीय स्थिति नहीं दर्शाता– वित्तीय विवरण कम्पनी की वास्तविक वित्तीय स्थिति को नहीं दर्शाता क्योंकि इसके अन्तर्गत दर्शाये जाने वाली सम्पत्तियों व दायित्वों का मूल्य विभिन्न आधारों पर मूल्यांकित होता है जो वास्तविक मूल्य से भिन्न होते हैं।

3. सारांश मात्र– वित्तीय विवरण पूर्ण रूप से विस्तृत नहीं होता है। यह एक सारांश मात्र होता है।

4. ऐतिहासिक लागत– वित्तीय विवरण ऐतिहासिक लागत पर आधारित होता है इसमें मूल्य परिवर्तनों का समावेश नहीं होता है।

प्रश्न 5. कम्पनी के स्थिति विवरण (चिट्ठा) के दायित्व पक्ष की मदों को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– वित्तीय विवरणों के निम्न दोष या सीमाएँ हैं–

1. केवल रिपोर्ट मात्र– वित्तीय विवरण कम्पनी की स्थिति को पूर्ण रूप से व्यक्त नहीं करता है क्योंकि इसमें कुछ तथ्य अनुमानित होते हैं जिनकी वास्तविक स्थिति समापन के समय ज्ञात होती है।

2. वित्तीय स्थिति नहीं दर्शाता– वित्तीय विवरण कम्पनी की वास्तविक वित्तीय स्थिति को नहीं दर्शाता क्योंकि इसके अन्तर्गत दर्शाये जाने वाली सम्पत्तियों व दायित्वों का मूल्य विभिन्न आधारों पर मूल्यांकित होता है जो वास्तविक मूल्य से भिन्न होते हैं।

3. सारांश मात्र– वित्तीय विवरण पूर्ण रूप से विस्तृत नहीं होता है। यह एक सारांश मात्र होता है।

4. ऐतिहासिक लागत– वित्तीय विवरण ऐतिहासिक लागत पर आधारित होता है इसमें मूल्य परिवर्तनों का समावेश नहीं होता है।

प्रश्न 6. अधिकृत पूँजी तथा निर्गमित पूँजी में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– अधिकृत पूँजी और निर्गमित पूँजी में अंतर–

क्र.	अन्तर का आधार	अधिकृत पूँजी	निर्गमित पूँजी
1.	परिभाषा	पार्षद सीमानियम में उल्लेखित पूँजी अधिकृत पूँजी कहलाती है।	निर्गमित पूँजी वह है जो जनता में बेचने हेतु जारी की गयी है, यह अधिकृत पूँजी का भाग है।
2.	मात्रा	यह निर्गमित पूँजी के बराबर या अधिक हो सकती है।	यह अधिकृत पूँजी से कम अथवा बराबर हो सकती है।
3.	स्टाम्प ड्यूटी	अधिकृत पूँजी के अनुसार स्टाम्प ड्यूटी देय होती है।	निर्गमित पूँजी के अनुसार स्टाम्प ड्यूटी नहीं देना होती है।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 7. गैर चालू सम्पत्ति और गैर चालू दायित्व के दो–दो उदाहरण लिखिए।

उत्तर– 1. गैर चालू सम्पत्ति– शिल्प, भूमि भवन, उपकरण

2. गैर चालू दायित्व– दीर्घकालीन ऋण, प्रावधान

प्रश्न 8. रोकड़ एवं रोकड़ तुल्य में किन–मदों को दर्शाते है?

उत्तर– रोकड़ एवं रोकड़ तुल्य में बैंक शेष, हस्तस्थ रोकड़ तथा चैक, ड्राफ्ट को शामिल किया जाता है।

प्रश्न 9. वित्तीय विवरणों की प्रकृति बताइए।

उत्तर– वित्तीय विवरणों की प्रकृति निम्नांकित बातों से स्पष्ट होती है–

1. अंकित तथ्य– वित्तीय विवरण लेखा पुस्तकों में प्रविष्टि लागत समंकों के रूप में दर्ज तथ्यों के आधार पर तैयार किये जाते हैं। व्यवहारों का लेखा मूल लागत या ऐतिहासिक लागत के आधार पर किया जाता है।

2. लेखांकन परम्पराएँ– वित्तीय विवरण निर्दिष्ट लेखांकन परम्पराओं के आधार पर तैयार किये जाते हैं। जैसे– स्टॉक का मूल्यांकन लागत मूल्य तथा बाजार मूल्य दोनों जो कम हो, पर किया जाता है। इसी प्रकार स्थायी सम्पत्ति की लागतों से ह्रास घटाकर दर्शाया जाता है।

3. आधारभूत मान्यताएँ– वित्तीय विवरण कुछ विशिष्ट आधारभूत मान्यताओं के आधार पर तैयार किये जाते हैं। जैसे– चालू व्यवसाय संबंधी मान्यता, मौद्रिक माप संबंधी मान्यता तथा वसूली सम्बन्धी मान्यता आदि।

प्रश्न 10. वित्तीय विवरण की उपयोगिता को बताइए।

उत्तर– वित्तीय विवरण का महत्व निम्नलिखित है–

1. वित्तीय नीतियों के लिए आधार– वित्तीय नीतियाँ विशेष रूप से सरकार की कराधान नीतियाँ निर्गमित औद्योगिक संस्थान की कार्यक्षमता या निष्पादन से सम्बन्ध होती है। इस तरह से वित्तीय विवरण औद्योगिक कराधान तथा सरकार की अन्य आर्थिक नीतियों के लिए निर्विष्ट या निवेश प्रदान करते हैं।

2. प्रत्याशित निवेशकों के लिए आधार– निवेशकों में दीर्घकालिक और अल्पकालिक दोनों प्रकार के निवेशक होते हैं।

उनके निवेश के निर्णय में प्रमुख स्थान देने योग्य बात अपने निवेश के लिए न्यायोचित लाभ के साथ सुरक्षा एवं तरलता होती है।

3. ऋणों की स्वीकृति के लिए आधार– निर्गमित संस्थानों को बैंकों तथा अन्य वित्तीय संस्थानों से विभिन्न उद्देश्यों हेतु ऋण उठाने पड़ते हैं। ऋणदाता संस्थान निगमों के वित्तीय निष्पादनों के आधार पर ऋण स्वीकृत करते हैं। अतः वित्तीय विवरण ऋणों के स्वीकार के लिए आधार होते हैं।

प्रश्न 11. 'संचालन चक्र' से आप क्या समझते हैं?

उत्तर– इससे आशय उस समय से है जो एक कम्पनी प्राप्त सम्पत्ति के प्रोसेसिंग तथा उसे रोकड़ एवं रोकड़ तुल्य में परिवर्तित करने के लिये लगाती है। उदाहरण के लिये, एक निर्माणी कंपनी की दशा में उसके उत्पाद का संचालन चक्र उस लिये गये समय से होता है जो कच्चे माल के क्रय, प्रोसेसिंग द्वारा निर्मित माल, विक्रय तथा उसे रोकड़ तथा रोकड़ तुल्य में परिणित करने में लगता है।

प्रश्न 12. वित्तीय विवरणों का महत्व बताइए।

उत्तर– वित्तीय विवरणों के उद्देश्य व महत्व निम्न है– **(2013,16,19)**

(1) पर्याप्त एवं विश्वसनीय सूचना– यह इनका सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य है। यह व्यावसायिक उपक्रम के वित्तीय संसाधनों एवं दायित्वों के संबंध में विनियोक्ताओं तथा बाहरी व्यक्ति को सही-सही एवं पर्याप्त सूचनाएँ प्रदान करता है।

(2) अर्जन क्षमता के बारे में जानकारी– यह उपक्रम की अर्जन क्षमता के बारे में भी सही-सही जानकारी प्रदान करता है ताकि उसकी तुलना करने, मूल्यांकन करने एवं पूर्वानुमान में सुविधा हो।

(3) रोकड़ प्रवाह की जानकारी– विनियोक्ताओं तथा लेनदारों को व्यावसायिक उपक्रम के बारे में 'रोकड़ प्रवाह' की सही सूचना प्रदान करना ताकि रोकड़ प्रवाह की तुलना करने में, भावी अनुमान लगाने में तथा मूल्यांकन में सुविधा रहे।

(4) प्रबन्धकीय योग्यता– इनका उद्देश्य ऐसी उपयोगी सूचना प्रदान करता होता है कि उसके आधार पर व्यवसाय के संसाधनों का उचित उपयोग करने में प्रबंधकीय योग्यता का मूल्यांकन हो सके।

प्रश्न 13. वित्तीय विवरण अंकित तथ्यों लेखांकन परम्पराएँ तथा व्यक्तिगत निर्णयों के संयोजन को प्रतिबिंबित करते हैं? समझाइए।

उत्तर– वित्तीय विवरण अंकित तथ्यों लेखांकन परम्पराएँ तथा व्यक्तिगत निर्णयों के संयोजन निम्न प्रकार से हैं–

1. अंकित तथ्य (Recorded Facts)– वित्तीय विवरण लेखा पुस्तकों में प्रविष्ट लागत समंकों के रूप में दर्ज तथ्यों के आधार पर तैयार किये जाते हैं। व्यवहारों का लेखा मूल लागत या ऐतिहासिक लागत के आधार पर किया जाता है। उदाहरणार्थ, हस्तस्थ रोकड़, बैंक में रोकड़, प्राप्य विपत्र, विविध देनदार, अचल सम्पत्तियां आदि लेखा पुस्तकों में अंकित रकम के अनुसार होते है।

2. लेखांकन परम्पराएँ (Accounting Conventions)– वित्तीय विवरण निर्दिष्ट लेखांकन परम्पराओं के आधार पर तैयार किये जाते है। उदाहरण के लिए, लागत मूल्य या बाजार मूल्य दोनों में जो भी कम हो उस पर स्टॉक का मूल्यांकन करने की परम्परा, स्थायी सम्पत्तियों को लागत में से ह्रास घटाकर दर्शाने की परम्परा, छोटी-छोटी मदों को (पोस्टेज, टिकिट, स्टेशनरी आदि) भौतिक विद्यमानता (Materiality) के अनुसार दर्शाने (न कि लागत मूल्य या बाजार मूल्य दोनों में जो भी कम हो उस पर) की मान्यता आदि का पालन वित्तीय विवरणों में किया जाता है।

3. वैयक्तिक निर्णय (Personal Judgements)– अधिकांश मामलों में, वित्तीय विवरणों के माध्यम से प्रदर्शित किये जाने वाले तथ्य एवं समंक वैयक्तिक अभिमत, निर्णय तथा अनुमान के आधार पर ही होते हैं। उदाहरण के लिए, स्थायी सम्पत्ति पर लगाया जाने वाला ह्रास उसके उपयोगी आर्थिक जीवन को ध्यान में रखकर निश्चित किया जाता है।

प्रश्न 14. कम्पनी अधिनियम 2013 की अनुसूची 3 के भाग I के अंतर्गत चिट्ठे के अंशधारियों के कोष शीर्षक में क्या–क्या दर्शाया जाता है?

उत्तर– भाग I के अन्तर्गत चिट्ठे के 'अंशधारियों के कोष' शीर्षक में निम्न दर्शाया जाता है –

(1) अंश पूँजी, (2) संचय व आधिक्य, (3) अंश अधिपत्र।

प्रश्न 15. एक कम्पनी के तुलनपत्र में निम्नलिखित मदों को आप किस प्रकार दर्शाएँगे–

(1) चालू परि संपत्तियाँ– रहितया

(2) नोट पर टिप्पणी में दी आकस्मिक देयताएँ

(3) अंश धारक निधि – संचय एवं आधिक्य

उत्तर– (1) चालू परि संपत्तियाँ– रहितया– *इसे सम्पत्ति पक्ष के चालू सम्पत्तियों में दर्शाते है।*

(2) नोट पर टिप्पणी में दी आकस्मिक देयताएँ– दायित्व पक्ष में अन्य दायित्व में दर्शाया जाता है।

(3) अंश धारक निधि – संचय एवं आधिक्य– इसे तुलन पत्र में दायित्व पक्ष की ओर अंशधारियों के कोष में संचय एवं आधिक्य में दर्शाते है।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 16. वित्तीय विवरणों के निर्माण के उद्देश्यों का वर्णन कीजिए।

उत्तर– वित्तीय विवरण के निर्माण के निम्न उद्देश्य हैं–

1. व्यवसाय के संचालन के परिणाम का निर्धारण करना (Ascertaining the Results of Business Operation)– प्रत्येक व्यापारी या व्यवसाय का स्वामी अपने व्यवसाय के संचालन के परिणाम को लाभ या हानि के रूप में जानना चाहता है। आय विवरण या लाभ–हानि खाता इस उद्देश्य की पूर्ति करता है।

2. वित्तीय स्थिति का निर्धारण (Ascertaining the Financial Position)– वित्तीय विवरण किसी भी व्यापारिक संस्था की वित्तीय स्थिति को एक निश्चित तिथि पर दर्शाता है जो मुख्य रूप से वित्तीय वर्ष का अन्तिम दिन होता है। आर्थिक चिट्ठा या तुलन पत्र इस उद्देश्य हेतु बनाया जाता है।

3. सूचना का स्रोत (Source of Information)– वित्तीय विवरण व्यवसाय के सम्बन्ध में सूचना प्रदान करने का एक महत्वपूर्ण स्रोत है और वित्त सम्बन्धी सूचनाएँ एक वित्तीय प्रबन्धक को वित्तीय क्रियाओं के सम्बन्ध में योजना बनाने एवं फण्ड के उत्तम प्रयोग में सहायक होती है।

4. प्रबन्धकीय निर्णयन में सहायक (Helpful in Managerial Decision Making)– प्रबन्धक कम्पनी की लाभदायकता का तुलनात्मक अध्ययन गत वर्ष व चालू वर्ष के परिणामों से कर सकता है जो कि वित्तीय विवरणों द्वारा उपलब्ध हो जाते हैं एवं अपने प्रबन्धकीय निर्णय ले सकते हैं।

प्रश्न 17. वित्तीय विवरण की तीन विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर– (1) चिट्ठा किसी विशेष तिथि को बनाया जाता है तथा यह खाता नहीं वरन् एक विवरण है।

(2) लाभ–हानि विवरण में कंपनी के वित्तीय कार्य निष्पादन का प्रदर्शन होता है।

(3) चिट्ठे में लेखांकन समीकरण को मूर्त रूप दिया जाता है अर्थात् सम्पत्तियों का योग दायित्वों तथा पूँजी के योग में बराबर होता है।

प्रश्न 18. कम्पनी अधिनियम 2013 की अपेक्षाओं के अनुसार कम्पनी के चिट्ठे का प्रारूप दीजिए।

उत्तर–

Balance Sheet of .....

(As at.....)

विवरण	नोट क्र.	चालू वर्ष की राशि	पिछले वर्ष की राशि
Particulars	**Note No.**	**Figures as at the end of the current reporting period** ₹	**Figures as at the end of the previous reporting period** ₹
(1)	(2)	(3)	(4)
I. समता एवं दायित्व (Equity and Liabilities)			
1. अंशधारियों के कोष (Shareholders' Funds)			
(a) अंश पूँजी (Share Capital)			
(b) रिजर्व तथा आधिक्य (Reserves and Surplus)			
(c) अंश अधिपत्र के विरुद्ध प्राप्त राशि (Money Received against Share Warrants)			
2. आवंटन हेतु विचाराधीन अंश आवेदन राशि (Share Application Money Pending Allotment)			
3. गैर–चालू दायित्व (Non-Current Liabilities)			
(a) दीर्घकालीन उधारी (Long-term Borrowing)			
(b) आस्थगित कर दायित्व (शुद्ध) [Deferred Tax Liabilities (Net)]			

@MP_BOARD_25 (Telegram)

(c) अन्य दीर्घकालीन दायित्व (Other Long-term Liabilities)			
(d) दीर्घकालीन प्रावधान (Long-term Provisions)			
4 चालू दायित्व (Current Liabilities)			
(a) अल्पकालीन उधार (Short-term Borrowings)			
(b) [illegible] (Trade Payables)			
(c) अन्य चालू दायित्व (Other current liabilities)			
(d) अल्पकालीन प्रावधान (Short-term Provisions)			
योग (Total)			
II सम्पत्तियाँ (Assets)			
1 गैर चालू सम्पत्तियाँ (Non Current Assets)			
(a) स्थायी सम्पत्तियाँ (Fixed Assets)			
(i) मूर्त सम्पत्तियाँ (Tangible Assets)			
(ii) अमूर्त सम्पत्तियाँ (Intangible Assets)			
(iii) पूँजीगत चालू कार्य (Capital Work in Progress)			
(iv) [illegible] अमूर्त सम्पत्तियाँ (Intangible Assets under Development)			
(b) गैर चालू विनियोग (Non current Investments)			
(c) [illegible] (शुद्ध) (Deferred Tax Assets (Net))			
(d) दीर्घकालीन ऋण एवं अग्रिम (Long-term Loans and advances)			
(e) अन्य गैर चालू सम्पत्तियाँ (Other Non-current Assets)			
2 चालू सम्पत्तियाँ (Current Assets)			
(a) चालू विनियोग (Current Investments)			
(b) [illegible] (Inventories)			
(c) [illegible] (Trade Receivables)			
(d) [illegible] (Cash and Cash Equivalents)			
(e) अल्पकालीन ऋण एवं अग्रिम (Short-term Loans and Advances)			
(f) अन्य चालू सम्पत्तियाँ (Other Current Assets)			
योग (Total)			

प्रश्न 19 [illegible] 2013 के अनुसार [illegible] लाभ-हानि विवरण द्वारा प्रदर्शित सूचनाओं का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।

उत्तर— [illegible] (Total Revenue) [illegible] (Total Expenses) [illegible]

[illegible] (Moving Film) [illegible]

लाभ तथा हानि के विवरण [illegible]
(1) [illegible]
(2) [illegible]
(3) [illegible]
(4) [illegible]
(5) [illegible]
(6) यह कम्पनी अधिनियम, 2013 [illegible]

इकाई–4 वित्तीय विवरणों का विश्लेषण

■ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर :

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए-

(1) एक व्यावसायिक उपक्रम के वित्तीय विवरण में सम्मिलित होते हैं-
(a) चिट्ठा (b) लाभ-हानि विवरण
(c) रोकड़ प्रवाह विवरण (d) उपरोक्त सभी

(2) कम्पनी की वार्षिक रिपोर्ट को निर्गमित किया जाता है-
(a) संचालकों के लिए (b) लेनदारों के लिए
(c) अंशधारकों के लिए (d) बैंक के लिए

(3) चिट्ठा उपक्रम की वित्तीय स्थिति प्रस्तुत करता है-
(a) दी गई विशेष अवधि पर
(b) विशेष अवधि के दौरान
(c) विशेष अवधि के लिए
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

(4) निम्न वित्तीय विश्लेषण का कार्य नहीं है-
(a) अर्जन क्षमता का ज्ञान
(b) शोधन क्षमता का ज्ञान
(c) लाभ-हानि का ज्ञान
(d) वित्तीय सुदृढ़ता का ज्ञान

(5) एक व्यवसाय का उद्देश्य [illegible] होता है-
(a) [illegible]
(b) बिक्री बढ़ाना
(c) सम्पत्तियों में वृद्धि करना
(d) ख्याति अर्जित करना

उत्तर- (1) (d), (2) (c), (3) (a), (4) (c), (5) (a).

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(1) विश्लेषण का माध्यम वित्तीय ...... आंकड़े हैं।
(2) प्रतिवेदन का आधार ...... आंकड़े हैं।
(3) [illegible]
(4) वित्तीय विश्लेषण का [illegible]
(5) वित्तीय विवरण का विश्लेषण [illegible]
(6) वित्तीय विवरण [illegible]
(7) वित्तीय विवरण के विश्लेषण का [illegible] प्रस्तुत करना होता है।
(8) वित्तीय विवरण में [illegible] अनुपात में दिखाया जा सकता है।

उत्तर- (1) [illegible], (2) [illegible], (3) [illegible], (4) [illegible], (5) [illegible], (6) [illegible], (7) [illegible], (8) [illegible]।

प्रश्न 4. सत्य/असत्य लिखिए-

(1) व्यावसायिक उपक्रम के वित्तीय विवरण में रोकड़ प्रवाह विवरण सम्मिलित है।
(2) [illegible]
(3) [illegible]
(4) वित्तीय विश्लेषण [illegible]
(5) वित्तीय विश्लेषण [illegible]
(6) रोकड़ प्रवाह विवरण [illegible]
(7) [illegible]
(8) [illegible]

उत्तर- (1) सत्य, (2) सत्य, (3) [illegible], (4) असत्य, (5) [illegible], (6) सत्य, (7) सत्य, (8) सत्य।

■ लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर :

प्रश्न 1. वित्तीय विवरणों के विश्लेषण की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर– उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर वित्तीय विश्लेषण की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

(1) वित्तीय विश्लेषण विभिन्न वित्तीय आँकड़ों का तुलनात्मक प्रस्तुतीकरण होता है।

(2) वित्तीय विश्लेषण जटिल आँकड़ों को सरल व स्पष्ट रूप में व्यक्त करने की एक कला है।

(3) वित्तीय विश्लेषण वित्तीय मदों में परिवर्तन को स्पष्ट करता है।

(4) वित्तीय विश्लेषण विभिन्न वित्तीय मदों को स्पष्ट वर्गों में विभाजित करता है।

(5) वित्तीय विश्लेषण करने की अनेक विधियाँ हैं।

(6) वित्तीय विवरण विश्लेषण वित्तीय समंकों को उपयोगी सूचनाओं में परिवर्तित करता है।

प्रश्न 2. वित्तीय विवरणों के विश्लेषण का महत्व लिखिए।

उत्तर– (1) कम्पनी अधिनियम के प्रावधानों का परिपालन– प्रत्येक कम्पनी को कम्पनी अधिनियम, 2013 के प्रावधानों के अनुसार ही अपना स्थिति विवरण एवं आय विवरण बनाना पड़ता है। अतः वित्तीय विवरणों का विश्लेषण एक वैधानिक आवश्यकता है। इससे यह पता लग जाता है कि कहीं किसी प्रावधान का उल्लंघन तो नहीं हुआ है।

(2) वित्त की वस्तुस्थिति का आकलन– वित्तीय विवरणों का विश्लेषण व्यावसायिक उपक्रम की वास्तविक वित्तीय स्थिति का आकलन करने में सहायक होता है।

(3) ऋण प्राप्ति में सहायक– इसके आधार पर विभिन्न वित्तीय संस्थाओं से ऋण प्राप्त करने में सहायता मिलती है। इस कारण वित्तीय संस्थाएँ ऋण देते समय इन विश्लेषणों का गहन अध्ययन करती है तथा संतोषजनक स्थिति होने पर शीघ्र ऋण स्वीकृत कर देती है।

प्रश्न 3. वित्तीय विश्लेषण की पद्धतियाँ या तकनीक कौन–कौन सी है? संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर– वित्तीय विवरणों की विश्लेषण की पद्धतियाँ–

1. तुलनात्मक वित्तीय विवरण– तुलनात्मक वित्तीय विवरण से हमारा आशय ऐसे विवरणों से है, जो किसी व्यावसायिक उपक्रम की भिन्न-भिन्न अवधियों की वित्तीय स्थिति को प्रकट करते हैं।

2. प्रवृत्ति विश्लेषण– इसके अन्तर्गत सूचनाओं की शृंखलाओं की प्रवृत्ति ज्ञात करने के वित्तीय विवरणों का विश्लेषण किया जाता है। इसमें परिवर्तन की प्रत्येक मद की प्रवृत्तियों को प्रतिशत की गणना आधार वर्ष की मद को 100 मानकर की जाती है।

3. सम–आकार विवरण– सम आकार विवरणों का आशय उन विवरणों से है, जिनमें किसी समान आधार पर सभी मदों को प्रतिशत में बदल दिया जाता है।

4. फण्ड बहाव विवरण– फण्ड प्रवाह विवरण में कोषों के स्रोतों तथा कोषों के उपयोग अथवा कार्यशील पूंजी के स्रोतों एवं उपयोग के विवरण तैयार किये जाते हैं। कोष का आशय रोकड़ या कार्यशील पूंजी अथवा वित्तीय साधनों से है, जबकि प्रवाह का आशय परिवर्तन से है।

5. रोकड़ बहाव विवरण– रोकड़ प्रवाह विवरण का आशय उस विवरण से है, जिसमें रोकड़ के आधार पर किसी व्यावसायिक उपक्रम की वित्तीय स्थिति में परिवर्तन दर्शाया जाता है।

6. अनुपात विश्लेषण– जब लेखांकन की परस्पर संबंधित दो मदों के संबंध को गणितीय रूप में व्यक्त किया जाता है तो इसे अनुपात विश्लेषण की संज्ञा दी जाती है।

प्रश्न 4. वित्तीय विवरणों के विश्लेषण का महत्व समझाइए।

उत्तर– वित्तीय विश्लेषण निम्न वर्गों के लिए महत्वपूर्ण हैं–

1. प्रबन्धकों को– व्यवसाय के प्रबन्धक व्यवसाय की लाभदायकता, क्रियात्मक कार्यक्षमता, वित्तीय स्थिति तथा तरलता की माप वित्तीय विश्लेषण से कर सकते हैं। व्यवसाय की कमजोरियों का पता लगाकर इसके सुचारु रूप से संचालन हेतु आवश्यक नीतियों का निर्माण कर सकते हैं।

2. अंशधारियों को– इससे अंशधारी व्यवसाय की लाभदायकता की स्थिति का विश्लेषण कर उन्हें प्राप्त होने वाले लाभांश की मात्रा का अध्ययन कर सकते हैं तथा लाभांश के पुनर्विनियोग का भी निर्णय ले सकते हैं।

3. ऋणदाताओं को– व्यवसाय के लेनदार अल्पकालीन व दीर्घकालीन ऋणों की फर्म द्वारा भुगतान की स्थिति की जानकारी वित्तीय विश्लेषण से प्राप्त कर सकते हैं तथा फर्म को ऋण देने या न देने का निर्णय ले सकते हैं।

4. सरकार को– वित्तीय विवरण सरकार को आर्थिक विकास की नीतियाँ बनाने, कर निर्धारण करने, संसाधनों को बाँटने एवं प्रयोग का निर्णय लेने में सहायक होते हैं।

प्रश्न 5. लेखांकन के विश्लेषण अनुपातों के उद्देश्य का वर्णन कीजिए।

उत्तर– वित्तीय विवरण का महत्व निम्नलिखित हैं–

1. वित्तीय नीतियों के लिए आधार– वित्तीय नीतियाँ विशेष रूप से सरकार की कराधान नीतियाँ निर्गमित औद्योगिक संस्थान की कार्यक्षमता या निष्पादन से संबद्ध होती है। इस तरह से वित्तीय विवरण औद्योगिक कराधान तथा सरकार की अन्य आर्थिक नीतियों के लिए निर्विष्ट या निवेश प्रदान करते हैं।

2. प्रत्याशित निवेशकों के लिए आधार– निवेशकों में दीर्घकालिक और अल्पकालिक दोनों प्रकार के निवेशक होते हैं। उनके निवेश के निर्णय में प्रमुख स्थान देने योग्य बात अपने निवेश के लिए न्यायोचित लाभ के साथ सुरक्षा एवं एवं तरलता होती है।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

3. ऋणों की स्वीकृति के लिए आधार– निर्गमित संस्थानों को बैंकों तथा अन्य वित्तीय संस्थानों से विभिन्न उद्देश्यों हेतु ऋण उठाने पड़ते है। ऋणदाता संस्थान निगमों के वित्तीय निष्पादनों के आधार पर ऋण स्वीकृत करते हैं। अतः वित्तीय विवरण ऋणों केक स्वीकार के लिए आधार होते हैं।

4. व्यापार संगठनों को अपने सदस्यों की सहायता में सहायता– व्यापार संगठन इस उद्देश्य के लिए वित्तीय विवरणों का विश्लेषण कर सकते हैं कि वे अपने सदस्य को सेवा और सुरक्षा प्रदान कर सकें। वे एक मानक अनुपात विकसित कर सकते हैं और खातों के लिए एक रूपी व्यवस्था निर्मित कर सकते हैं।

5. प्रतिभूति बाजार की सहायता– वित्तीय विवरण प्रतिभूति बाजार को वित्तीय निष्पादनों के रिपोर्ट में पारदर्शिता की सीमा को समझने में सहायता करते हैं तथा इन्हें इस योग्य बनाते हैं कि वे निवेशक के हित की रक्षा के लिए अपेक्षित सूचनाओं के लिए माँग कर सकें।

प्रश्न 6. वित्तीय विवरणों के विश्लेषण का महत्व बताइए।

उत्तर– वित्तीय विवरण के विश्लेषण की सीमाएँ निम्नलिखित हैं–

(1) वित्तीय विवरण की सीमाएँ– वित्तीय विवरण को अपने आप में अनेक सीमाएँ हैं। वित्तीय विवरण ऐतिहासिक लागत पर आधारित होता है। यह भविष्य में होने वाले परिवर्तनों को सम्मिलित नहीं करता। चिट्ठे में प्रदर्शित मदों के मूल्यांकन की विधियों में भी भिन्नता रहती है।

(2) गुणात्मकता का अभाव– व्यवसाय के गुणात्मक तत्वों को वित्तीय विवरण में शामिल नहीं किया जाता है, जैसे– प्रबन्धकों का ज्ञान, तकनीकी विशेषता, मानवीय संसाधन की गुणवत्ता आदि।

(3) वित्तीय विवरण बोलने में अक्षम– वित्तीय विवरण में प्रदर्शित समंक स्वयं बोलने में असमर्थ होते हैं। इन समंकों का बोलना विशेषज्ञ की सोच व ज्ञान पर निर्भर करता है।

(4) एकरूपता का अभाव– वित्तीय विवरण के निर्माण में अपनायी गयी विभिन्न विधियों व तकनीकों में चुनाव की सुविधा के कारण वित्तीय विवरणों में एकरूपता का अभाव रहता है।

प्रश्न 7. वित्तीय विवरण के विश्लेषण की सीमा समझाइए।

उत्तर– वित्तीय विवरण के विश्लेषण की सीमाएँ निम्नलिखित हैं–

(1) वित्तीय विवरण की सीमाएँ– वित्तीय विवरण को अपने आप में अनेक सीमाएँ हैं। वित्तीय विवरण ऐतिहासिक लागत पर आधारित होता है। यह भविष्य में होने वाले परिवर्तनों को सम्मिलित नहीं करता। चिट्ठे में प्रदर्शित मदों के मूल्यांकन की विधियों में भी भिन्नता रहती है।

(2) गुणात्मकता का अभाव– व्यवसाय के गुणात्मक तत्वों को वित्तीय विवरण में शामिल नहीं किया जाता है, जैसे– प्रबन्धकों का ज्ञान, तकनीकी विशेषता, मानवीय संसाधन की गुणवत्ता आदि।

(3) वित्तीय विवरण बोलने में अक्षम– वित्तीय विवरण में प्रदर्शित समंक स्वयं बोलने में असमर्थ होते हैं। इन समंकों का बोलना विशेषज्ञ की सोच व ज्ञान पर निर्भर करता है।

(4) एकरूपता का अभाव– वित्तीय विवरण के निर्माण में अपनायी गयी विभिन्न विधियों व तकनीकों में चुनाव की सुविधा के कारण वित्तीय विवरणों में एकरूपता का अभाव रहता है। ❑

@MP_BOARD_25 (Telegram)

इकाई–5

लेखांकन अनुपात

अंकवार प्रश्नों की संख्या				कुल अंक
वस्तुनिष्ठ प्रश्नों (1 अंक)	अति लघुउत्तरीय प्रश्न (2 अंक)	लघुउत्तरीय प्रश्न (3 अंक)	विश्लेषणात्मक प्रश्न (4 अंक)	
2	1	–	–	4

◘ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर :

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए–

(1) तरल अनुपात जाना जाता है–

(a) व्यय परीक्षण (b) आय परीक्षण
(c) अम्ल परीक्षण (d) द्रव्य परीक्षण

(2) आदर्श चालू अनुपात है–

(a) 1 : 1 (b) 2 : 1
(c) 1 : 2 (d) 3 : 2

(3) आदर्श तरल अनुपात होना चाहिए–

(a) 1 : 1 (b) 2 : 1
(c) 3 : 2 (d) 1 : 2

(4) दीर्घकालीन शोधन क्षमता ज्ञात करने के लिए अनुपात गणना की जाती है–

(a) तरलता अनुपात (b) क्रियाशीलता अनुपात
(c) लाभदायकता अनुपात (d) शोधन क्षमता अनुपात

(5) निम्नलिखित में से कौन-सी तरल संपत्ति है -
(a) रहतिया (b) देनदार
(c) ख्याति (d) फर्नीचर

(6) सकल लाभ अनुपात में सकल लाभ का संबंध स्थापित करते हैं -
(a) कार्यशील पूँजी से (b) कुल पूँजी से
(c) शुद्ध विक्रय से (d) अंश पूँजी से

(7) आदर्श ऋण समता अनुपात है -
(a) 3 : 2 (b) 1 : 2 (c) 1 : 1 (d) 2 : 1

(8) पूँजी आवर्त अनुपात संबंध स्थापित करता है -
(a) विक्रय और विनियोजित पूँजी में
(b) शुद्ध विक्रय और विनियोजित पूँजी में
(c) विक्रय और क्रय अनुपात में
(d) इनमें से कोई नहीं

(9) संचालन अनुपात है -
(a) लाभदायकता अनुपात (b) क्रियाशीलता अनुपात
(c) शोधन क्षमता अनुपात (d) तरलता अनुपात

(10) यदि चालू अनुपात 2 : 5 है और चालू दायित्व 25,000 रु. है, तो चालू संपत्ति की राशि होगी -
(a) 10,000 रु. (b) 12,500 रु.
(c) 25,000 रु. (d) 30,000 रु.

उत्तर - (1) (c), (2) (b), (3) (a), (4) (d), (5) (a), (6) (c), (7) (d), (8) (b), (9) (a), (10) (a)।

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

(1) दो पारस्परिक आँकड़ों के मध्य संबंध बताने को .... कहते हैं।
(2) लेखांकन अनुपात .... तथ्यों की अवहेलना करते हैं।
(3) स्वामित्व अनुपात, स्वामित्व कोष और .... के बीच संबंध प्रदर्शित करता है।
(4) तरलता से तात्पर्य परिसम्पत्तियों को .... में परिवर्तित करने की क्षमता से है।
(5) ऋण समता अनुपात .... शोधन क्षमता की जाँच करता है।
(6) चालू अनुपात को .... पूँजी अनुपात भी कहा जाता है।
(7) बेचे गए माल की लागत = ... - सकल लाभ
(8) .... अनुपात से अल्पकालीन वित्तीय स्थिति का पता चलता है।
(9) आदर्श तरल अनुपात .... माना जाता है।
(10) सकल लाभ अनुपात की गणना .... विक्रय पर की जाती है।

उत्तर - (1) अनुपात, (2) गुणात्मक, (3) कुल सम्पत्ति, (4) रोकड़, (5) ऋण, (6) कार्यशील, (7) विक्रय, (8) तरल, (9) 2 : 1, (10) शुद्ध।

प्रश्न 3. सही जोड़ी बनाइये -

(I)

	(A)	(B)
(1)	स्वामित्व कोष	(a) ऋण समता अनुपात
(2)	देनदार	(b) तरलता अनुपात
(3)	अल्पकालीन ऋण का भुगतान	(c) स्वामित्व अनुपात
(4)	दीर्घकालीन ऋण का भुगतान	(d) चालू दायित्व
(5)	पूँजी और विक्रय में संबंध	(e) कार्यशील पूँजी आवर्त अनुपात

उत्तर - (1) (c), (2) (d), (3) (b), (4) (a), (5) (e)।

(II)

	(A)	(B)
(1)	आदर्श त्वरित अनुपात माना जाता है	(a) संचालन अनुपात कहलाता है
(2)	आदर्श चालू अनुपात माना जाता है	(b) चल संपत्तियों तथा चालू दायित्व के बीच
(3)	कुल लागत तथा विक्रय में संबंध	(c) संचालन लाभ तथा शुद्ध बिक्री के बीच दर्शाने वाला अनुपात
(4)	चालू अनुपात में संबंध दर्शाया जाता है	(d) 1 : 1
(5)	सकल लाभ अनुपात में संबंध दर्शाया जाता है	(e) 2 : 1

उत्तर - (1) (d), (2) (e), (3) (a), (4) (b), (5) (c)।

प्रश्न 4. सत्य / असत्य लिखिए -

(1) एक अनुपात मात्रात्मक एवं गुणात्मक, दोनों पहलू को दर्शाता है।
(2) अनुपात एक फर्म के विभिन्न लेखांकन अवधियों के परिणामों के साथ-साथ अन्य व्यावसायिक उद्यमों से तुलना में सहायता करते हैं।
(3) चालू अनुपात व्यवसाय की तरलता की माप करते हैं।
(4) औसत वसूली अवधि में कमी देनदारों से शीघ्र वसूली को दर्शाता है।
(5) कार्यशील पूंजी का संबंध चालू सम्पत्तियों एवं चालू दायित्वों से है।
(6) ऋण समता अनुपात अल्प अवधि की वित्तीय स्थिति की माप करता है।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

(7) स्टॉक में वृद्धि से तरल अनुपात में कमी होगी।
(8) तरलता अनुपात का संबंध सम्पत्तियों को नकद में परिवर्तित करने की क्षमता से है।
(9) क्रियाशीलता अनुपात को आवर्त अनुपात भी कहा जाता है।
(10) आदर्श तरल अनुपात 2 : 1 होता है।

उत्तर- (1) असत्य, (2) असत्य, (3) असत्य, (4) सत्य, (5) सत्य, (6) असत्य, (7) सत्य, (8) सत्य, (9) सत्य, (10) असत्य।

प्रश्न 5. एक शब्द/वाक्य में उत्तर लिखिए-

(1) जिन दायित्वों का भुगतान 1 वर्ष के अंदर होना है, उन्हें क्या कहते हैं?
(2) किस अनुपात का संबंध तरल सम्पत्ति एवं चालू दायित्व से है?
(3) किस अनुपात का संबंध बेचे गए माल की लागत एवं औसत स्कंध से है?
(4) उधार विक्रय की वसूली अवधि किस अनुपात के द्वारा प्रकट होती है?
(5) आदर्श चालू अनुपात क्या है?
(6) आदर्श तरल अनुपात क्या है?
(7) चालू अनुपात की कौन-सी वित्तीय स्थिति को प्रकट करता है?
(8) शोधन क्षमता अनुपात से क्या ज्ञात किया जाता है?
(9) कौन-सी चालू सम्पत्तियों को तरल सम्पत्तियां में सम्मिलित नहीं किया जाता है?
(10) कुल लागत कुल विक्रय के बराबर कहाँ होती है।

उत्तर-(1) चालू दायित्व, (2) तरलता अनुपात, (3) स्कंध आवर्त, (4) देनदार आवर्त, (5) 2 : 1, (6) 1 : 1, (7) कार्यशील पूँजी की, (8) बाह्य दायित्वों पर निर्भरता, (9) स्कन्ध (स्टॉक), (10) सम विच्छेद बिन्दु।

◘ लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर :

प्रश्न 1. लेखांकन अनुपात से क्या आशय है?

उत्तर- लेखांकन अनुपात का अर्थ- वित्तीय विवरणों पर आधारित अनुपात को लेखांकन अनुपात कहा जाता है। इन्हें वित्तीय अनुपात भी कहा जाता है। अन्य शब्दों में, दो लेखांकन आँकड़ों के मध्य सम्बन्ध स्थापित करने को ही **लेखांकन अनुपात** कहते हैं। विभिन्न लेखांकन आँकड़ों के मध्य सम्बन्ध अर्थपूर्ण एवं उद्देश्यपूर्ण होना चाहिये। यह सम्बन्ध विक्रय एवं शुद्ध लाभ अथवा कुल विक्रय एवं देनदार के मध्य हो सकता है। यह सम्बन्ध वेतन तथा देनदार के मध्य नहीं हो सकता है, क्योंकि ये दोनों एक-दूसरे से सम्बन्धित नहीं हैं।

प्रश्न 2. चालू दायित्व से क्या आशय है?

उत्तर- चालू दायित्व- एक दायित्व को चालू दायित्व तभी माना जाएगा, जब वह निम्नलिखित में से किसी एक मापदण्ड को पूरा करता हो-

(अ) यह सम्भावना हो कि इसका भुगतान कम्पनी के सामान्य संचालन चक्र में किया जाता है।
(ब) यह मूलतः व्यापार करने के उद्देश्य से रखा गया है।
(स) इसका निपटारा (भुगतान) प्रतिवेदन की तिथि के बाद के बारह माह में ही होना है।
(द) विवरण तिथि के बाद कम से कम बारह माह के लिए दायित्व के भुगतान को स्थगित करने का शर्त रहित कोई अधिकार नहीं है।

अन्य सभी दायित्वों को गैर-चालू दायित्वों के रूप में वर्गीकृत किया जायेगा।

उदाहरण- चालू दायित्व (Current Liabilities)

(1) विविध लेनदार (Sundry Creditors)
(2) देय विपत्र (Bills Payable)
(3) बैंक अधिविकर्ष (Bank Overdraft)
(4) अदत्त व्यय (Outstanding Expenses)

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 3. चालू सम्पत्ति से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- चालू सम्पत्ति- एक सम्पत्ति को चल या चालू रूप में तभी माना जायेगा, जब वह निम्नलिखित में से किसी एक कसौटी को पूरा करती हो-

(अ) कम्पनी के सामान्य संचालन चक्र में उसकी वसूली होने की सम्भावना है या जिसके विक्रय या उपभोग की संभावना है।
(ब) उसे मूलतः व्यापार करने के उद्देश्य से रखा गया हो।
(स) उसके विवरण तिथि के बाद के बारह माह के अन्दर वसूल होने की संभावना है।
(द) जब तक उसका विनिमय प्रतिबन्धित न हो, वह रोकड़ या रोकड़ तुल्य के रूप में है या प्रतिवेदन की तिथि के बाद कम से कम बारह माह के लिये किसी दायित्व के निपटाने में किया गया हो।

शेष सभी सम्पत्तियों को गैर-चालू (अचल) के रूप में माना जायेगा।

उदाहरण- चालू सम्पत्तियाँ (Current Assets)

(1) हस्तस्थ रोकड़ (Cash in hand)
(2) बैंक में रोकड (Cash at Bank)
(3) विविध देनदार (Sundry Debtors)
(4) प्राप्य विपत्र (Bills Receivable)

प्रश्न 4. तरलता अनुपात क्या है?

उत्तर- तरलता अनुपात- वे अनुपात जो किसी संस्था की अल्पकालीन शोधन क्षमता या तरलता को बताते है, उन्हे तरलता अनुपात या अल्पकालीन शोधन क्षमता अनुपात कहते हैं।

प्रश्न 5. किन्हीं चार चालू दायित्वों के नाम लिखिए।

उत्तर– (1) लेनदार, (2) अग्रिम प्राप्ति, (3) अवसाप्त लाभ, (4) आयोजन।

प्रश्न 6. शीघ्र सम्पत्ति किसे कहते हैं?

उत्तर– कोई व्यवसाय अपने चालू दायित्वों का कितनी शीघ्रता से भुगतान कर सकता है, ज्ञात करने के लिए तरल अनुपात को ज्ञात किया जाता है। तरलता से आशय व्यवसाय की सम्पत्तियों को रोकड़ में परिवर्तित करने की क्षमता से है। इसमें समस्त चालू सम्पत्तियों को सम्मिलित किया जाता है, किन्तु स्टॉक तथा पूर्वदत्त व्यय को शामिल नहीं करते हैं, क्योंकि इन्हें शीघ्र ही रोकड़ में परिवर्तित नहीं किया जा सकता है। तरल सम्पत्ति को शीघ्र सम्पत्ति भी कहा जाता है।

प्रश्न 7. त्वरित अनुपात क्या है?

उत्तर– तरलता अनुपात तरल सम्पत्तियों तथा चल दायित्वों के बीच सम्बन्ध स्थापित करता है। तरल सम्पत्तियों से हमारा आशय उन सम्पत्तियों से है, जो बिना कोई नुकसान उठाए अविलम्ब नकदी में परिवर्तित की जा सकती हैं। तरलता अनुपात ज्ञात करने का मुख्य उद्देश्य सही अर्थ में कम्पनी की तरलता का पता लगाना होता है तथा यह सुनिश्चित करना होता है कि कम्पनी किस सीमा तक तत्काल अपने चल दायित्वों का भुगतान करने की क्षमता रखती है।

प्रश्न 8. ऋण समता अनुपात क्या है? यह क्या दर्शाता है?

उत्तर– ऋण समता अनुपात दीर्घकालीन ऋणों और अंशधारियों के कोष के बीच संबंध करता है। इस अनुपात की गणना फर्म की वित्तीय स्थिति ज्ञात करने के लिए की जाती है।

(1) आदर्श ऋण समता अनुपात 2 : 1 माना जाता है। अर्थात अंशधारियों का कोष, दीर्घकालीन ऋणों की तुलना में दुगना होना चाहिए।

(2) इस अनुपात के विश्लेषण में विनियोगकर्ता रुचि दिखाते हैं, क्योंकि इनके द्वारा व्यवसाय में लगाए गये मूलधन की सुरक्षा एवं उस पर नियमित रूप से मिलने वाले ब्याज (प्रतिफल) की सुरक्षा का पता चल जाता है।

(3) यह अनुपात जितना कम होता है, उतना ही दीर्घकालीन ऋणदाताओं के लिये अच्छा माना जाता है। इसके विपरीत 2 : 1 से अधिक होने पर यह व्यवसाय की जोखिमपूर्ण वित्तीय स्थिति को प्रकट करेगा।

प्रश्न 9. दीर्घकालीन ऋण से आप क्या समझते हैं? उदाहरण दीजिए।

उत्तर– दीर्घकालीन उधारी (Long-term Borrowings), जैसे बंधक पत्र, ऋणपत्र, सावधि ऋण, आस्थगित भुगतान दायित्व, 12 माह देय निक्षेप, सम्बन्ध पक्षों में ऋण व अग्रिम, दीर्घकालीन देय तो आदि।

प्रश्न 10. बेचे गए माल की लागत किस प्रकार ज्ञात करेंगे?

उत्तर– (1) बेचे गए माल की लागत = प्रा. रहतिया + क्रय + प्रत्यक्ष व्यय – अंतिम रहतिया।

(2) बेचे गए माल की लागत = शुद्ध विक्रय – सकल लाभ।

प्रश्न 11. औसत वसूली अवधि क्या होती है?

उत्तर– औसत वसूली अवधि अनुपात यह दर्शाता है कि माल उधार बेचने के बाद उपक्रम को रकम की वसूली के लिए औसतन कितने दिन तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है।

औसत वसूली अवधि = वर्ष में दिन की संख्या/देनदार आवर्त अनुपात

प्रश्न 12. सकल लाभ अनुपात को समझाइए?

उत्तर– यह अनुपात सकल लाभ तथा संचालन से आय या शुद्ध बिक्री में संबंध स्थापित करता है। इसकी गणना प्रतिशत में की जाती है। इसका मुख्य उद्देश्य उत्पादन तथा क्रय-विक्रय क्रियाओं में कार्यकुशलता का निर्धारण करना होता है। सकल लाभ अनुपात व्यापारिक क्रियाओं में कार्यकुशलता तथा विक्रय मूल्य के निर्धारण में मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है। सकल लाभ इतना पर्याप्त होना चाहिए कि व्यय, लाभांश, संचय निर्माण आदि की पूर्ति कर सके। सकल लाभ अनुपात से पिछले वर्ष तथा चालू वर्ष के निष्पादन की तुलना आसानी से की जा सकती है।

प्रश्न 13. शुद्ध लाभ अनुपात क्या है?

उत्तर– इसे शुद्ध लाभ विक्रय अनुपात भी कहते हैं। यह अनुपात कर के बाद शुद्ध लाभ का संबंध शुद्ध विक्रय से स्थापित करता है। इस अनुपात की गणना का मुख्य उद्देश्य समस्त व्ययों को काटने के बाद अंशधारियों को प्राप्त होने वाली विक्रय की आय की राशि ज्ञात करना है।

$$\text{शुद्ध लाभ अनुपात} = \frac{\text{कर के बाद शुद्ध लाभ}}{\text{विक्रय}}$$

प्रश्न 14. संचालन व्यय के नाम लिखिए।

उत्तर– संचालन व्यय (Operating Expenses)- ये व्यवसाय के अप्रत्यक्ष व्यय होते हैं। इनमें प्रायः निम्न व्ययों को सम्मिलित किया जाता है-

(1) कार्यालय एवं प्रशासनिक व्यय, जैसे- वेतन, डाक, हास आदि। (2) विक्रय एवं वितरण व्यय

(3) दी गई कटौती

(4) डूबत एवं संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान

(5) अल्पकालीन ऋणों पर ब्याज

प्रश्न 15. तरलता अनुपात को समझाइए।

उत्तर– तरलता से आशय कम्पनी की अपने चालू दायित्वों को शोधन करने की क्षमता से होता है। कम्पनी की अल्पकालीन शोधन क्षमता का पता लगाने के लिये तरलता अनुपातों की गणना की जाती है। इन अनुपातों से यह पता लगता है कि कम्पनी अपनी अल्पकालीन सम्पत्तियों से अपने अल्पकालीन

@MP_BOARD 25 (Telegram)

दायित्वों के भुगतान करने की स्थिति में है या नहीं। व्यवसाय के अल्पकालीन ऋणदाता इन अनुपातों में विशेष रुचि रखते हैं। ये अनुपात फर्म की कार्यशील पूँजी की पर्याप्तता को प्रदर्शित करते हैं। ये अनुपात लेनदारों एवं बैंक की दृष्टि से महत्वपूर्ण होते हैं। तरलता अनुपात को निम्न दो भागों में बाँटा गया है-

(i) चालू अनुपात (Current Ratio)

(ii) तरल अनुपात (Liquid Ratio)

प्रश्न 16. प्रमुख तरलता अनुपात के नाम लिखिए।

उत्तर– (1) चालू अनुपात (Current Ratio)

(2) तरल अनुपात (Liquid Ratio)

प्रश्न 17. चालू अनुपात या कार्यशील पूँजी अनुपात को समझाइए।

उत्तर– चालू अनुपात या कार्यशील पूँजी अनुपात (Current Ratio or Working Capital Ratio)- इस अनुपात से व्यवसाय की अल्पकालीन वित्तीय स्थिति का ज्ञान होता है। यह अनुपात इस बात को प्रकट करता है कि व्यवसाय की चालू सम्पत्तियाँ चालू दायित्वों के भुगतान के लिये पर्याप्त हैं या नहीं। इस प्रकार से यह अनुपात व्यवसाय की चालू सम्पत्तियों और चालू दायित्वों के बीच सम्बन्ध को प्रकट करता है। इसके लिये निम्न सूत्र का प्रयोग किया जाता है-

$$\text{Current Ratio} = \frac{\text{Current Assets}}{\text{Current Liabilities}}$$

चालू सम्पत्तियों (Current Assets) में उन सम्पत्तियों को सम्मिलित किया जाता है, जिन्हें एक वर्ष के अन्दर रोकड़ में परिवर्तित किया जा सकता हो। जबकि चालू दायित्वों (Current Liabilities) में उन ऋणों को शामिल किया जाता है जिनका भुगतान एक वर्ष में करना रहता है।

प्रश्न 18. शोधन क्षमता से क्या आशय है?

उत्तर– शोधन क्षमता अनुपातों का आशय किसी कम्पनी के दीर्घकालीन दायित्वों की पूर्ति करने की योग्यता से है। शोधन क्षमता अनुपातों में निम्नांकित अनुपात महत्वपूर्ण माने जाते हैं–

(1) ऋणसमता अनुपात (Debt to Equity Ratio)

(2) कुल सम्पत्तियाँ- ऋण अनुपात (Total Assets to Debt Ratio)

(3) स्वामित्व अनुपात (Proprietory Ratio)

(4) ब्याज सुरक्षा अनुपात (Interest Coverage Ratio)

प्रश्न 19. प्रमुख शोधन क्षमता अनुपात के नाम लिखिए।

उत्तर– (1) ऋण समता अनुपात, (2) स्वामित्व अनुपात, (3) ब्याज सुरक्षा अनुपात।

प्रश्न 20. क्रियाशीलता अनुपात क्या है?

उत्तर– अर्थ– क्रियाशीलता अनुपात (कार्यकुशलता, निष्पादन या आवर्त्त अनुपात) एक प्रकार की वह माप है जिससे यह पता लगाया जाता है कि एक व्यावसायिक उपक्रम के उपलब्ध साधनों का किस सीमा तक कुशलतम उपयोग हुआ है। ये अनुपात संचालन स्तर की माप [illegible] उच्च आवर्त अनुपात इस बात का प्रतीक है कि पूँजी या सम्पत्ति का श्रेष्ठतम उपयोग हुआ है जिससे फलस्वरूप लाभदायकता अनुपात अच्छा हुआ है।

प्रश्न 21. क्रियाशीलता अनुपात के नाम लिखिए।

उत्तर– क्रियाशीलता अनुपातों में निम्नलिखित अनुपात प्रमुख हैं– (A) स्कंध आवर्त अनुपात (B) देनदार आवर्त अनुपात (C) लेनदार आवर्त अनुपात (D) कार्यशील पूँजी आवर्त अनुपात।

प्रश्न 22. लाभदायकता अनुपात से क्या आशय है?

उत्तर– किसी भी व्यवसाय की कार्यकुशलता का मापदण्ड उसकी लाभदायकता (Profitability) है। जिन अनुपातों की सहायता से किसी उपक्रम की लाभदायकता ज्ञात की जाती है उन्हें लाभदायकता अनुपात कहते हैं।

प्रश्न 23. किन्हीं चार लाभदायकता अनुपात के नाम लिखिए।

उत्तर– प्रमुख लाभदायकता अनुपात निम्न प्रकार हैं–

(A) सकल लाभ अनुपात (Gross Profit Ratio)

(B) संचालन अनुपात (Operating Ratio)

(C) संचालन लाभ अनुपात (Operating profit ratio)

(D) शुद्ध लाभ अनुपात (Net Profit Ratio)

(E) विनियोग पर प्रत्याय या विनियोजित पूँजी पर प्रत्याय अनुपात (Return on Investment or Return on Capital Employed Ratio)

प्रश्न 24. अंशधारियों का कोष किसे कहते हैं?

उत्तर– 'समता' (Equity) वह दायित्व है, जो अंशधारियों के प्रति होता है। इसे 'अंशधारियों के कोष' (Shareholders' Funds) संज्ञा दी जाती है। इसमें अंशपूँजी, संचय एवं आधिक्य तथा अंशअधिपत्र के विरुद्ध प्राप्त राशि सम्मिलित है।

प्रश्न 25. इसमें किन मदों को शामिल किया जाता है?

उत्तर– (1) अंश पूँजी (2) संचय एवं आधिक्य (3) अंशअधिपत्र के विरुद्ध राशि।

प्रश्न 26. ए लिमिटेड का तरल अनुपात 2 : 1 है। यदि स्टॉक 60,000 रु. और चालू दायित्व 1,50,000 रु. है तो चालू अनुपात की गणना कीजिए।

हल– Liquid Ratio = 2 : 1

$$\text{Liquid Ratio} = \frac{\text{Liquid Assets}}{\text{Current Liabilities}} = \frac{2}{1}$$

$$\text{Liquid Assets} = \frac{1,50,000 \times 2}{1} = 3,00,000$$

$$\text{Current Assets} = \text{Liquid Assets} + \text{Stock}$$
$$= 3,00,000 + 60,000 = 3,60,000$$

@MP_BOARD_25 (Telegram)

$$\text{Current Ratio} = \frac{\text{Current Assets}}{\text{Current Liabilities}}$$

$$= \frac{3,60,000}{1,50,000} = 2.4 : 1$$

प्रश्न 27. निम्न जानकारी से ऋण समता अनुपात की गणना कीजिए–

कुल परिसम्पत्तियाँ 1,50,000 रु. चालू दायित्व 6,00,000 रु., कुल ऋण 12,00,000

उत्तर– ऋण समता (Debt Equity Ratio)

$$= \frac{\text{दीर्घकालीन ऋण (Long-term Loans)}}{\text{अंशधारियों का कोष (Shareholder's Funds)}}$$

$$= \frac{6,00,000}{9,00,000} = 2 : 1$$

प्रश्न 28. लेखांकन अनुपात के उद्देश्य लिखिए।

उत्तर– मुख्य रूप से अनुपात विश्लेषण निम्न उद्देश्यों की पूर्ति करता है–

1. वित्तीय पूर्वानुमान व नियोजन– अनेक वर्षों के लेखांकन अनुपातों की गणना करके व्यवसाय की प्रवृत्ति का निर्धारण किया जा सकता है। इस प्रवृत्ति के आधार पर संस्था वित्तीय पूर्वानुमान लगाकर वित्तीय योजनाओं को बना सकती है।

2. तुलनात्मक अध्ययन में सुविधा– अनुपातों के द्वारा क्षमता की माप की जाती है। इस कारण संस्था के अन्तर्गत विभिन्न विभागों का आपस में एक फर्म का दूसरी फर्म से, एक वर्ष का दूसरे वर्षों से तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

3. नियंत्रण में सहायक– अनुपात विश्लेषण के द्वारा व्यवसाय पर प्रभावी नियंत्रण किया जा सकता है। अनुपात विचरणों की गणना कर उन्हें दूर करने का प्रयास किया जा सकता है।

प्रश्न 29. अनुपात विश्लेषण का महत्व लिखिए।

उत्तर– (1) कम्पनी अधिनियम के प्रावधानों का परिपालन– प्रत्येक कम्पनी को कम्पनी अधिनियम, 2013 के प्रावधानों के अनुसार ही अपना स्थिति विवरण एवं आय विवरण बनाना पड़ता है। अतः वित्तीय विवरणों का विश्लेषण एक वैधानिक आवश्यकता है। इससे यह पता लग जाता है कि कहीं किसी प्रावधान का उल्लंघन तो नहीं हुआ है।

(2) फर्म की वस्तुस्थिति का आकलन– वित्तीय विवरणों का विश्लेषण व्यावसायिक उपक्रम की वास्तविक वित्तीय स्थिति का आकलन करने में सहायक होता है।

(3) ऋण प्राप्ति में सहायक– इसके आधार पर विभिन्न वित्तीय संस्थाओं से ऋण प्राप्त करने में सहायता मिलती है। इस कारण वित्तीय संस्थाएं ऋण देते समय इन विश्लेषणों का गहन अध्ययन करती हैं तथा संतोषजनक स्थिति होने पर शीघ्र ऋण स्वीकृत कर देती हैं।

(4) भावी नियोजन तथा पूर्वानुमान में सहायक– वित्तीय विवरणों के विश्लेषण से भावी योजनाओं को तैयार करने में तथा पूर्वानुमान लगाने के लिए उपयोगी तथ्य प्राप्त होते हैं। वास्तविक कार्य निष्पादनों की तुलनात्मक निष्पादनों से करने में मदद मिलती है तथा उपक्रम की अक्षमता, दुर्बलता या दोषों को दूर करने हेतु प्रभावी उपाय किये जा सकते हैं।

प्रश्न 30. लेखांकन अनुपात की चार सीमाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर– 1. असत्य परिणामों का खतरा– यदि वित्तीय विवरण स्वयं ही सही नहीं हों तो उनके आधार पर निकाले गए अनुपात भी सही नहीं होंगे।

2. कीमत स्तर में परिवर्तन– अनुपातों की गणना करते समय कीमत स्तर में होने वाले परिवर्तनों पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है, इसलिए अनुपात की सार्थकता संदिग्ध रहती है।

3. लेखांकन विधि में भिन्नताएं– लेखांकन नीतियों में तथा स्टॉक के मूल्यांकन ह्रास की पद्धति आदि में पाई जाने वाली भिन्नताओं के कारण भिन्न-भिन्न व्यावसायिक उपक्रमों के वित्तीय विवरणों में भिन्नता पाई जाती है।

4. अनुपात संकेत करने में सहायक न कि समस्या का हल करने में– अनुपातों की सहायता से समस्या का संकेत मिलता है, समस्या के निवारण के लिए अनुपात सहायक नहीं होते हैं।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 31. चल अनुपात तथा तरलता अनुपात में अंतर लिखिए।

उत्तर– चल अनुपात और तरलता अनुपात में अंतर–

क्र.	अन्तर का आधार	चल अनुपात	तरल अनुपात
1.	सम्बन्ध	यह अनुपात चल सम्पत्तियों तथा चल दायित्वों के बीच सम्बन्ध की व्याख्या करता है।	यह अनुपात तरल सम्पत्तियों तथा चल दायित्वों के बीच संबंध की व्याख्या करते हैं।
2.	दायित्वों का भुगतान	यह अनुपात बतलाता है कि कम्पनी अपने चल दायित्वों का भुगतान अपनी चल सम्पत्तियों में से करने की क्षमता रखती है।	यह अनुपात दर्शाता है कि कम्पनी अपने चल दायित्वों का भुगतान अपनी तरल सम्पत्तियों से तत्काल कर सकती है।
3.	आदर्श स्थिति	यदि यह अनुपात 2:1 है तो यह आदर्श स्थिति है।	इसमें 1:1 आदर्श स्थिति है।
4.	शोधन क्षमता की माप	कम्पनी की अल्पकालीन शोधन क्षमता मापने के लिए यह अनुपात उपयुक्त नहीं माना जाता है।	यह उपयुक्त है।

प्रश्न 32. एक कम्पनी का चालू अनुपात 3 : 5 है, कार्यशील पूंजी 90,000 रु. है। चालू सम्पत्ति और चालू दायित्व की गणना कीजिए।

उत्तर-Current Ratio = 3 : 5

कार्यशील पूंजी = 2 = 90,000

2 = 90,000 = 3 = 1,35,000

5 = 2,25,000

चालू सम्पत्ति = 1,35,000 चालू दायित्व 2,25,000

प्रश्न 33. एक कम्पनी का तरल अनुपात 1 : 1 है। चालू सम्पत्तियाँ 1,00,000 तथा चालू दायित्व 50,000 रु. है। स्टॉक का मूल्य ज्ञात कीजिए।

उत्तर-

Liquid Ratio = 1 : 1

Liquid Assets = Current Liabilities

50,000 = 50,000

Stock = Current Assets – Liquid Assets

= 1,00,000 – 50,000

Stock = 50,000

प्रश्न 34. स्थायी सम्पत्ति आवर्त अनुपात क्या है?

उत्तर- स्थायी सम्पत्ति आवर्त अनुपात (Fixed Assets Turnover Ratio) यह अनुपात शुद्ध विक्रय अथवा बिके माल की लागत तथा स्थायी सम्पत्तियों के मध्य सम्बन्ध को बताता है। स्थायी सम्पत्तियों के कुशल उपयोग से कम लागत पर श्रेष्ठ उत्पादन संभव होता है।

- महत्व (Significance)- इस अनुपात से इस बात का पता चल जाता है कि स्थायी सम्पत्तियों में सोच-समझ कर विनियोग किया गया है अथवा नहीं। अनुपात जितना अधिक ऊँचा होता है, उतना ही अच्छा माना जाता है, क्योंकि इससे यह आशय निकलता है कि स्थायी सम्पत्तियों की सहायता से तीव्र गति से विक्रय हो रहा है। निर्माणी संस्थाओं में इस अनुपात का विशेष महत्व होता है। इसके लिये निम्न सूत्र का प्रयोग किया जाता है-

$$\text{स्थायी सम्पत्ति आवर्त अनुपात (Fixed Assets Turnover Ratio)} = \frac{\text{बिके माल की लागत (Cost of Goods Sold)}}{\text{शुद्ध स्थायी सम्पत्ति (Net Fixed Assets)}}$$

@MP_BOARD_23 (Telegram)

[▸ नोट- *शुद्ध स्थायी सम्पत्ति = स्थायी सम्पत्ति – मूल्य ह्रास*]

इकाई-6 रोकड़ प्रवाह विवरण

अंकवार प्रश्नों की संख्या				कुल अंक
वस्तुनिष्ठ प्रश्नों (1 अंक)	अति लघुउत्तरीय प्रश्न (2 अंक)	लघुउत्तरीय प्रश्न (3 अंक)	विश्लेषणात्मक प्रश्न (4 अंक)	
2	1	–	1	8

▫ वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर :

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए-

(1) वित्तीय क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह का उदाहरण है-

(a) लाभांश का भुगतान

(b) विनियोग पर प्राप्त लाभांश

(c) ग्राहकों से रोकड़ प्राप्त

(d) स्थाई सम्पत्तियों का क्रय

(2) निवेश क्रियाओं से रोकड़ का एक उदाहरण है-

(a) ऋणपत्रों का निर्गमन

(b) दीर्घकालीन ऋण पत्रों का भुगतान

(c) कच्चे माल का नगद क्रय

(d) गैर वित्तीय संस्थाओं द्वारा विनियोगों का विक्रय

(3) संचालन क्रियाओं में रोकड़ प्रवाह का एक उदाहरण है–
(a) ऋणपत्रों का निर्गमन
(b) स्थाई सम्पत्तियों का विक्रय
(c) स्थाई जमा पर बैंक द्वारा दिया गया ब्याज
(d) अंश का निर्गमन

(4) रोकड़ प्रवाह विवरण तैयार करना एवं प्रस्तुत करना अनिवार्य है–
(a) केवल निजी कम्पनी के लिए
(b) केवल सार्वजनिक कम्पनियों के लिए
(c) केवल विदेशी कम्पनियों के लिए
(d) समस्त सूचीबद्ध कम्पनियों के लिए

(5) रोकड़ प्रवाह विवरण के संबंध में कौन–सा लेखांकन प्रमाप है–
(a) AS – 3 (b) AS – 6
(c) AS – 1 (d) AS – 7

(6) निम्नलिखित में कौन रोकड़ बहिर्वाह नहीं है–
(a) लेनदारों में वृद्धि (b) स्कंध में वृद्धि
(c) पूर्वदत्त व्ययों में वृद्धि (d) इनमें से कोई नहीं

(7) रोकड़ प्रवाह विवरण आधारित होता है–
(a) लेखांकन के उपार्जन आधार पर
(b) लेखांकन के रोकड़ आधार पर
(c) (a) और (b) दोनों
(d) इनमें से कोई नहीं

(8) निम्नलिखित में से कौन रोकड़ अंतर्वाह नहीं है–
(a) देनदारों में कमी
(b) ऋण पत्रों का निर्गमन
(c) लेनदारों में कमी
(d) इनमें से कोई नहीं

(9) निम्न में से कौन एक गैर रोकड़ मद नहीं है–
(a) नगद विक्रय
(b) ख्याति का अपलेखन
(c) ह्रास
(d) अप्राप्त ऋण के लिए प्रावधान

(10) रोकड़ प्रवाह विवरण तैयार किया जाता है–
(a) अतिरिक्त सूचनाओं से
(b) लाभ अथवा हानि विवरण से
(c) आर्थिक सूचनाओं से
(d) उक्त सभी से

उत्तर– (1) (a), (2) (d), (3) (c), (4) (d), (5) (a), (6) (c), (7) (c), (8) (c), (9) (a), (10) (d)।

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(1) विनियोग संबंधी क्रिया का संबंध ..... सम्पत्ति से होता है।
(2) संचालन क्रियाएँ व्यवसायिक उपक्रम की क्रियाएँ ..... मानी जाती है।
(3) लेखांकन प्रमाप 3 के अनुसार रोकड़ क्रियाओं को ..... भाग में बाँटा गया है।
(4) गैर रोकड़ व्यवहार से लाभ घटता है किंतु ..... कम नहीं होती है।
(5) रोकड़ संतुलन विवरण रोकड़ तथा रोकड़ तुल्य में ..... परिवर्तन को दर्शाता है।
(6) वर्ष के अंत में व्ययों का अग्रिम भुगतान किया गया है जिसे वर्ष में अर्जित लाभ के साथ ..... जाता है।
(7) 1 वर्ष के दौरान उपार्जित आय को शुद्ध लाभ के साथ ..... जाता है।
(8) संचालन क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह की गणना हेतु ख्याति का अपलेखन वर्ष के दौरान लाभ में ..... जाता है।
(9) संचालन क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह की गणना संदिग्ध ऋण के प्रावधान के लिए वर्ष के दौरान लाभ में ..... जाता है।

उत्तर– (1) स्थायी, (2) मुख्य, (3) 3, (4) रोकड़, (5) अस्थायी, (6) जोड़ा, (7) घटाया, (8) जोड़ा, (9) जोड़ा।

प्रश्न 3. सही जोड़ी बनाइये–

(I)	(A)	(B)
(1)	स्थाई सम्पत्तियों का विक्रय	(a) रोकड़ तुल्य
(2)	संचालन क्रियाओं में शामिल है	(b) स्वामी की पूँजी तथा व्यवसाय के ऋण के आकार एवं संरचना में परिवर्तन
(3)	विनियोग संबंधी क्रियाओं में शामिल हैं	(c) गैर संचालन आय
(4)	वित्तीय क्रियाओं का परिणाम होता है	(d) दीर्घकालीन सम्पत्तियों या स्थाई सम्पत्तियों का क्रय - विक्रय
(5)	रोकड़ बैंक में	(e) आय अर्जित करने वाली मुख्य क्रियाएँ

उत्तर– (1) (c), (2) (e), (3) (d), (4) (b), (5) (a)।

(II)	(A)	(B)
(1)	स्थाई सम्पत्तियों में वृद्धि	(a) रोकड़ प्रवाह विवरण
(2)	वार्षिक ह्रास	(b) वित्तीय क्रिया
(3)	भारतीय लेखांकन मानक 7	(c) निवेश या विनियोग क्रिया
(4)	अंश पूँजी में कमी	(d) रोकड़ का प्रयोग
(5)	लेनदारों में कमी	(e) गैर नगद मद

@MP_BOARD_25 (Telegram)

(6) संचालन क्रिया (f) ख्याति

(7) स्थाई सम्पत्तियों की बिक्री से हानि (g) रोकड़ अन्तर्वाह

(8) अमूर्त सम्पत्ति (h) शीघ्र रोकड़ में परिवर्तन योग्य

उत्तर– (1) (c), (2) (e), (3) (a), (4) (g), (5) (h), (6) (b), (7) (c), (8) (f)।

प्रश्न 4. सत्य/असत्य लिखिए–

(1) आयकर का भुगतान एक संचालन क्रिया है।

(2) अपलिखित की गई ख्याति विनियोग क्रियाओं में दर्शाते हैं।

(3) मूल्य ह्रास में रोकड़ मद है।

(4) लाभांश का भुगतान एक वित्तीय क्रिया है।

(5) अंशों के निर्गमन से रोकड़ का बर्हिवाह होता है।

(6) चालू दायित्वों में वृद्धि रोकड़ का स्रोत है।

(7) रोकड़ प्रवाह विवरण लेखांकन के उपार्जित आधार पर आधारित होता है।

(8) देनदारों के मूल्य में वृद्धि के परिणाम स्वरूप रोकड़ में कमी होती है।

(9) ऋणपत्रों पर ब्याज भुगतान को 'संचालन क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह' के अंतर्गत दिखाया जाता है।

(10) स्कंध के मूल्य में वृद्धि से रोकड़ में कमी होती है।

उत्तर– (1) सत्य, (2) असत्य, (3) असत्य, (4) सत्य, (5) असत्य, (6) असत्य, (7) सत्य, (8) सत्य, (9) असत्य, (10) असत्य।

प्रश्न 5. एक शब्द/वाक्य में उत्तर लिखिए–

(1) क्या किसी अवधि के दौरान रोकड़ का शुद्ध प्रवाह ऋणात्मक हो सकता है?

(2) ऋणपत्रों के निर्गमन का संबंध किस क्रिया से होता है?

(3) ग्राहकों से प्राप्त रोकड़ कौन-सी क्रियाओं का रोकड़ प्रवाह है?

(4) भारतीय चार्टर्ड अकाउंटेंट संस्थान द्वारा रोकड़ बहाव विवरण के संबंध में कौन-सा लेखांकन मानक जारी किया गया है?

(5) रोकड़ प्रवाह विवरण में रोकड़ शब्द से क्या आशय है?

(6) रोकड़ प्रवाह विवरण रोकड़ प्रवाही का वर्गीकरण के अनुसार करता है?

(7) रोकड़ प्रवाह कब उत्पन्न होता है?

(8) अंश धारियों को लाभांश का भुगतान कौन-सी क्रिया होगी?

(9) रोकड़ प्रवाह विवरण तैयार करने हेतु आवश्यक सूचनाओं की प्राप्ति किस प्रकार की जाती है?

(10) आयकर की वापसी किस क्रिया में आती है?

उत्तर– (1) नहीं, (2) वित्तीय क्रिया, (3) संचालन क्रिया, (4) AS-3, (5) आय पर आधार क्रिया, (6) नकद, (7) रोकड़ के आगमन पर, (8) वित्तीय, (9) संचालन क्रिया, (10) संचालन क्रिया।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर :

प्रश्न 1. रोकड़ प्रवाह क्या है?

उत्तर– रोकड़ प्रवाह का आशय एक निश्चित अवधि में रोकड़ के आगमन और रोकड़ की निकासी को दर्शाने वाला विवरण है। इसका अर्थ रोकड़ की प्राप्ति तथा प्रयोग से है। इसमें दो विभिन्न तिथियों के बीच रोकड़ में परिवर्तन के कारणों की भी जानकारी दी जाती है, संक्षेप में रोकड़ प्रवाह विवरण निर्दिष्ट अवधि में रोकड़ की प्राप्तियों एवं रोकड़ के भुगतानों का खाका होता है जो संचालन, विनियोग एवं वित्तीय क्रियाओं में वर्गीकृत होता है।

प्रश्न 2. रोकड़ तुल्य से क्या आशय है?

उत्तर– 1. रोकड़– रोकड़ का आशय हस्तस्थ रोकड़ तथा बैंक में मांग निक्षेप से है।

2. रोकड़ तुल्य– रोकड़ तुल्यों से आशय ऐसे अल्पकालीन अत्यन्त तरल विनियोगों से है, जिन्हें तत्काल बिना किसी विशेष जोखिम के रोकड़ में परिवर्तित कराया जा सकता है।

प्रश्न 3. संचालन क्रियाएं क्या होती हैं?

उत्तर– ये वे क्रियाएं होती हैं जो आय उत्पन्न करती हैं। ऐसी सभी क्रियाएं भी संचालन क्रियाओं में शामिल की जाती हैं जो विनियोग क्रियाओं तथा वित्तीय क्रियाओं में सम्मिलित नहीं की जाती तथा आय उत्पन्न करती हैं। संचालन क्रियाओं से उत्पन्न रोकड़ बहाव की राशियां इस बात की संकेत होती हैं कि संस्था ने पर्याप्त रोकड़ बहाव उत्पन्न किये हैं जिससे वह अपनी संचालन क्षमता को बनाए रख सकती है, लाभांशों का भुगतान कर सकती है, ऋणों का शोधन कर सकती है तथा नए विनियोग कर सकती है। प्रमुख संचालन क्रियाएं हैं– माल बिक्री से प्राप्त रोकड़ प्राप्ति, सेवा प्रदान करने से रोकड़ प्राप्ति, रायल्टी, फीस, कमीशन से प्राप्त रोकड़।

संचालन क्रियाओं से बाह्य रोकड़ प्रवाह– कर्मचारियों को वेतन, मजदूरी आदि का नकद भुगतान, आपूर्तिकर्ता का रोकड़ी भुगतान, भविष्य के अनुबन्धों, वायदे के सौदों आदि का नकद भुगतान।

प्रश्न 4. विनियोग क्रियाओं का अर्थ लिखिए।

उत्तर– इससे आशय दीर्घकालीन सम्पत्तियों या स्थायी सम्पत्तियों (जैसे, भूमि, भवन, फर्नीचर) के क्रय विक्रय से है। इनमें वे विनियोग सम्मिलित नहीं है जो रोकड़ तुल्यों की श्रेणी में आते हैं।

विनियोग क्रियाओं से अन्तर्वाह–

@MP_BOARD_25 (Telegram)

(1) अंशों तथा अन्य प्रतिभूतियों की बिक्री से प्राप्तियाँ।
(2) विशेष संस्थाओं से प्राप्त अल्प सहायताओं को दिए गए ऋणों एवं अग्रिमों से प्राप्ति।
(3) अंशों तथा ऋणपत्रों के निर्गमन से प्राप्त रकम।
(4) निवेशों से लाभांश के रूप में प्राप्तियाँ।

प्रश्न 5. वित्तीय क्रियाओं से क्या आशय है?

उत्तर– वित्तीय क्रियाओं से हमारा आशय उन क्रियाओं से है, जो कंपनी के स्वामियों तथा पूँजी से संबंध रखती है। वित्तीय क्रियाओं के फलस्वरूप कंपनी की पूँजी एवं ऋणों की राशि में परिवर्तन होता है।
वित्तीय क्रियाओं से रोकड़ प्राप्तियों के कुछ उदाहरण निम्न प्रकार हैं– (1) अंशों की बिक्री से प्राप्तियाँ। (2) अन्य विनियोगों (Investment) की बिक्री से प्राप्तियाँ (3) ऋण-पत्रों, बन्ध पत्रों आदि की बिक्री से प्राप्तियाँ। (4) अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन ऋणों के रूप में रोकड़ प्राप्तियाँ।
वित्तीय क्रियाओं में रोकड़ भुगतान के कुछ उदाहरण निम्न प्रकार हैं– (1) उधार लिये गये ऋणों के नकद भुगतान।
(2) उधार लिये गये ऋण एवं अग्रिम पर ब्याज का भुगतान
(3) पूर्वाधिकार अंशों एवं समता अंशों पर लाभांश का भुगतान।

प्रश्न 6. कोष प्रवाह विवरण का आशय क्या है?

उत्तर– संकुचित अर्थ में 'कोष' का आशय रोकड़ से है तथा विस्तृत अर्थ में किसी संस्था के सम्पूर्ण वित्तीय संसाधन इसमें शामिल किये जाते हैं। 'कोष प्रवाह' का आशय कोषों के आवागमन से है। इस प्रकार कोष प्रवाह विवरण एक ऐसा विवरण है, जो दो चिट्ठों की तिथियों के मध्य वित्तीय स्थिति में होने वाले परिवर्तनों को दर्शाता है। यह विवरण दर्शाता है कि किन स्रोतों से व्यवसाय ने कोष या फण्ड को प्राप्त किया व किन स्रोतों पर कोष या फण्ड का प्रयोग किया। इस विवरण को कहाँ से प्राप्त और कहाँ गया विवरण के नाम से भी जाना जाता है।

प्रश्न 7. उस लेखांकन मानक को बताये जो रोकड़ प्रवाह विवरण के निर्माण में शामिल करते है।

उत्तर– रोकड़ प्रवाह विवरण लेखांकन प्रमाप 3 (AS – 3) के प्रारूप में बनाया जाता है।

प्रश्न 8. रोकड़ अंतर्वाह से क्या आशय है?

उत्तर– व्यावसायिक व्यवहारों को मूर्त रूप देने में रोकड़ की प्राप्तियों एवं रोकड़ में भुगतानों की क्रियाएँ अहं होती है। रोकड़ की प्राप्तियों को रोकड़ का अन्तर्वहाव (Inflow of cash) तथा रोकड़ के भुगतानों को रोकड़ का बहिर्वहाव (Outflow of cash) कहा जाता है।

प्रश्न 9. रोकड़ बहिर्वाह से क्या आशय है?

उत्तर– व्यावसायिक व्यवहारों को मूर्त रूप देने में रोकड़ की प्राप्तियों एवं रोकड़ में भुगतानों की क्रियाएँ अहं होती है। रोकड़ की प्राप्तियों को रोकड़ का अन्तर्वहाव (Inflow of cash) तथा रोकड़ के भुगतानों को रोकड़ का बहिर्वहाव (Outflow of cash) कहा जाता है।

प्रश्न 10. रोकड़ प्रवाह विवरण की कितनी विधियाँ है?

उत्तर– रोकड़ प्रवाह विवरण की दो विधियाँ है–
(1) प्रत्यक्ष विधी (2) अप्रत्यक्ष विधी

प्रश्न 11. रोकड़ तुल्य मान क्या है?

उत्तर– रोकड़ तथा रोकड़ तुल्यों के घटक (Constituents of cash and Cash equivalents) कंपनी को रोकड़ तथा रोकड़ तुल्यों का प्रदर्शन अपने विवरणों में करना चाहिए और अपने रोकड़ प्रवाह विवरण की रकमों का समाधान (Reconciliation) चिट्ठे की संबंधित मदों से करना चाहिए। रोकड़ तथा रोकड़ तुल्यों की संरचना के लिए जो नीति अपनाई जाती है, उसे भी प्रकट किया जाना चाहिए। यदि इस नीति से कोई परिवर्तन किया जाता है तो उसके प्रभावों को पृथक से प्रदर्शित करना चाहिए।

प्रश्न 12. संचालन क्रियाओं से रोकड़ अंतर्वाह के दो उदाहरण लिखिए।

उत्तर– संचालन क्रियाओं से रोकड़ अंतर्वाह के उदाहरण–
(1) माल की बिक्री से रोकड़ प्राप्ति।
(2) सेवा प्रदान करने से रोकड़ प्राप्ति।
(3) रॉयल्टी, फीस, कमीशन से रोकड़ प्राप्तियाँ।
(4) अन्य रेवेन्यू से रोकड़ प्राप्ति।

प्रश्न 13. रोकड़ प्रवाह विवरण और आय विवरण में दो अंतर लिखिए।

उत्तर– रोकड़ प्रवाह विवरण लाभ तथा हानि के विवरण (Statement of Profit and Loss) का स्थानापन्न नहीं है, क्योंकि इसमें लाभ या हानि की गणना नहीं की जाती है। इसी प्रकार, रोकड़ प्रवाह विवरण चिट्ठे का (Total Financial Position) का प्रदर्शन नहीं किया जाता है।
रोकड़ प्रवाह विवरण ऐतिहासिक प्रकृति का है क्योंकि यह ऐतिहासिक वित्तीय विवरणों के आधार पर तैयार किया जाता है।

प्रश्न 14. रोकड़ प्रवाह कब उत्पन्न होता है?

उत्तर– रोकड़ की प्राप्ति एवं भुगतान से रोकड़ प्रवाह उत्पन्न होता है।

प्रश्न 15. बताइए बैंक में जमा की गई रोकड़ का अंतर्वाह होगा, बहिर्वाह होगा या कोई प्रभाव नहीं होगा।

उत्तर– बैंक में जमा की गई रोकड़ ना अंतर्वाह है ना बर्हिवाह है।

▣ विश्लेषणात्मक प्रश्न :

प्रश्न 1. संचालन से रोकड़ और शुद्ध लाभ में क्या अंतर है?

उत्तर– संचालन क्रियाओं से रोकड़ बहाव मुख्य रूप से संस्था की प्रमुख रेवेन्यू उत्पन्न करने वाली क्रियाओं से प्राप्त होती है, अतः

@MP_BOARD_25 (Telegram)

[illegible] निर्णय में सहायक होता है।

प्रश्न 2. रोकड़ प्रवाह विवरण की सीमाएँ लिखिए। (कोई चार)

उत्तर– (1) [illegible] नहीं।

(2) रोकड़ प्रवाह विवरण से किसी व्यावसायिक संस्था की दीर्घकालीन वित्तीय स्थिति का विश्लेषण संभव नहीं है।

(3) रोकड़ प्रवाह विवरण से वित्तीय स्थिति का सही-सही एवं पूर्ण विश्लेषण नहीं किया जा सकता है।

(4) रोकड़ प्रवाह विवरण में रोकड़ की आवक तथा जावक की स्थिति प्रकट होती है, जो तरलता की स्थिति की सही-सही रिपोर्ट करने में सक्षम नहीं है। [illegible] मदों का प्रभाव भी महत्वपूर्ण है, जिन्हें रोकड़ प्रवाह विवरण में छोड़ दिया जाता है।

प्रश्न 3. रोकड़ प्रवाह विवरण तैयार करने के प्रमुख चरण लिखिए।

उत्तर– रोकड़ प्रवाह विवरण तैयार करने के प्रमुख चरण संक्षेप में निम्नलिखित हैं–

(1) संचालन क्रियाओं से शुद्ध रोकड़ प्रवाह की गणना,

(2) विनियोग क्रियाओं से शुद्ध रोकड़ प्रवाह की गणना,

(3) वित्तीय क्रियाओं से शुद्ध रोकड़ प्रवाह की गणना,

(4) रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यों की गणना।

रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यों की गणना में यह तथ्य विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि 'रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यों' के अंतिम शेष एवं प्रारंभिक शेष की अन्तर-राशि संचालन, विनियोग एवं वित्तीय क्रियाओं से ज्ञात रोकड़ प्रवाहों के कुल योग (Total) के बराबर होती है। इसे सूत्र में निम्नानुसार व्यक्त किया जा सकता है–

संचालन+विनियोग+वित्तीय क्रियाओं के रोकड़ प्रवाह का योग = रोकड़ एवं रोकड़ तुल्यों का : (अंतिम शेष-प्रारम्भिक शेष)

प्रश्न 4. रोकड़ प्रवाह विवरण के उद्देश्य लिखिए।

उत्तर– रोकड़ प्रवाह विवरण के उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

(1) उपक्रम की संचालन,विनियोग तथा वित्तीय क्रियाओं के शुद्ध रोकड़ के प्रवाह का निर्धारण करना अर्थात् रोकड़ तथा रोकड़ तुल्य की प्राप्ति एवं प्रयोग का निर्धारण करना।

(2) उपक्रम की संचालन, विनियोग तथा वित्तीय क्रियाओं में **रोकड़ के प्रयोग** का निर्धारण करना अर्थात् **रोकड़ तथा रोकड़ के भुगतान का निर्धारण करना।**

(3) रोकड़ तथा रोकड़ तुल्य (Cash and Cash Equivalents) में होने वाले **शुद्ध परिवर्तन** (Net Change) **का निर्धारण करना** अर्थात् संचालन विनियोग एवं वित्तीय क्रियाओं से शुद्ध रोकड़ प्रवाह दो तिथियों के बीच कैसा रहा है, इस बात का निर्धारण करना।

प्रश्न 5. रोकड़ प्रवाह विवरण की उपयोगिता (महत्व) समझाइए।

उत्तर– [illegible] स्पष्ट हो जाती है–

1. रोकड़ की स्थिति का मूल्यांकन– [illegible] सहायक होता है।

2. भावी आवश्यक रोकड़ की जानकारी– [illegible] सकती है।

3. रोकड़ के फेर का ज्ञान– [illegible]

4. तुलनात्मक विवेचना – [illegible] रोकड़ की स्थिति की तुलनात्मक विवेचना की जा सकती है।

प्रश्न 6. प्रत्यक्ष विधी के अंतर्गत संचालन क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह की गणना किस प्रकार की जाती है?

उत्तर– प्रत्यक्ष विधि (Direct Method) – इस विधि का प्रयोग उन्हीं फर्मों में किया जा सकता है, जिनमें नकद विक्रय, देनदारों से रोकड़ प्राप्ति, नकद क्रय, लेनदारों या पूर्तिकर्ताओं को भुगतान के साथ अन्य संचालन सम्बन्धी आय तथा व्ययों की जानकारी दी रहती है। नकद प्राप्तियों एवं नकद भुगतानों का अन्तर ही संचालन क्रियाओं से प्राप्त शुद्ध रोकड़ प्रवाह होता है।

इसमें केवल नकद व्यवहारों को ही सम्मिलित किया जाता है। प्रत्यक्ष विधि के अन्तर्गत समस्त गैर रोकड़ मदों, जैसे- ह्रास, अदृश्य सम्पत्तियों (ख्याति, पेटेण्ट, व्यापार चिन्ह आदि) का अपलेखन छोड़ दिया जाता है। इसके अतिरिक्त प्रारम्भिक व्ययों, ऋणपत्रों पर कटौती आदि का अपलेखन भी छोड़ दिया जाता है, क्योंकि ये गैर रोकड़ व्यवहार होते हैं।

इस विधि में स्थायी सम्पत्तियों और विनियोगों के विक्रय पर हुई हानि या लाभ के लिये कोई समायोजन नहीं किया जाता है। इसी प्रकार ब्याज तथा लाभांश से प्राप्त आय पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है।

प्रश्न 7. रोकड़ प्रवाह विवरण के उपयोग लिखिए–

उत्तर– रोकड़ प्रवाह विवरण के उपयोगों को निम्न प्रकार बताया जा सकता है–

@MP_BOARD_25 (Telegram)

1. अल्पकालीन वित्तीय नियोजन का उपकरण (Tool of Short Term Financial Planning)– रोकड़ प्रवाह विवरण व्यवसाय की अल्पकालीन वित्तीय आवश्यकताओं के लिये योजना बनाने मे सहायक होता है। इसके द्वारा रोकड़ के स्रोतों तथा उनके उपयोगों की सूचनाएं उपलब्ध होती हैं। इससे प्रबंधकों को भविष्य के लिये रोकड़ की उपलब्धता का अनुमान लगाने में सहायता मिलती है।

2. उचित शोधन क्षमता के निर्धारण में सहायक (Helpful to Ascertain the Solvency in a Better Way)– रोकड़ प्रवाह विवरण से इस बात की सूचना प्राप्त होती है कि व्यवसाय की वास्तविक शोधन क्षमता की स्थिति क्या है ?

3. रोकड़ बजट निर्माण में सहायक (Helpful in preparing the Cash Budget)– रोकड़ प्रवाह विवरण भविष्य की अवधि के लिये भी तैयार किया जा सकता है। इससे भविष्य हेतु रोकड़ का बजट निर्माण करने में सहायता मिलती है। प्रबंधकों को इस बात का अनुमान लगाने मे सहायता मिलती है कि किन अवधियों में रोकड़ की प्राप्तियां अधिक होगी एवं किन महीनों मे कम।

प्रश्न 8. संचालन क्रियाओं से रोकड बहिर्वाह के उदाहरण दीजिए–

उत्तर– (1) संचालन क्रिया में शामिल मदे–

संचालन क्रियाओं से रोकड़ अन्तर्बहाव के उदाहरण –

(1) माल की बिक्री से रोकड़ प्राप्ति। (2) सेवा प्रदान करने से रोकड़ प्राप्ति। (3) रॉयल्टी, फीस, कमीशन से रोकड़ प्राप्तियाँ। (4) अन्य रेवेन्यू से रोकड प्राप्ति।

प्रश्न 9. रोकड प्रवाह विवरण के कौन से स्त्रोत है?

उत्तर – रोकड़ प्रवाह विवरण के निम्न स्रोत है– (1) रोकड़ बही (2) बैंक बही/बुक (3) प्राप्ति - भुगतान खाता (4) क्रय बही/विक्रय बही (5) प्राप्य विपत्र बही (6 देय विपत्र बही।

प्रश्न 10. रोकड़ प्रवाह विवरण किस प्रकार तैयार किया जाता है?

उत्तर– रोकड़ बहाव विवरण तैयार करने में निम्नांकित प्रक्रिया का अनुसरण करना पड़ता है–

(1) संचालन क्रियाओं से रोकड़ बहाव की गणना करना।
(2) विनियोग क्रियाओं से रोकड़ बहाव की गणना करना।
(3) वित्तीय क्रियाओं से रोकड़ बहाव की गणना करना।
(4) उक्त तीनों क्रियाओं समेकित परिणाम (वृद्धि/कमी अपरिवर्तित स्थिति रोकड़ एवं रोकड़ तुल्य की) ज्ञात करना।
(5) रोकड़ एवं रोकड़ तुल्य के प्रारम्भिक शेष को जोड़ना।
(6) जोड़ने के बाद जो राशि आएगी वह रोकड़ एवं रोकड़ तुल्य का अन्तिम शेष होगी।

प्रश्न 11. रोकड़ प्रवाह विवरण में कौन–सी सुचनाये प्रदर्शित की जाती है?

उत्तर– रोकड़ प्रवाह विवरण में निम्न सुचनाये प्रदर्शित हैं–

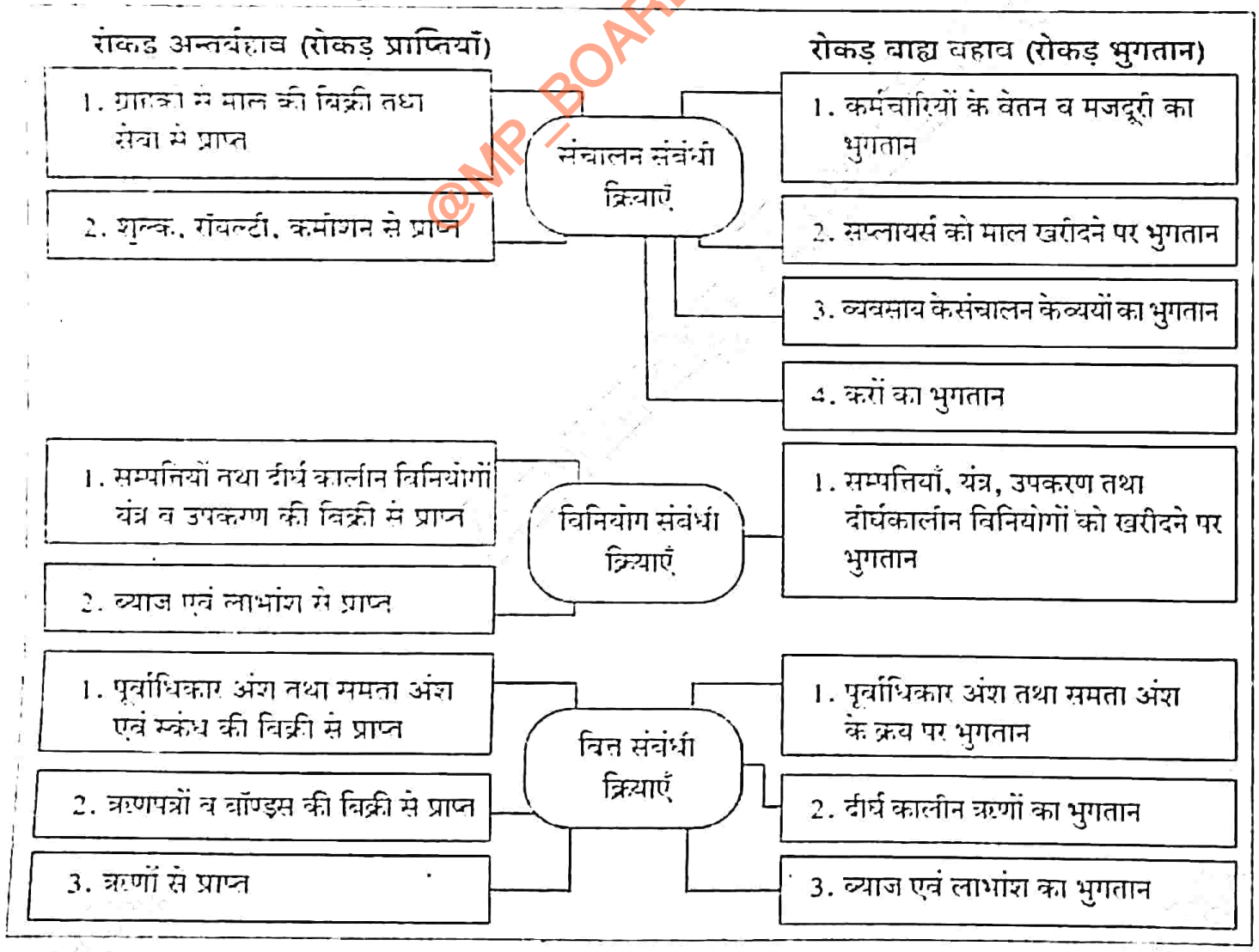

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 12. संचालन क्रियाओं तथा वित्तीय क्रियाओं में अंतर लिखिए।

उत्तर– लेखांकन मानक-3 के अनुसार संचालन क्रियाएँ व्यावसायिक उपक्रम की प्रमुख क्रियाएँ होती हैं, जो आय उत्पन्न करती हैं। ऐसी सारी क्रियाएँ भी संचालन क्रियाओं में शामिल की जाती हैं जो विनियोग क्रियाओं तथा वित्तीय क्रियाओं से संबंध नहीं रखती है और जो आय उत्पन्न करती हैं। संचालन क्रियाओं से उत्पन्न होने वाले रोकड़ बहाव की गणियां इस बात की संकेत होती हैं कि संस्था ने पर्याप्त रोकड़ बहाव उत्पन्न किए हैं जिनसे वह अपनी संचालन क्षमता को बनाये रख सकती है, लाभांशों का भुगतान कर सकती है।

प्रश्न 13. रोकड़ बजट एवं रोकड़ प्रवाह में अंतर दर्शाइए।

उत्तर– रोकड़ बहाव तथा रोकड़ बजट में अन्तर–

क्र.	अन्तर का आधार	रोकड़ बहाव	रोकड़ बजट
1.	निर्माण	यह दो तिथियों के चिट्ठों के आधार पर तैयार किया जाता है।	यह ऐतिहासिक समंकों तथा पूर्वानुमान के आधार पर तैयार किया जाता है।
2.	उद्देश्य	इसका मुख्य उद्देश्य पिछले वर्षों में किये गये व्यवहारों के आधार पर उपक्रम की वित्तीय क्षमता का आकलन करना है।	इसका मुख्य उद्देश्य भावी दीर्घकालीन एवं अल्पकालीन वित्तीय आवश्यकता एवं स्रोतों का आकलन करना है।
3.	निर्भरता	यह गत वर्ष के लेखांकन समंकों पर निर्भर रहता है।	यह भावी अनुमानित समंकों पर निर्भर रहता है।
4.	प्रदर्शन	इसमें रोकड़ की वर्तमान स्थिति प्रदर्शित की जाती है।	इसमें भावी रोकड़ सम्बन्धी आवश्यकता प्रदर्शित की जाती है।

प्रश्न 14. रोकड़ प्रवाह विवरण से क्या आशय है?

उत्तर– रोकड़ प्रवाह विवरण से आशय किन्हीं अवधियों के मध्य व्यावसायिक संस्था की रोकड़ स्थिति में हुए परिवर्तन के विवरण से है, जो परिवर्तनों के कारणों, परिणाम एवं दिशा को प्रदर्शित करता है। यह विवरण दैनिक, साप्ताहिक, मासिक, त्रैमासिक या वार्षिक या अन्य किसी निश्चित समय के अंतराल से तैयार किया जा सकता है। इस विवरण में रोकड़ के स्रोत, रोकड़ के उपयोग तथा शुद्ध रोकड़ स्थिति जो कुल स्रोतों एवं उपयोगों का अंतर होता है, का समावेश होता है।

रोकड़ प्रवाह विवरण के उद्देश्य

(1) उपक्रम की संचालन, विनियोग तथा वित्तीय क्रियाओं के शुद्ध रोकड़ के प्रवाह का निर्धारण करना अर्थात् रोकड़ तथा रोकड़ तुल्य की प्राप्ति एवं प्रयोग का निर्धारण करना।

(2) उपक्रम की संचालन, विनियोग तथा वित्तीय क्रियाओं में रोकड़ के प्रयोग का निर्धारण करना अर्थात् रोकड़ तथा रोकड़ के भुगतान का निर्धारण करना।

(3) रोकड़ तथा रोकड़ तुल्य (Cash and Cash Equivalents) में होने वाले शुद्ध परिवर्तन (Net Change) का निर्धारण करना अर्थात संचालन विनियोग एवं वित्तीय क्रियाओं से शुद्ध रोकड़ प्रवाह दो तिथियों के बीच कैसा रहा है, इस बात का निर्धारण करना।

प्रश्न 15. रोकड़ प्रवाह विवरण बनाने की प्रक्रिया लिखिए।

उत्तर– रोकड़ प्रवाह विवरण के 'A' भाग में 'संचालन सम्बन्धी क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह, 'B' भाग में विनियोग सम्बन्धी क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह तथा 'C' भाग में वित्तीय क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह दर्शाया जाता है। संचालन सम्बन्धी क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष विधि का प्रयोग किया जा सकता है। जबकि विनियोग सम्बन्धी क्रियाओं से तथा वित्त सम्बन्धी क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह विवरण में प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष दोनों विधियाँ एक ही हैं।

- **1. संचालन क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह ज्ञात करना–** इसमें निम्न दो बातें सम्मिलित की जाती हैं-

(1) शुद्ध संचालन लाभ (Net Operating Profit) ज्ञात करना।

(2) चालू सम्पत्ति अथवा चालू दायित्व की वृद्धि या कमी के प्रभाव को शुद्ध संचालन आय में दर्शाना अर्थात् कार्यशील पूँजी (Working Capital) में हुए परिवर्तन को दर्शाना।

- **2. गैर चालू सम्पत्ति अथवा दायित्व से सम्बन्धित मदों से रोकड़ प्रवाह ज्ञात करना। इसके अन्तर्गत निम्न दो प्रकार से रोकड़ प्रवाह ज्ञात किया जाता है–**

(1) विनियोग सम्बन्धी क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह ज्ञात करना।

(2) वित्त सम्बन्धी क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह ज्ञात करना।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 16. संचालन क्रियाकलापों में रोकड़ की गणना किस प्रकार की जाती है?

उत्तर– लेखांकन मानक-3 के अनुसार संचालन क्रियाएँ व्यावसायिक उपक्रम की प्रमुख क्रियाएँ होती हैं, जो आय उत्पन्न करती हैं। ऐसी सभी क्रियाएँ भी संचालन क्रियाओं में शामिल की जाती हैं जो विनियोग क्रियाओं तथा वित्तीय क्रियाओं से संबंध नहीं रखती हैं और जो आय उत्पन्न करती हैं। संचालन क्रियाओं से उत्पन्न होने वाले रोकड़ बहाव की राशियाँ इस बात की संकेत होती हैं कि संस्था ने पर्याप्त रोकड़ बहाव उत्पन्न किए हैं जिनसे वह अपनी संचालन क्षमता को बनाये रख सकती है, लाभांशों का भुगतान कर सकती है, ऋणों का शोधन कर सकती है और बिना भारी वित्तीय स्रोतों का सहारा लिए ही नए विनियोग कर सकती है। ऐतिहासिक संचालन रोकड़ बहाव के बारे में स्पष्ट सूचनाएँ तथा अन्य सूचनाएँ बहुत महत्वपूर्ण होती हैं तथा इनसे भविष्य की संचालन रोकड़ बहावों का अनुमान लगाया जा सकता है।

संचालन क्रियाओं से रोकड़ बहाव मुख्य रूप से संस्था की प्रमुख रेवेन्यू उत्पन्न करने वाली क्रियाओं से प्राप्त होती है, अतः सामान्यतया ये उन व्यवहारों तथा अन्य घटनाओं के परिणामस्वरूप प्राप्त होते हैं जो कि शुद्ध लाभ या शुद्ध हानि के निर्धारण में सहायक होते हैं।

प्रश्न 17. रोकड़ प्रवाह विवरण एवं कोष प्रवाह विवरण में अंतर लिखिए।

उत्तर– रोकड़ प्रवाह विवरण एवं कोष प्रवाह विवरण में निम्नलिखित अन्तर हैं–

क्र.	अंतर का आधार	रोकड़ प्रवाह विवरण	कोष प्रवाह विवरण
1.	आशय	रोकड़ प्रवाह विवरण किन्हीं दो अवधियों के मध्य व्यवसाय की रोकड़ स्थिति में हुए परिवर्तनों को दर्शाता है।	कोष प्रवाह विवरण कोषों के परिवर्तनों अर्थात् कार्यशील पूँजी में हुए परिवर्तनों को दर्शाता है।
2.	अवधि	रोकड़ प्रवाह विवरण कम अवधि के लिये तैयार किया जाता है।	कोष प्रवाह विवरण दीर्घ अवधि के लिये तैयार किया जाता है।
3.	लेखांकन की अवधारणा	रोकड़ प्रवाह विवरण लेखांकन की रोकड़ अवधारणा पर आधारित है।	कोष प्रवाह विवरण लेखांकन की उपार्जन अवधारणा पर आधारित है।
4.	गणना	रोकड़ प्रवाह विवरण में संचालन से प्राप्त रोकड़ की गणना की जाती है।	कोष प्रवाह विवरण में संचालन से कोषों की उपलब्धता की गणना की जाती है।
5.	सम्बन्ध	रोकड़ प्रवाह विवरण का सम्बन्ध केवल रोकड़ की स्थिति में परिवर्तन का सूचक है।	कोष प्रवाह विवरण कार्यशील पूँजी में हुए परिवर्तन का सूचक है।
6.	उपयोगिता	रोकड़ प्रवाह विवरण अल्पकालीन वित्तीय नियोजन के लिये अधिक उपयोगी है।	कोष प्रवाह विवरण दीर्घकालीन वित्तीय नियोजन के लिये उपयोगी है।

प्रश्न 18. रोकड़ प्रवाह विवरण के कौन से स्रोत हैं?

उत्तर– रोकड़ प्रवाह विवरण के निम्न स्रोत हैं– (1) रोकड़ बही (2) बैंक बही/बुक (3) प्राप्ति – भुगतान खाता (4) क्रय बही/विक्रय बही (5) प्राप्य विपत्र बही (6 देय विपत्र बही।

प्रश्न 19. रोकड़ प्रवाह विवरण एवं रोकड़ बजट में क्या अंतर है?

उत्तर– रोकड़ बहाव तथा रोकड़ बजट में अन्तर–

क्र.	अन्तर का आधार	रोकड़ बहाव	रोकड़ बजट
1.	निर्माण	यह दो तिथियों के चिट्ठों के आधार पर तैयार किया जाता है।	यह ऐतिहासिक समंकों तथा पूर्वानुमान के आधार पर तैयार किया जाता है।
2.	उद्देश्य	इसका मुख्य उद्देश्य पिछले वर्षों में किये गये व्यवहारों के आधार पर उपक्रम की वित्तीय क्षमता का आकलन करना है।	इसका मुख्य उद्देश्य भावी दीर्घकालीन एवं अल्पकालीन वित्तीय आवश्यकता एवं स्रोतों का आकलन करना है।
3.	निर्भरता	यह गत वर्ष के लेखांकन समंकों पर निर्भर रहता है।	यह भावी अनुमानित समंकों पर निर्भर रहता है।
4.	प्रदर्शन	इसमें रोकड़ की वर्तमान स्थिति प्रदर्शित की जाती है।	इसमें भावी रोकड़ सम्बन्धी आवश्यकता प्रदर्शित की जाती है।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 20. निम्न सूचनाओं से संचालन संबंधी क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह ज्ञात कीजिए।

विवरण	31 मार्च 2019	31 मार्च 2020
लाभ-हानि खाता	1,20,000	1,80,000
प्राप्य विपत्र	80,000	1,08,000
मूल्य ह्रास आयोजन	1,80,000	1,92,000
देय किराया	9,600	24,000
पूर्व दत्त बीमा	8,400	7,200
ख्याति	1,20,000	96,000
देनदार	80,000	1,08,000

हल (Solution) : ***Indirect Method***

Calculation of Cash Flow from Operating Activities

		₹	₹
	शुद्ध लाभ (Net Profit) : (1,80,000 – 1,20,000)		60,000
Add :	गैर रोकड़ मदें (Non Cash Items)		
	ह्रास के लिये आयोजन (Provision for Depreciation)	12,000	
	ख्याति अपलिखित की (Goodwill written off)	24,000	36,000
	कार्यशील पूँजी में परिवर्तन के पूर्व का लाभ (Profit before working capital changes)		96,000
Add :	देय किराये में वृद्धि (Increase in Rent Payable)	14,400	
	पूर्वदत्त बीमा में कमी (Decrease in Prepaid Insurance)	1,200	15,600
			1,11,600
Less :	प्राप्य विपत्र में वृद्धि (Increase in Bills Receivable)	24,000	
	देनदारों में वृद्धि (Increase in Debtors)	24,000	(48,000)
	संचालन क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह (Cash flow from Operating Activities)		**63,600**

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 21. निम्न सूचनाओं से संचालन क्रियाओं से प्रत्यक्ष विधि द्वारा रोकड़ प्रवाह की गणना कीजिए।

विवरण	रकम रु.
देनदारों से प्राप्त रोकड़	45,000
नगद विक्रय	50,000
लेनदार ओं को भुगतान	20,000
नगद क्रय	35,000
वेतन का भुगतान	12,000
कमीशन प्राप्त	20,000
प्रशासनिक व्यय का भुगतान	4,000
स्कंध की हानि पर बीमा दावा	50,000
आयकर का भुगतान	23,000
कर वापसी	3,000

आमुख

शालाओं के समय–समय पर विभागीय अधिकारियों द्वारा किये गये निरीक्षण के दौरान यह देखा गया है कि छात्र–छात्राओं दो विषय में ज्ञान का स्तर संतोषजनक नहीं है

आगामी परीक्षा की तैयारी एवं श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम हेतु यह प्रश्न बैंक तैयार किया गया है। जिसके उपयोग से शिक्षक अपने समस्त छात्रों को बेहतर अंक प्राप्त करने एवं अगली कक्षा में जाने हेतु समर्थ बना सकेंगे।

इस प्रश्न बैंक को ब्लूप्रिन्ट के अनुसार उन महत्वपूर्ण पाठ्य वस्तुओं का समावेश कर तैयार किया गया है जो कि प्रभावी शिक्षण एवं छात्र–छात्राओं के सभी विषय में औसत दक्षता विकसित करने एवं परीक्षा परिणाम में सुधार हेतु लाभकारी सिद्ध होगा।

यदि आपके स्कूल में एक से अधिक सेक्शन है तो विद्यार्थियों के ग्रेड के आधार पर सेक्शन में विद्यार्थियों का पुनर्वितरण कर दें। तथा एक ग्रेड के विद्यार्थियों को एक सेक शन में रखें ताकि उन विद्यार्थियों को उनके स्तर के अनुरूप पढ़ाया जाये।

प्रदेश के समस्त हाई/हायर सेकेण्डरी स्कूलों के प्राचार्य एवं संबंधित शिक्षकों से अपेक्षा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि इस प्रश्न बैंक से शाला के छात्र–छात्राओं को सभी विषय का नियमित अभ्यास करायेंगे ताकि प्रत्येक विद्यार्थी परीक्षा में सफल हो सके।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

शिक्षकों से अपेक्षित कार्यवाही– डी एवं ई ग्रेड के विद्यार्थियों को आगामी 2 माह तक इस प्र अनुसार अभ्यास कराएं। विद्यार्थियों को प्रत्येक प्रश्न को किस तरह लिखना है इसे समझाएं।

विद्यार्थियों द्वारा की जा रही गलतीयों को सुधारे

कक्षा 9 से 12 के लिए हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम में उपलब्ध

Gupta Book Industries (P) Ltd.
623, M.G.Road Khajuri Bazar Indore
Tel : +91 731 2454921 -22 Fax : 2454922
Web : www.gbipl.com
Email : gphbooks@outlook.com

NARESH GUPTA GROUP

PRICE: ₹ 60.00